Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

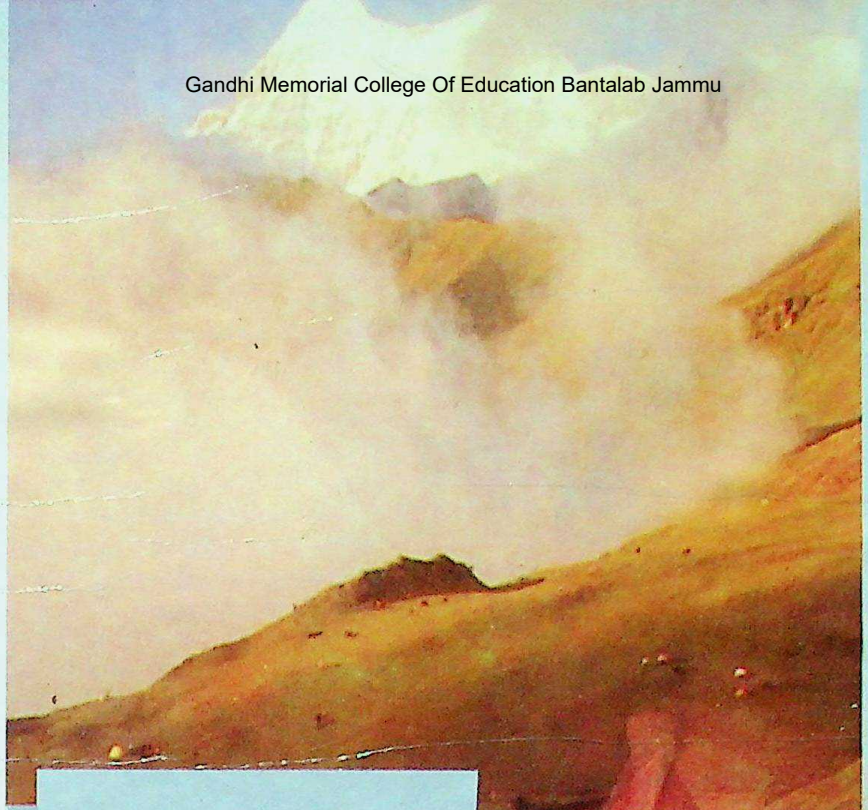

अर्श से फर्श तक

अवतार कृष्ण राजदान

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

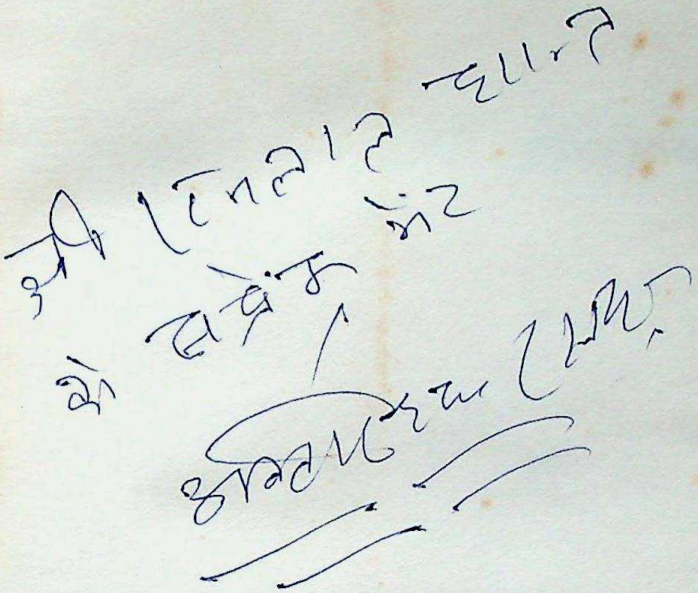

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्श से फर्श तक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Professor of Hindi

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्श से फर्श तक

अवतार कृष्ण राज़दान

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc. No. 625(D)
Dated 23:9:09

सहयोग प्रकाशन
नई दिल्ली

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्श से फर्श तक

© अवतार कृष्ण राज़दान

प्रथम संस्करण : सन् 2003

प्रकाशक :
सहयोग प्रकाशन
7/1 पंत नगर, जंगपुरा,
नई दिल्ली-110014

ISBN : 81-86029-07-9

लेज़र टाईप सैटिंग :
क्रियेटिव ग्राफिक्स
ए-40/6 गली नं० 2, ब्रह्मपुरी,
दिल्ली-53 फोन : 2195643

मुद्रक : बी. के. ऑफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 मूल्य : 115 रु०

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समर्पण

उन सभी कलमकारों के नाम जिन्होंने इस दशक के आतंक-बीज को अपनी कलम की नोक से अंकुरित किया मगर पनपने न दिया।

आभार

मैं एस. ओ. एस. भारतीय बालग्राम (SOS Children's Villages of India) और विशेषकर इस संस्था के अध्ययक्ष पद्मश्री श्री जगन्नाथ कौल का अत्यंत आभारी हूँ जिनके प्रोत्साहन, सद्भावना और आर्थिक अनुदान के कारण यह कथा-संकलन छापना संभव हो सका।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानियों की सूची

		पृ० संख्या
पूर्व निवेदन		vii
पुरोवाक	**गंगा प्रसाद विमल**	xiii
एक	मुझे माँ न कहना	1
दो	दस लाख रुपए	4
तीन	अपहरण	10
चार	पत्ते क्यों झर जाते हैं?	20
पांच	एक और बम-विस्फोट	27
छः	कागज़ के टुकड़े की कहानी	40
सात	आज की ताज़ा खबर	46
आठ	19 जनवरी 1990	50
नौ	लाल धब्बे	58
दस	आँख फड़कती है	62
ग्यारह	विष और अमृत	66
बारह	**अर्श से फर्श तक**	71
तेरह	विद्रोह	78
चौदह	पैदाइशी पापी	84
पंद्रह	ज़िन्दाबाद, ज़िन्दाबाद	92
सोलह	बन्दूक का भय	99
सत्रह	गीत के बोल	105
अठारह	तीन लघु कथायें	108

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्व निवेदन

अक्तूबर सन् 1948 ई० की बात है। जिस तरह आजकल सड़कों पर वाहन चलते हैं, उसी तरह उस वक्त नन्दन कानन कश्मीर के नील-गगन पर हवाई-जहाज़ उड़ते थे। उस समय मेरी उम्र मात्र पाँच साल थी। जन्म से ही पोलियो का शिकार होने के कारण मैं चलने-फिरने की स्थिति में नहीं था। इसलिए अपने मकान के ऊपरी मंज़िल पर बैठकर इन जहाज़ों के उड़ने का लुत्फ उठाता था। कई तरह के जहाज़ दिखाई देते थे-छोटे-बड़े और माल वाहक। इस तरह के जहाज़ों का यातायात देखकर एक तरह से मैं मन-ही-मन खुश था किन्तु दूसरी ओर घर में एक तरह से सभी के चेहरों पर परेशानी के भाव नज़र आ रहे थे। माँ-बाप, भाई-बहन, चाचा-चाची घर के सभी सदस्य परेशान थे। मेरी समझ में नहीं आता कि घर के सभी सदस्य परेशान क्यों हैं। इस बीच रोज़ लोगों के जलूस निकलते थे। उस समय एक ही नारा था-'हमलावर खबरदार, हम कश्मीरी हैं तैयार।' यह सब कई महीनों तक चलने के बाद अंत में मेरी समझ में आया कि कोई देश कश्मीर को हथियाने का असफल प्रयत्न कर रहा है। शत्रु देश के कबाइली सैनिक श्रीनगर से नौ किलोमीटर दूर शालटेंग पहुंचने के बाद यहाँ की जनता ने इनको भारतीय सेना की सहायता से वापस खदेड़ दिया। उस समय यहाँ की जनता में शत्रु देश के प्रति रोष प्रकट होना एक स्वाभाविक बात थी। अपने राज्य पर युद्ध के साये देखकर यहाँ के तत्कालीन तथा अंतिम महाराजा हरि सिंह चुपचाप बंबई पहुंच गए-शायद अपनी जान बचाने के लिए। इससे लोग हद से ज़्यादा परेशान हो गए। उस समय यहाँ के लोगों के प्रिय नेता स्व० शेख मोहम्मद अब्दुल्लाह ने कश्मीर की बागडोर अपने हाथों में ले ली। किन्तु तब तक कबाइली आक्राँताओं ने कश्मीर के कई क्षेत्रों में यहाँ के अल्पसंख्यकों को मारा था या इनकी महिलाओं पर तरह-तरह के अत्याचार किए थे। जो लोग इस जुल्म से बचकर निकलने में सफल हुए, वे येन-केन-प्रकारेण श्रीनगर आकर आम लोगों के घरों में रहकर कुछ समय तक शरणार्थियों का जीवन बिताने लगे। उस

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय इनकी दयनीय दशा थी। इस बीच पता चला कि महाराजा हरि सिंह ने जम्मू-कश्मीर का विलय भारत के साथ कर दिया। यह सुनकर सभी ने चैन की साँस ली। भारतीय सेना ने पाकिस्तानी फौज को वापस खदेड़ तो दिया, फिर भी इस समय जम्मू-कश्मीर का एक तिहाई भाग पाकिस्तान के अधिकार में है।

कश्मीर को हथियाने के लिए आज तक पाकिस्तान ने कितने ही प्रयास किए हैं किन्तु वह हर बार असफल रहा है। चार बार लड़ने के बाद भी उसको मुँह की खानी पड़ी है और इस समय जम्मू-कश्मीर में जो कुछ हो रहा है, वह सभी को पता है कि यह कश्मीर हथियाने का पाकिस्तान का अंतिम असफल प्रयास है। यह दूसरी बात है कि इससे घाटी में हद से ज़्यादा तबाही मच गयी है। अनेक निर्दोष लोग मारे गए हैं। दो हज़ार पाँच सौ वर्षों से रह रहे यहाँ के अल्पसंख्यक कश्मीरी पंडित बेघर होकर भारत के कोने-कोने में बिखर गए हैं। हर तरफ वीरानी छायी हुई है। एक-दूसरे पर विश्वास की दीवारें ढहकर रह गयी हैं। कोई भी अपने-आपको सुरक्षित महसूस नहीं करता, मगर शत्रु-देश की इन चालों को सब समझते हैं। इन पंक्तियों का लेखक स्वयं एक विस्थापित का जीवन जी रहा है और गत कई वर्षों से उसने जो कुछ भी देखा आतंकवाद के रूप में, उसका चश्मदीद गवाह बनकर अपनी प्रस्तुत कहानियों में रेखांकित करने की भरसक कोशिश की है। वस्तुत: मैंने पहले भी इस विषय को लेकर कई कहानियों की रचना की है किन्तु इस संग्रह की कहानियाँ वस्तुस्थिति और समय के अनुरूप लगती हैं। कश्मीर की वर्तमान परिस्थितियों का यह एक प्रमुख दस्तावेज़ है और मुझे आशा है कि इससे आने वाली पीढ़ियों के लेखक एवं पाठक समय की सही-सही जानकारी प्राप्त करेंगे।

सौगात, आतंक बीज तथा ***एल.बी.डब्ल्यू*** (कश्मीरी) के बाद ***अर्श से फर्श तक*** शीर्षक का मेरा यह चौथा कहानी संकलन है जिसकी अधिकाँश कहानियाँ देश-विदेश की हिन्दी पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। प्रस्तुत कहानी-संकलन को पाठकों के सामने रखने का विचार तो मुझे आज से कुछ वर्ष पूर्व था मगर आर्थिक कठिनाइयों के कारण मेरे लिए ऐसा करना सम्भव न हो सका। तिसपर भी भाग्य की विड़म्बना यह कि बाल्य काल से ही मैं चल-फिर नही सकता। मेरे दिन बे-जान टांगों के कारण घर की चारदीवारी में ही व्यतीत होते हैं। इस तरह से मेरी जो दुनिया है, वह सीमित रह गयी है। फिर भी मेरे जीने का सफर जारी है। अपनी इस सीमित दुनिया में रहकर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी है। मैंने इसमें अपना एक अलग संसार बसाया है लेखन मार्ग का, और इसमें अपना एक अलग स्थान बनाया है, गत चालीस

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वर्षों में। इस तरह से आजतक मैंने जो कुछ लिखा उसमें मैंने 'धरा के स्वर्ग' कश्मीर के जन-जीवन, यहाँ की संस्कृति, कला और सौंदर्य को यथा सम्भव रूपायित करने की कोशिश की है, जिसके लिए यह सुन्दर घाटी शताब्दियों से प्रसिद्ध रही है। आगे भी मेरा ऐसा ही प्रयास रहेगा- ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

अर्श से फर्श तक शीर्षक के मेरे इस ताज़ा कहानी संग्रह में, मैंने अपनी सभी कहानियों का चयन कश्मीर की वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर किया है। इसकी हर एक कहानी इसके हलचल का दस्तावेज़ है। ये वही कहानियाँ हैं जिनका गत आठ वर्षों में समय-समय पर पंजाबी, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगु, मलयालम और अंग्रेज़ी में अनुवाद हुआ है। संबंधित प्रदेशों के पाठकों और रचनाकारों ने इनको खूब सराहा है। कश्मीर में कहानी का इतिहास बहुत कम होने पर भी यह आगे की ओर अग्रसर है। प्रस्तुत कहानियों का मूल विषय यहाँ बारह वर्षों से पल रहे आतंकवाद, अलगाववाद या उग्रवाद की विभीषिका पर आधारित है, किन्तु इनमें मैंने यथा संभव कथ्य और पात्र चुनने की कोशिश की है ताकि वे यहाँ की वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप लगें। यहाँ तक कि परिस्थितियों या हालात से पूरी तरह एकात्म होकर मैंने जो कुछ भी महसूस किया, अच्छा या बुरा, उसको प्रस्तुत कहानियों में चित्रित करने का प्रयास किया है। मेरा इस तरह का प्रयास कहाँ तक सार्थक रहा है इसका फैसला पाठक ही कर सकते हैं, विशेषतया वे पाठक जो घाटी में आतंकवाद के कारण विस्थापित होकर अपने ही देश में शर्णार्थियों का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। दरअसल ये उनकी अपनी कहानियाँ हैं, उनके अस्त-व्यस्त एवं अत्यंत कष्टकर जीवन की कहानियाँ हैं।

वस्तुत: इस संकलन के लिए मैंने सन् 1986 ई० से कहानियाँ लिखनी शुरु कीं। यह वही समय है जब तथाकथित आज़ादी का नारा लगने के बाद सबसे पहले अल्पसंख्यक कश्मीरी हिंदू, इस्लामी आतंकवादियों की बर्बरता का शिकार हुए। फलस्वरूप यहाँ की तत्कालीन सरकार गिर गयी। राज्यपाल का शासन हो गया। उसने अल्पसंख्यकों को फिर से बसाया। उनकी नष्ट की हुई संपत्ति को फिर से पूरा किया। इनके नष्ट हुए मंदिरों का पुनर्निर्माण किया। इस तरह से पहले जैसी स्थिति कायम की। किन्तु कुछ महीने बाद ही लोगों ने एक नई सरकार चुनी। सरकार तो बन गयी किन्तु समाज विरोधी तत्त्व एक बार फिर सिर उठाने लगे। उनको दबाने में यह सरकार बिल्कुल असफल रही। अब ये धर्मांध आतंकवादी खुलेआम पाकिस्तान की शह पर नाचने लगे हैं। पैसा एवं हथियार मिलने पर इन्होंने विद्रोह जैसी स्थिति उत्पन्न की है जिसको देखकर सब भौचक्के होकर रह गए हैं। यहाँ के शान्तिप्रिय लोगों से

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई भी बन्दूक उठाने की आशा नहीं करता था। यह दूसरी बात है कि जिसके लिए इन्होंने बन्दूक उठायी, उस समय वह शत्रु-देश भी मानने के लिए तैयार नहीं था। मगर कश्मीर को कब्रिस्तान बनना था, वह तो बन गया और विकास के क्षेत्र में यह जितना आगे बढ़ गया था, उससे कई गुना पीछे की ओर हट गया। यह स्थिति आज भी कायम है और इसको दबाने में कोई भी संजीदा कोशिश सरकार की तरफ से नहीं हुई है। विकास के नाम पर अरबों रुपए भेजना व्यर्थ है जबकि यहाँ आतंकवादियों ने विकास का ढ़ाँचा ही खराब कर रखा है, तहस-नहस कर रखा है। तिस पर भी मारा-मारी और कत्लेआम! इन परिस्थितियों में यहाँ अल्पसंख्यक कश्मीरी पंडित कैसे ज़िंदा रह सकते थे। इसलिए यहां रहना कहाँ की बुद्धिमत्ता थी। सबसे बड़ी बात तो यह कि जिस शांतिप्रिय समुदाय के पास चाकू तक नहीं था अपने बचाव के लिए, उन्हीं को स्वचालित बन्दूक की गोलियों से छलनी कर दिया गया। इन हत्याओं के पीछे आतताईयों का केवल एक ही उद्देश्य था कश्मीर को एक विशुद्ध इस्लामी राजय बनाकर इसे पाकिस्तान को सौंपना। उनका यह उद्देश्य अभी तक सफल नहीं हुआ। आगे क्या कुछ होने वाला है, यह तो आने वाला कल ही बताएगा। सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है कि अपनी जन्म-भूमि में जिन अल्पसंख्यकों का संसार घाटी में केवल सात पुलों तक सीमित था, वही आज देश के कोने-कोने में बिखर कर रह गए हैं और शरणार्थियों का जीवन जीने पर विवश कर दिए गए हैं।

हमारे इस पलायन में एक और बात सामने आयी है। वह है हमारी संस्कृति की जिससे हमारी '***कश्मीरियत***' जुड़ी हुई है। हमारी संस्कृति शनैः शनैः खत्म होती जा रही है। यदि ऐसा ही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब कश्मीरी पंडितों का नाम इतिहास के पत्रों तक ही सीमित होकर रहेगा। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर मैंने चाकू न सही, कलम को हाथ में लेकर अपने विचारों को कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। मैं कहाँ तक सफल रहा हूँ, इसका निर्णय मैंने पाठकों पर छोड़ दिया है। अपने प्राण बचाने के लिए कश्मीर से पलायन करने के बाद मुझे शरण के लिए विभिन्न स्थानों की ओर प्रयाण करना पड़ा है। इस समय जम्मू आकर अस्थायी तौर पर रहने के लिए मजबूर हूँ। आगे मेरा ठौर-ठिकाना कहाँ होगा- यह तो भगबान ही जानता है। फिर भी मेरा दिल हर बार घर जाने के लिए तरसता रहता है। शरणार्थी जीवन के इन बारह वर्षों में, मुझे तरह-तरह के अनुभव हुए। आस-पास जो कुछ भी देखा उसको शब्दों में रेखांकित करने की कोशिश की। इन्हीं अनुभवों पर आधारित प्रस्तुत कहानी-संग्रह '***अर्श से फर्श तक***' आपके सामने प्रस्तुत है।

इस कहानी संग्रह को आपके सामने लाने में, मैं ***सहयोग प्रकाशन*** और इसके

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्यक्ष ओंकार काचरु का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने इसको प्रकाशित करने में काफी दिलचस्पी दिखाई। विशेषतौर पर मैं आभार प्रकट करता हूं एस.ओ.एस. भारतीय बालग्राम (SOS Children's Villages of India) के अध्यक्ष, पद्मश्री जगन्नाथ कौल के प्रति जिन्होंने ***अर्श से फर्श तक*** को छापने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान तो की ही, साथ ही मुझे बहुत प्रोत्साहन भी दिया। इसके लिए मैं उनका अनुग्रहीत रहूँगा।

क्या पता मेरी इन कहानियों से नन्दन-कानन कश्मीर में आतंकवाद का विष शान्ति के अमृत में बदल जाने में सहायक सिद्ध हो!

अवतार कृष्ण राज़दान

डी-255, गली-14/15
लोअर शिव नगर,
जम्मू-180001

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरोवाक्

❑ गंगा प्रसाद विमल

कश्मीर सृजेताओं, कालाकारों, वैयाकरणों, दार्शिनिकों, चिन्तकों और विमर्शकों का ऐसा अधिवास रहा है जिसने भारतीय चिन्तनधारा को नये और कालजयी आधार दिए हैं। वही कश्मीर धर्मांधता, जड़ता, विभक्तता, आंतक और संकीर्णता की ऐसी त्रासदी बन गई है कि वहाँ के मूल अधिवासियों को भुला कर कट्टरपंथी पक्ष उसे सतत अशांत क्षेत्र बनाए रखने में ही अपना हित समझते हैं। एक गंभीर विमर्श के रूप में वास्तविकता के स्थाप्त्य का मूलाधार अनावृत करते हुए **अवतार कृष्ण राज़दान** ने उस त्रासदी पर आवेगात्मक भाषा में संकलित कहानियाँ लिखी हैं। हर कहानी उस सतत अशांत क्षेत्र में विस्थापन के दर्द को व्यक्त करती हुई अनेक प्रश्न सापने लाती है। ये वे सवाल हैं जिनके उत्तर आतंक से नहीं पाये जा सकते, ***अर्श से फर्श तक,*** एक तरह से समग्र मनुष्य जाति के सामने सवालों की झड़ी लगाने का सृजनात्मक प्रयत्न है। यहाँ हम इन कहानियों के मूल्यांकन की कोशिश नहीं करेंगे क्योंकि हिन्दी या कश्मीरी या अन्य भाषाओं से संबंधित विषयों पर असंख्य कहानियाँ लिखी गई होंगी, वे कथा संसार को जिस अर्थ में समृद्ध करती हैं वह भाषा, कौशल और प्रस्तुति के आदर्शों के संदर्भ में देखी जा चुकी हैं। संवेदना के स्तर पर भी ऐसी कहानियों का विवेचन किया जा चुका है। परन्तु एक पक्ष जिसे मौजूदा संसार के परिप्रेक्ष्य में देखना ज़्यादा ज़रूरी है वह है धर्म-संकुल क्षेत्रों में मानवीय संदर्भ की उपेक्षा। यह उपेक्षा धर्मेतर वर्चस्व द्वारा भी खारिज नहीं की गई है। इसीसे प्रश्न उठता है कि जहाँ बहुजातीय इकाइयाँ सदियों से रहती आई हों वहाँ क्या किसी धार्मिक अवधारणा से पनपी नई वस्तुस्थिति या पुरानी अवधारनाओं की, नई व्याख्या किसी जातीय इकाई को बेदखल कर सकती है?

बेदखल करने के धर्माधार का दखल क्या बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तक पहुँचे मानव-विमर्श में संभव है? कह सकते हैं कि वे राज्य जिनका अस्तित्व धर्म से प्रशासित है, कभी भी इस प्रश्न से सामना करने का बल प्राप्त नहीं कर पायेंगे। फिर वे राज्य जो संधियो और करारों से बँधे हैं, सही परिदृश्य को समझने के लिए सामने नहीं आपायेंगे। यहाँ तक कि जहाँ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता राज्य और जनता के अन्तर्सम्बन्धों का मूलाधर है – इस भय से कि आक्रान्ता आतंकवादी उन्हें शिकार न बना लें – चुप रहते हैं। असल में विश्व व्यवस्थाओं की यह सुनियोजित चुप्पी मनुष्य की वास्तविक स्वाधीनता के अपहरण में सहयोगी है। क्या ऐसा है? धार्मिक (बहुसंख्या वाले समुदाय) "बर्बरता के शिकार" अल्पसंख्यकों को लेकर बुनी गई ***अवतार कृष्ण राज़दान*** की कहानियों का मूल स्वर यातना और त्रास है। तथापि अतिभावुकता, जिसपर कि कवियों का ही एकमात्र अधिकार है, लेखक की कहानियों में अवतरित हुआ है। अतिभावुकता उस गुणधर्म के विलोम के रुप में उभरती है जो रचना को संवेदना का पुष्ट धरातल देने के लिए विख्यात है। तब भी यहाँ अवतार कृष्ण राज़दान के उस तर्क पर युक्तिपूर्वक विचार करना होगा जिसकी अन्तर्धाराओं में *कश्मीरियत* का द्विराष्ट्रवाद अपना सिर उठाता है। बीसवीं सदी के आरंभ में कश्मीर के ही एक कवि ने द्विराष्ट्र को खारिज किया था। उनकी पंक्तियों में अस्वीकार की मुद्रा एक अपेक्षा के रूप में उभरती है। वे कहते हैं, "शेख को होली खेलनी चाहिए, ईद पंडित को मनानी चाहिए।" *मुझे मां न कहना* शीर्षक कहानी को लें तो इसमें मिली-जुली संस्कृति में पड़ने वाली दरार का अहसास है। सामासिक संस्कृति कैसे पीछे धकेल दी जाती है- अवतार कृष्ण राज़दान अपनी अधिसंख्य कथाओं में कभी मुखर तो कभी रचनात्मक स्तर पर यह संदेह व्यक्त करते है। यह संदेह एक तरह की प्रश्नाकुलता व्यक्त करता है और उसी प्रश्नाकुलता की तीव्रता उभारने के लिए लेखक अतिभावुकता का सहारा लेता है। वास्तव में अतिभावुकता एक तरह से अतिकल्पना का ही पर्याय है। संवेदना के धरातल पर वह निश्चित अर्थ संप्रेषण में चाहे सहायक नहीं होता किन्तु *दस लख रूपये* जैसी कहानी में वह उस पछतावे का हिस्सा बन जाता है जो स्मृति में बार-बार कचोटता रहता है। यह एक मानवीय आवेग है। कहानी की गुणधर्मी सांकेतिकता उस मकान की अहमियत ज़्यादा पुरज़ोर ढंग से व्यक्त करती है जो पुराना है किन्तु एक प्रतीक है। असल में ऐसे प्रतीकों का स्वभाव एक गैर-मज़हबी या कहें सर्वस्वीकृत मानक है जो हम सदैव अपने साथ लिए चलते हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अवतार कृष्ण राज़दान की बहुत सी अर्थवान कहानियाँ इस संकलन में संकलित हैं। संस्कृति के अन्त: प्रवाह में त्रासदियों के मूलाधारों से टकराती हुई चाहे वर्तमान में वे एक निरंतर स्थिति चित्रित करती हों तथापि वे भविष्य के उस सिरे को विस्मृत नहीं करतीं जिसमें इतिहास की नई करवट, और वह करवट छिपी है, नये प्रारुप के साथ अवतरित होगी।

पावस 2001

भारतीय भाषा केन्द्र,
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110067

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे माँ न कहना

हाँ, मैं! किन्तु नहीं, अब मैं वह नहीं रही हूँ जिस नाम से आप मुझे प्यार से पुकारते थे। हाँ वही, माँ शारदा! सरस्वती की वरदान थी मैं और यही कारण है कि देश-विदेश के लोग मुझे गर्व से शारदा-पीठ कहकर पुकारते थे। किन्तु अब मुझमें वह बात नहीं रही है। अब मैं न किसी की माँ हूँ न ही साक्षरों की शारदा-पीठ। वस्तुत: मैं माँ कहने के काबिल नहीं रही हूँ। मैं अस्तित्वविहीन हो गयी हूँ। इस समय मेरा नाम सारी दुनिया में बदनाम किया जा रहा है। आजकल तो लोग मेरा नाम लेकर शर्माते हैं जबकि आज से कुछ वर्ष पूर्व मेरा नाम गर्व से लिया जाता था। सोचती हूँ कि देखते ही देखते मुझे यह क्या हो गया! रानी थी, दासी क्यों बन गयी? मैं तो सुन्दर हूँ, कुरूपता की बेड़ियों से मुझे जकड़ा क्यों जाता है? देखो दायें भी वही हैं और बायें भी वही- हत्यारे! दोनों द्वारा निर्दोष लोगों की नृशंस हत्या करने से मैं थर-थर कांपती हूँ। मेरी यह दशा इस स्थिति तक पहुंच गयी है कि अब मैं धीरे-धीरे अन्दर से ही सूखती जा रही हूँ। समझ में कुछ नहीं आ रहा कि मुझे यह क्या हो रहा है! अब तो मेरा पहले जैसा सुंदर तन नहीं रहा है जो कूल्हे-कलाइयां ठुमका कर मेरे चाहने वालों को लुभाता था। मेरा यह शरीर अब झुलस गया है। इस समय इस पर असंख्य निर्दोष लोगों के जलाए गए मकानों के मलबे के ढेर पड़े हैं जिससे यह दागदार होकर रह गया है। यही कारण है कि अब मैं किसी को मुंह दिखाने के लायक ही नहीं रही हूँ। कहाँ गए वे दिन जब नूर से नहाया मेरा जलवा देखने के लिए दुर्गम पर्वत मालाओं को चीर कर देश-विदेश के सैलानी मेरे पास आते थे। मैं तो उनको अपने वक्ष के सिंहासन पर ससम्मान बिठाती थी। बिठाती भी क्यों नहीं, हर साल तो ये मेहमान बनकर आते थे मेरे पास। आतिथ्य-सत्कार करने में मशहूर थी न, इसीलिए। किन्तु अब मेरे यहाँ आने का कोई भी नाम नहीं लेता और यदि कोई आता भी है तो उसका जंगजू-जनूनी लोग या तो अपरहण करते या मारते हैं। वजह तो कुछ नहीं है। ये तो मुझे दुल्हन के माथे पर झूलते हुए टीके के रूप में नहीं देखना चाहते हैं। इनको यह पता नहीं कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र का ताज होने का सम्मान मुझे प्राप्त है। किन्तु आज मेरे माथे पर से वे गुमराह नवजवान ताज हटाने के भरसक प्रयत्न में लगे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं जो मेरे अपने नहीं हैं बल्कि मेरी सीमा के पार के कठमुल्लों के इशारों पर नाचकर, मेरे पवित्र तन पर कदम रखा है। ये वही नवजवान हैं जिनका अपना वतन कब का शमशान में बदल गया है और वहाँ से भगोड़े बनकर अब मेरा भी ऐसा ही हाल बनाने में उतारु हो गए हैं। मगर कैसी शर्म की बात है इनके लिए कि जो अपने देश के नागरिकों को युद्ध की विभीषिका से बचा न पाए वही आज एक बड़े लोकतन्त्र के मुकुट से छेड़खानी करने पर तुले हुए हैं।

मुझे लगता है कि ये हकीकत की दुनिया में नहीं जी रहे हैं बल्कि कल्पनालोक में विचरण कर रहे हैं। इनको पता नहीं कि मेरे अतीत का इतिहास कितना पुराना है या मेरे आस-पास संस्कृतियों के कितने पुराने एवं मज़बूत स्तंभ प्रहरी बनकर खड़े हैं। ये तो मुझे हानि पहुंचा सकते हैं मगर नेस्त-नाबूद नहीं कर सकते, जैसा कि ये प्राय: सोचते रहते हैं। इनको पता नहीं कि मेरी कोख से लल्ल द्यद और नुंद ऋषि, अरणिमाल और हब्बा खातून, परमाननद और अहमद बटवारी, महजूर और नादिम जैसे कवि-कवयित्रियों ने जन्म लिया है। ये वही कवि-कवयित्रियां हैं जिनके काव्य में सदाचार और भाईचारे का संदेश गुंफित है। इतना ही नहीं, कलहण और बिल्हण ने अपनी काव्य-कृतियों में मेरा नाम खूब आगे बढ़या है। मेरे इस वक्ष की समतल भूमि पर कई दर्शन सामने आए हैं और मेरी संतानों ने समय-समय पर इनका अमृत-रस भी पिया है। किन्तु आज मेरे ही बेटे दूसरों के बहकावे में आकर मेरे तन-बदन को झुलसा कर दागदार बनाने पर तुले हुए हैं। अपना हाल कह दूं तो किस से? इस समय तो मेरी जुबान बन्दूक की नोक पर बन्द कर दी गयी है।

आज तो मुझे अपनी उन सन्तानों की याद आती है जो यहाँ पांच हज़ार वर्षों से बसे हुए थे। निहायत ही शान्तिप्रिय होने के कारण इनको मेरे वक्ष से बाहर खदेड़ कर, जान बूझकर देश निकाला दिया गया। इनकी जुबान पर हर समय 'सोउ हम सो' रहता था। सुनने में आया है कि ये डुग्गर-देश एवं अन्य मैदानी क्षेत्रों में तपती धूप से झुलस कर छट पटा रहे हैं। कितनी सीधी-सादी थीं ये मेरी सन्तान जिनके पास अपनी सुरक्षा के लिए चाकू भी नहीं था, उन्हीं को गोलियों से छलनी किया गया। इनमें भय और आतंक का वातावरण उत्पन्न किया गया। इसके लिए इनके अपने भाई ज़िम्मेदार हैं। कल तक जो एक-साथ रहते थे, एक-दूसरे के साथ अपना सुख-दुख बांटते थे, वही आज एक-दूसरे को मारने पर उतर गए। मेरी छाया में रहने वाले ये अल्पसंख्यक लोग पथ-भ्रांत हुए बहुसंख्यकों के हथियारों से चुन-चुनकर छलनी हो गए किन्तु मैं सोचती हूँ कि इनके पास ये हथियार कहाँ से आये? जिस पर भी मुझे इस बात का आश्चर्य है कि औरत को ये जिस आदर भाव से देखते थे, उसकी पूजा माँ, बहन या पत्नी के रूप में करते थे, सम्मान देते थे, उसी औरत का आज दिन-दहाड़े अपहरण

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया जाता है। इनकी आंखों से शर्म व हया का पर्दा उठ गया है। इतना ही नहीं, आज यहाँ औरत को नंगा किया जाता है, उसकी इज़्ज़त-व-आबरू लूटी जाती है, तत्पश्चात् उसको गोलियों से भून दिया जाता है। इसके अतिरिक्त भीड़-भाड़ में बम फोड़ना, ग्रिनेड़ चलाना, राकेटों से भव्य भवनों को नष्ट करना, माइन-विस्फोट करना, पुल एवं स्कूल जलाना आदि तो अब इनके लिए आम बात बन गयी है। आज तक मेरे वक्ष पर इन्होंने इस तरह की कितनी घटनाएं की है-निश्चित रूप से कह नहीं सकती हूँ। मगर इतना तो ज़रूर है कि इनसे मेरी कई सन्तानों की मृत्यु हो गयी, कई माताओं की आशाएँ टूट गयीं, कई बहनों के भाई बिछुड़ गये तथा कई पत्नियों की मांग का सिन्दूर उजड़ गया। मुझे आश्चर्य इस बात का है कि मेरी कोख में पलने वाले मेरे इन कमसिन बच्चों को इस तरह के कुकार्य करने पर मजबूर करना निहत्थे लोगों में आतंक फैलाना, शान्ति भंग करना तथा कानून के उसूल ताक पर रखकर अपना उल्लू सीधा करना किसका काम हो सकता है? मेरी संतान तो यह काम अकेले नहीं कर सकती हैं। ये तो ऐसा करने के लिए मजबूर किए गए हैं। इसके परिप्रेक्ष्य में कोई अन्य माँ या मंथरा कहिये, इनको यह कुकार्य करने के लिए बहकाती है? शायद वही मेरा अस्तित्व मिटाने के लिए तत्परता से काम करती है। मुझे दूसरों के हाथों बेचना चाहती है। मुझे किसी के माथे पर झिलमिल करते तिलक के रूप में नहीं देखना चाहती है। मगर उसको यह पता है क्या कि जिनको वह इस तरह के कुकार्य करने पर प्रेरित करती है, उनकी माँ मैं हूँ। वह मेरे बेटे हैं। वह मेरे अपने हैं। इन्होंने मेरे स्तनों से दुग्धपान किया है। उसका इन पर कोई अधिकार नहीं। यदि मैं चाहूँ तो उसको एक पल में ही नेस्त-नाबूद करवा सकती हूँ। जिस पेड़ की शीतल छाया के नीचे बैठा ही न जा सके, उस पेड़ को खड़ा करना कहाँ की बुद्धिमत्ता है! मगर यह खोखला पेड़ उस समय उन लोगों ने खड़ा किया है जो दो राष्ट्र दृष्टिकोण से प्रभावित थे। किसी विशेष धर्म की दुहाई देकर बरगद की कुछ डालियों को अपने साथ मिलाना चाहते थे। मगर इस खोखले पेड़ को यह पता नहीं कि बरगद तो आखिर बरगद होता है। इसका विशालकाय तना, असंख्य डालियाँ, लम्बा फैलाव तुलना में मुझे हाथी के सामने चूहा लगता है। जिस तरह से ये मेरे बेटों को बहकाकर कुकर्म करने के लिए प्रेरित करता है, उससे मैं झुकने वाली नहीं। उसको यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि भले ही मेरे बेटों को मेरे विरुद्ध कितना बहकाये, मगर उनको पता है कि हमारी असली माँ कौन है, हमारी 'कश्मीरियत' क्या है। वह दिन दूर नहीं जब मेरा सूना तन एक बार फिर निखर जाएगा। मेरे निर्दोष बेटे शान्ति से रहने लगेंगे और दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र की, जिसका ताज होने का सम्मान मुझे मिला है, अमन की मशाल जलाते रहेंगे जो इस समय अस्थायी तौर पर बुझ गयी है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दस लाख रुपए

अब की बार किसी से पूछे बिना हरिकृष्ण ने पूरे दस लाख रुपया खर्च कर, अपने आवास के लिए नया मकान बनाया।

सुन्दर,भव्य एवं आलीशान!

हाँ, अब यह उसकी मजबूरी थी!

गत् कई वर्षों से उसके मन में मकान बनाने का विचार था। अंत में इसने इसको बनाने की पहल की। किन्तु इसके लिए उसको कई बार सोचना पड़ा। इसके निर्माण के हर पहलू पर गौर करना पड़ा। किस पॉश कालोनी में अपना नया मकान बनाऊँ, किस नक्शे को आधार मानकर इसकी नीव डालूँ, दुमंज़िला बनाऊँ या तिमंज़िला, सीमेंट का इस्तेमाल करुँ या चूना-गारे का, स्लैब डालूँ या टीन की छत, किसमें पैसा बचेगा और किसमें ज़्यादा खर्च होगा– ये ऐसी बातें हैं जिन पर ध्यान से वही सोचता है जिसने सारी उम्र कुछ न बनाया हो।

किन्तु हरिकृष्ण ने मकान बनाया। अब यह उसके लिए स्वपन नहीं था। उसने इस स्पप्न को साकार रूप प्रदान किया। उसने श्रीनगर की एक पॉश कालोनी में आलीशान बंगला बनाया। बंगला बन गया सीमेंट की चुनाई में। चट्टान जैसा। अन्दर से इसकी निर्माण-पद्धति कुछ इस तरह की थी कि देखने वाले को आश्चर्य होता था। इसमें दो सेट ऐसे बने थे कि एक में बसने वाले आदमी को दूसरे का पता न चले। आशय यही था कि एक सेट में खुद बसेगा और दूसरे में किरायेदार। वह भी अलग और मैं भी अलग। इसके अतिरिक्त बंगले के पास के आंगन में रंगारंग टाइलों के फर्श का बिछावन किया। दीवारों पर संगेमरमर लगाया। दरवाज़े और खिड़कियां रंग से पोते तथा 'लान' लगभग मुगल वास्तु-शिल्प के आधार पर बनाया। इसमें तरह-तरह के फूलों की पनीरी लगायी। आंगन के आस-पास की दीवार पक्की बनायी। प्रवेश द्वार फौलाद का लगाया। इस तरह से इसके बनाने में कोई कसर नहीं रखी। उसकी आशाओं का भव्य महल बन गया जिसके लिए उसने सारी उम्र कामना

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की थी। इसके बनाने में दो वर्ष लगे और खर्चा आया दस लाख रुपए! हाँ, पूरे दस लाख रुपए!

यह वही रकम है जो हरिकृष्ण ने सारी उम्र पैसा-पैसा जोड़ कर बचाया था। इस समय यह सारा पैसा खर्च हो गया। कुछ समय के लिए उसकी आर्थिक स्थिति पस्त हो गयी। किन्तु इन्सान तो तभी ज़िन्दा रहेगा जब उसके पास रोटी, कपड़ा और आवास की सुविधा मय्यसर हो। यह सब तभी संभव हो पाएगा जब उसके पास पैसा हो। इसलिए वह दौड़-धूपकर पैसा कमाने में लगता है किन्तु शर्त यह है कि उसको सकून हो, शान्ति मिले।

हरिकृष्ण ने मकान तो ज़रूर बनाया मगर न जाने उसको यहाँ शान्ति क्यों नहीं मिलती थी। उसके मन का चैन हब्बाकदल में बने अपने पैतृक मकान में ही प्राप्त था। झेलम नदी के तट पर स्थित देवदारु लकड़ी का बना चौमंज़िला मकान देखते हीं बनता था। इसका वास्तुशिल्प देखकर लगता था कि यह लगभग तीन सौ वर्ष पुराना है। इसकी नींव की पहली मंज़िल बिल्कुल पत्थरों से बनी थी। शेष तीन मंज़िल माहराजी ईटें और लकड़ी के बनी थीं। लकड़ी तो इसमें इतनी इस्तेमाल की गयी थी कि लगता था किसी जंगल को काटकर इसके बनाने में लगाया है। देखने में तो यह मकान राजमहल लगता था किन्तु आश्चर्य यह है कि इसमें राजमहलों जैसी गुंजाइश नहीं थी। इसकी निचली मंज़िल में सिर्फ दो कमरे थे। बीच की मंज़िल में भी ऐसे ही दो कमरे और ऊपर की पूरी मंज़िल एक बड़े हॉल में परिवर्तित की गई थी। यहाँ से ही शंकराचार्य पर्वत, हारी-पर्वत और ड़ल-झील साफ दिखाई देते थे। आंगन में स्नानगृह और शौचालय भी बना था। बाहर से यह मकान भव्य, बड़ा एवं सुन्दर लगता था किन्तु इसके अन्दर इतने ही नाम-मात्र कमरे देखकर आश्चर्य होता था। वस्तुतः पुराने मकानों का वास्तुशिल्प ऐसा ही होता था। उस समय मकान की मज़बूती पर अधिक ध्यान दिया ज़ाता था चाहे इसके अन्दर थोड़ी ही गुंजाइश की व्यवस्था रहे। मकान या कमरों के अन्दर रोशनी रहे, हवा चलने के लिए खिड़कियां हों या नहीं इसके साथ मकान बनाने वाले को कोई सरोकार नहीं होता था। इसी तरह का मकान जब आजकल बनता है तो बनाने वाला इतनी लकड़ी का इस्तेमाल नहीं करता और इस तरह बनाता है कि अन्दर से बैठने की अच्छी-सी गुंजाइश बने। यह तो समय-समय की बात है। यह मकान भी उस समय की वास्तुकला की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। खैर, मुझे क्या, मैंने तो इसको थोड़े ही बनाया है। मुझे तो अपने उस पूर्वज का शुक्रगुज़ार होना चाहिए जिसने इसको बनाया है। तब से आज तक हमने इसकी कौन-सी मरम्मत की है? मेरे बाप

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ने भी इस पर एक कौड़ी तक ख़च नहीं की है। आज तक इसमें हम ऐश करते आए हैं। हरि कृष्ण यही सोच रहा था कि कान्ता ने कमरे में प्रवेश किया। कहने लगी– 'मैं कहती हूँ कि अब इस हुजरे में रहा नहीं जा सकता।'

'क्या बकती हो? हुजरा है यह? यह तो हमारे पूर्वजों का बनाया आलीशान मकान है'। मैंने कहा।

'है, है। आलीशान मकान! क्या कहने। इस तरह कहते हैं कि जैसे सच्ची आलीशाान मकान है। यह तो हुजरा है। समझे! मैं कहती हूँ कि अब इसमें रहा नहीं जा सकता', कान्ता ने गुहसे में कहा

'फिर कहाँ रहेंगे हम? रहने के लिए तो अब यही रह गया है।' मेरा उत्तर।

'क्या हम अपना मकान बना नहीं सकते? आप ही सोचिए एक कमरे में, उठना-बैठना, खाना-पीना आदि संभव हो सकता है?– उसने पूछा। 'क्यों नहीं हो सकता? मजबूरी में इन्सान कुछ भी कर सकता है।– मैंने कहा।

'चलिए हमारी तो मजबूरी है मगर बच्चों की पढ़ाई का क्या सोचा? उनकी पढ़ाई भी तो इसी कमरे में होती है। अतिथियों का आतिथ्य-सत्कार भी तो यहीं किया जाता है। तिस पर भी यह आपकी भाभी'-कान्ता ने बात को काटकर कहा।

'भाभी? उसने क्या किया'?

'इसीलिए मैं कहती हूँ कि मुझसे इस कमरे में रहा नहीं जा सकता। पास वाले कमरे में आपके भाई जो रहते हैं। दोनों कमरों का गलियारा सम्मिलित है। उसका झाड़ू-पौंछा मैं करती हूँ। किन्तु आपकी भाभी का कहना है कि मेरा गृहस्थ बड़ा है, इसलिए वह इसका झाड़ू-पौंछा नही कर सकती।' –कान्ता के स्पष्ट शब्द। 'मगर वह भी तो इसी मकान में रहती है। सफाई तो हर किसी के लिए ज़रूरी है।' –मैंने समझाते हुए कहा।

'यह तो आप कहते हैं, मगर वह भी तो यह माने'-कान्ता ने सफाई पेश करते हुए कहा।

'मगर आप उसको समझाती क्यों नहीं?'–मैंने पूछा। 'मैं क्या समझाऊँगी। वह क्या मेरा कहा मानती है। आग लगे आपके इस पूर्वजों के मकान को। तीन पीढ़ियां तो इसमें बस गयी हैं और आप हैं कि अपना कुछ नया बनाने का खयाल नहीं। ज़माना बदल गया है। वह भी समय था जब परिवार के सारे सदस्य एक ही कमरे में सोते थे किन्तु आजकल पांच साल का बच्चा भी अपना कमरा मांगता है। आप हैं कि

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्नीसवीं सदी में जी रहे हैं। समय की नस से आप हमेशा बेखबर रहे है।'–कान्ता ने एक लम्बा भाषण झाड़ दिया।

सच कहती है कांता। आज तक मैंने उसकी एक बात भी मानी नहीं है। वस्तुतः इस तरह एक कमरे में रहना कहाँ की बुद्धिमत्ता है! यह तो अपने-आपको जेल की कोठरी में बन्द करने के बराबर है। एक ही कमरे में सभी का रहना तो बीमारियों को दावत देना है। बच्चों के सेहत के साथ खिलवाड़ करने के बराबर है। जहाँ सांस लेने के लिए शुद्ध हवा प्राप्त न हो, वहाँ रहना तो कष्टदायक है ही, बेकार भी है'–यही सोचकर हरिकृष्ण ने नया मकान बनाया जहाँ दो वर्षों से वह ठाठ से रहता था! मगर उसके मन को चैन नहीं था।

❑

हरिकृष्ण को न चाहने पर भी अंत में आतंक के कारण कश्मीर से जम्मू की ओर सपरिवार पलायन करना पड़ा। ज्यों ही उसने अपने आलीशान बंगले के मुख्य द्वार को हरिसन ताला लगाया तो उसकी आंखों से आंसू बह निकले। उसने अपने-आपसे कहा–'मेरे भाग्य में कहाँ लिखा था कि मैं नए मकान में रहूँ।'

गत् कई वर्षों से उसको आतंक की बू आ रही थी मगर वह इस बात की कल्पना भी नहीं करता था कि इससे सारी कश्मीर घाटी में आतंक का प्लेग फैलेगा और लोगों को इससे बचने के लिए यहाँ से भागकर जम्मू या अन्य प्रदेशों के विस्थापित शिविरों में रहना पड़ेगा। मगर वही हो गया जो नहीं होना था और जिसने अब एक ऐतिहासिक घटना का रूप धारण कर लिया है। इतिहास साक्षी है कि पहले भी पंडितों के साथ इस तरह के अत्याचार हुए हैं किन्तु हरिकृष्ण कहता था कि यह सब झूठ है, हतिहासकारों की कोरी कल्पना है। वस्तुतः यह सत्य है कि जब तक पंडित का घर सुरक्षित है तब तक उस पर हुए अत्याचारों की दलील कल्पना लगती है किन्तु जब उसका घर इन्हीं अत्याचारों के कारण उजड़ या छूट जाता है तो उसको पता चलता है कि उसने किन तूफानों से टक्कर ली है। आज भी पंडित ऐसे ही तूफानों से टक्कर ले रहे हैं। एक-दूसरे से बिछड़ तो ज़रूर गए हैं मगर जहाँ तक हो सकता है, अपना मान-सम्मान, अपनी शताब्दियों पुरानी संस्कृति को बचाने के भरसक प्रयत्न में लगे हैं। अभी कुछ ही वर्षों की बात है कि हरिकृष्ण श्रीनगर में सपरिवार अपने मकान में रहता था किन्तु आज उसमें वह बात नहीं। उसका बड़ा बेटा दिल्ली में फट्टी पर माल बेचता है, छोटा लड़का लुधियाना में पढ़ता है और लड़की का अल्पायु में ही विवाह किया है। श्रीनगर में उसके नया मकान बनाने का आशय

CC-©. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यही था कि बाद में उनके बेटे इसमें रहेंगे, तत्पश्चात उसके पोते आदि। मगर भाग्य की विडम्बना देखिए, इसमें न वह रहा, नहीं उसके बेटे या पोते। फिल्हाल तो वह आजकल अन्य कश्मीरी विस्थापितों की तरह जम्मू में नगरोटा के शरणार्थी शिविर में एक तार-तार हुए टेंट में, परिवार सहित रहता है। सूर्य किरणों का गुच्छा उसके बेड़ पर पड़ता है। बाहर से इतनी गर्मी है कि लग रहा है सारा आसमान जल रहा है। गर्मी की तपन से उसका चेहरा अंबरी सेब की तरह लाल हो गया है। उसकी समझ में नहीं आता कि वह करे तो क्या। अखबार की कतरन की ओर बार-बार देखकर वह न जाने सोचने पर विवश सा क्यों हो जाता है। इसके साथ ही उसकी आंखों से आंसू बह निकलते हैं और ज्यों ही कान्ता टेंट की फांक खोलकर अन्दर आती है तो उसका दिल धक्-धक् करने लगता है। वह उसके सामने बैठती है। पूछती है-'क्या बात है? आपकी आंखों से ये आंसू...'

'मुझे आज श्रीनगर का पुराना मकान याद आया। कितनी ठण्ड थी वहाँ कमरों में और यहाँ हम अग्नि भट्टी में जल जाते हैं'-हरिकृष्ण ने कहा।

'क्यों? नए मकान के कमरों में उनसे भी ज्यादा ठण्डी थी। मुझे भी सुबह-शाम नए मकान की याद आती है।'-कान्ता का उत्तर।

'यदि नया न बनाया होता तो इस समय दस लाख रुपया जमा होता और यहाँ इस टेंट में रहने की नौबत ही न आती और वह भी विस्थापिन के रूप में।'-हरिकृष्ण ने कहा।

'हमें यहीं रहना है क्या? हमें घर वापस जाना है और वहाँ अपने नए मकान में रहना है' -कान्ता ने विश्वास के साथ कहा।

यह सुनकर हरिकृष्ण ने पत्नी की ओर ध्यान से देखा। कहने लगा-'आपका कहना किसी हद तक सही है किन्तु सोचता हूँ उस दिन मुझे मकान बनाने का कौन सा भूत सवार हो गया। यदि मैने ऐसा न किया होता तो इस समय मेरे पास दस, बारह लाख रुपए की बचत होती' -हरिकृष्ण ने अपनी बात एक बार फिर दोहरायी।

इस समय कान्ता को इस बात का आश्चर्य हुआ कि आज उसका पति इस तरह पैसों के पीछे क्यों पड़े हैं। उस समय पैसों का अफसोस नहीं किया जब मकान बन गया और आज इतने वर्षों के बाद वह पछता रहा है। उसने पति की ओर ध्यान से देखा और कहा-'क्या बकते हो मिस्टर! इस तरह पैसा खर्च होने के बाद अफसोस करना बेकार है। पैसा खर्च हो गया मगर इसके साथ ही आपने वह प्राप्त किया जो सारे जीवन में प्राप्त नही किया था।'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'वह कौन सी चीज़ है?'–हरिकृष्ण ने पूछा।

'जब से मेरे पल्लू में बंध गए तब से कहो आपने क्या नया करके दिखाया? हाँ, नया मकान तो ज़रूर बनाया, इसी में तो मुझे आपकी सफलता का राज़ दिखता है। किसी भी तरह इस पुरानी बस्ती में बने पूर्वजों के मकान से निकलकर पॉश कालोनी में एक बंगला बनाया और अपनी ज़िन्दगी की नयी शुरुआत की।'–कान्ता ने यह सब एक ही सांस में कहा।

'मगर आपको मैं एक बार फिर बताता हूँ मेरे ये बारह लाख रुपए व्यर्थ नष्ट हो गये। उस समय हमने पूर्वजों का मकान छोड़कर ज़बरदस्त भूल की।'–हरिकृष्ण ने कहा।

'वह कैसे?'–कान्ता चौंक-सी गयी।

'लीजिए यह है आज का अखबार! पढ़िए क्या लिखा है इसमें।'–हरिकृष्ण ने अखबार पत्नी को थमाते हुए कहा।

कान्ता अखबार को हाथ में लेकर पढ़ती है। लिखा है–'श्रीनगर की रावलपुरा कालोनी में कल आतंकवादियों ने अल्पसंख्यकों के, जो विस्थापित बनकर जम्मू चले गए हैं, दस मकान जलाकर भस्म कर दिए जिनमें यहाँ के मशहूर चित्रकार हरिकृष्ण का आलीशान बंगला भी शामिल है।'

कान्ता ने खबर पढ़ी और पति की ओर एक-टक देखने लगी। उसके मुंह से एकदम निकल गया–'क्या पुराना मकान भी जल गया है?'

'नहीं, फिल्हाल वह अभी तक आग की लपटों से सुरक्षित है' –हरिकृष्ण ने गर्व से कहा –'मगर मेरे बारह लाख रुपए बीच में व्यर्थ खर्च हुए, उसी का मुझे पछतावा है।'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपहरण

सुले के पकड़े जाने की खबर गांव के अन्दर और बाहर रहने वाले लोगों की बस्ती में आग की तरह फैल गयी। वे उसी समय इकट्ठे होकर, किसी की इस हरकत के विरुद्ध विरोध प्रकट करते किन्तु उनके चेहरे पर भय और आतंक छाया हुआ था। वस्तुत: वे जानते थे कि इसके पीछे किसका हाथ हो सकता है। उसी ने इस गांव को गत् कई वर्षों से कब्रिस्तान में बदल दिया है। इसलिए वे उसकी दिल से घृणा करते थे। उसको न लोगों में दिलचस्पी थी न ही गांव के विकास में। उसका काम था सिर्फ लोगों में आतंक फैलाना। किन्तु आज वह भी अपनी इस हरकत से कुछ समय के लिए भयभीत हो उठा। उसको डर लगा कि कहीं गांव के ही लोगों में से कोई उस पर गोली न चलाए! इसलिए उसने अपने आदमियों को गुप्त रूप से आदेश दिया–मेरे मकान की, बाहर से बन्दूक और हथगोले लेकर रखवाली होनी चाहिए। बाहर से मक्खी तक न आ टपके।' ऐसा ही हुआ।

वह कोई अजनबी नहीं था। बल्कि गांव वालों का जाना-पहचाना आदमी था। गांव में उसकी इज़्ज़त थी! इसलिए नहीं कि उसका व्यक्तित्व भव्य था बल्कि इसलिए कि वह मालदार आदमी था। नाम था उसका अकरम।

सुले के पकड़े जाने के बाद जब अकरम ने उसको देखा तो उसको विश्वास ही नहीं आ रहा था कि वह वही सुले है– भूताकार चेहरे वाला! गुप्तांग के सिवाय उसके तन पर कोई कपड़ा नहीं रहता था। उसके दोनों हाथ आज रस्सी से बंधे थे। वह कुछ नहीं कह पा रहा था। केवल अकरम की ओर देख रहा था–भूखे शेर की तरह! उस समय ऐसा लग रहा था कि यदि वह जंगजू-जनूनियों की गिरिफ्त से पल भर के लिए मुक्ति पाता तो कुछ ही मिन्टों में वह अकरम के भारी-भरकम शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देता। इसलिए वे चिल्लाया–'आय! ठीक से पकड़ो इस कमीने को!'

उस समय सुले यही सोच रहा था कि काश एक बार परवरदिगार का नाम लेकर अकरम को गोलियों से छलनी करने में वह सफल हो जाए। किन्तु नहीं, उसके दोनों हाथों में रस्सी का कसाव मजबूत हो गया और उसको अकरम के पास लाया गया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'इस हरामज़ादे को पहले पेड़ से बांध लो'–अकरम चिल्लाया।

जंगजू जनूनियों ने सुले को पेड़ से बांधा। सुले ने उनको रोकने की हर संभव कोशिश की किन्तु असफल रहा। वह वाकई उनको रोक सकता था किन्तु इस समय उसमें किसी से टकरा जाने की हिम्मत नहीं थी। एक तो गोलियों के साथ जंग और दूसरा कई दिनों से खाली पेट! तिस पर भी मुसीबत यह कि उन दिनों वह फरार हो गया था। वह कभी किसी पहाड़ी की चोटी पर दिन काटता, बियाबानों में रातें गुज़ारता या अपने को पूरी तरह छिपाने के लिए घण्टों किसी नदी में डुबकी मार कर रहता। गत् एक महीने से वह यही करते-करते अपने जंगजू गुट से फरार हो गया था। किन्तु एक दिन ज्यों ही वह पेड़ के नीचे लेट गया तो उसकी समझ में आया ही नहीं कि यह क्या हो गया, क्यों हो गया और कैसे हो गया। उसने आंखें खोलीं और अपने आस-पास, आगे पीछे खूंखार आतंकवादियों को बन्दूकों और बमों से लैस पाया। वह झट उठा और दौड़ लगाकर भागने की कोशिश की, किन्तु नहीं, वह अंत में पकड़ा गया। उस समय भी उसके दिल ने चाहा कि उन आतंकवादियों का बेजा निकाल दे मगर पल भर में ही उसने देखा कि उसके हाथ रस्सी से बंधे हैं।

'क्या नाम है तेरा?'–अकरम दहाड़ उठा।

सुले चुप।

'हरामज़ादे! बोलता क्यों नहीं'–अकरम ने एक बार फिर दहाड़कर कहा।

'सुले'–उसका उत्तर।

'सुले! हाँ तो सच-सच बता, तूने शमीमा को ऐसी कौन सी धमकी दी थी कि उसने आत्महत्या कर ली?'

'यह झूठ है। सच तो यह है कि आपने ही उसको दिन-दहाड़े गोलियों से भून डाला।'–सुले का सपाट उत्तर।

'झूठ। उसके हत्यारे तुम हो।'–अकरम का प्रत्युत्तर।

'कमीने, पाजी, हरामज़ादे। अपने कुकर्मों का चोला मुझे पहनाते हो?'–सुले के ज़ोरदार शब्द।

'बेंत चलाओ।'–अकरम ने चिल्लाकर कहा।

बाड़े के जंगजू-जनूनियों ने सुले के नंगे बदन पर बेंत चलाने शुरु किए।

'नाम एक बार फिर बताओ।'–अकरम ने पूछा।

'सुले।'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'तू इसी गांव में रहता है?'

'हाँ।'

'शमीमा तुम्हारी बीवी थी?'

'हाँ'

'उसको तुम्हीं ने मारा है?'

'नहीं, यह झूठ है।'

'तूने फिर मुखबिरी क्यों की?'

सुले चुप। वैसे उसके पास इस बात का उचित उत्तर था मगर यह समय जुबान हिलाने का नहीं था।

'चलाओ बेंत इस साले पर। मैं सोचता हूँ कि इसी पेड़ पर लटका कर इसको फांसी दे दूँगा। इसी के कारण जमा किए हुए हमारे हथियारों पर पुलिस का छापा पड़ गया। उस समय तो मैं मुश्किल से बच गया वरना मैंने जेल की हवा कब की खायी होती। यह मुखबिर है।'

सुले ने सुना और जवाब में कुछ नहीं कहा। इस समय वह थकान महसूस कर रहा था। खाली पेट होने के कारण उसकी अंतड़ियाँ बगावत कर रही थीं। आंखों से अंधेरा छा रहा था। ऐसा लग रहा था कि वह अभी गिर जाएगा।

'बेंत चलाओ।'–अकरम ने एक बार फिर आदेश दिया। कमर पर एक ही बेंत लगने से वह मानो गहरी नींद से बेदार हो गया। इस बार उसने अकरम को ध्यान से देखा– लंबा कद, भारी-भरकम शरीर। सिर पर कराकुली टोपी। कमरे के बीच में वह इसी तरह खड़ा था।

'रुक जाओ, अब वह ज़रूर गिरकर बेहोश हो जाएगा।'–यह कहकर अकरम दूसरे कमरे में चला गया और बाद में उसने कहा–'इसको बांधकर रख लेना। आज शाम को इसे चुकता किया जाएगा'।

पेड़ के नीचे रस्सी से बंधकर सुले ने कुछ क्षणों के लिए आंखें बन्द कीं। उसको लगा कि शमीमा 'फिरन' पहने तथा सिर पर स्कार्फ बांदे उसके सामने बैठी है। शमीमा...मेरी शमीमा...।

❑

शमीमा को अब सब अच्छा नहीं लगता था। अकरम उसका पीछा करता रहे। इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तरह से वह डर-सी जाती। क्या पता वह किस उद्देश्य से उसका पीछा करता है–गोली चलाने के बहाने या किसी और मनशा से। मगर नहीं, यह तो इस गांव के 'एरिया-कमाण्डर' हैं। इनका काम है सुरक्षा बलों के साथ लड़ना और वह भी कश्मीरियों की आज़ादी के लिए। कश्मीरी तो हम सब हैं और आज़ादी लेना हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। आज़ादी प्राप्त करने के बाद ही हम उन्नति के पथ पर अग्रसर होंगे। यह बात भी अपनी जगह सत्य है। मगर उसको मेरे पीछे-पीछे चलने से क्या मिलता है?

शमीमा को यह सब अच्छा नहीं लगा। उसने सोचा कि वह सुले से कह देगी। नहीं, ऐसा करने से अकरम की खैर नहीं। उसकी बोटी-बोटी कुत्तों से नुचवाने की अभी सुले में हिम्मत है। पर अंत में क्या होगा, कुछ नहीं।

सुले का खयाल आते ही शमीमा क़ा चेहरा अपने-आप शर्म से झुक गया। ऐसा अलबेला और खूबसूरत जवान तो इस गांव में कोई नहीं है– चौड़ा सीना और लम्बी-लम्बी बाहें! हर बार शमीमा का मन करता उसकी बाहों में अपने-आपको भर दे। अब वह आता ही होगा, शमीमा जानती है। कैसे थे वे दिन जब वह अकरम की तरह मेरे पीछे-पीछे आकर कहता–ऐ शमी! इतना तेज़-तेज़ चलने से तुम्हारा सांस नहीं फूलता?'

'तू भी क्या कम है इस दौड़ती हुई घोड़ी को पकड़ने में। किन्तु हाय, लगाम हाथ में नहीं आती, यही न?'–शमीमा इठलाती हुई बोली।

'घोड़ी भी पकडूँगा लगाम के साथ। किन्तु घोड़ी पर सवारी करने को जी चाह रहा है।'–सुले का उत्तर था।

'हाय हो, यह क्या कहता है?'–शमीमा का चेहरा एकदम शर्म से लाल हो गया। सिर झुकाकर उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान उभर आयी।

वही हुआ जो सुले ने कहा था। शादी हुई धूमधाम से। इसके बाद उल्लास भरे वातावरण में कुछ महीने बीत गए। आस-पास का माहौल लहलहा उठा। जब सुले के लम्बे-लम्बे हाथ शमीमा के संगेमरमरी शरीर पर रेंगने लगते तो ऐसा लगता था कि वह होश में नहीं है। चेतना शून्य। उन्माद की यह स्थिति शादी के बाद बराबर कायम रही।

किन्तु ऐसा कब तक? दानों का संसार तो बस गया पर इसके साथ ही उनके इस संसार रूपी गाड़ी का चलना दूभर हो गया। सुले तो कोई भी काम करने के लिए तैयार था किन्तु काम करने के नाम पर कुछ नहीं मिलता। किन्तु एक दिन उसके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाग्य ने एकदम करवट ले ली। अकरम उसके पास आया और एक सुझाव दिया। सुझाव था धर्मांध आतंकवादियों के एक गुट में भर्ती होना। पाक अधिकृत कश्मीर के प्रशिक्षण केन्द्रों में गोली, बम, ग्रिनेड आदि का प्रशिक्षण पाना। इसके बाद यहाँ आकर अपनी बस्ती में भारतीय सेना के साथ लड़ना। इसके लिए वह प्रतिमास एक हज़ार रुपया वेतन पाता रहेगा।

सुले तो इस काम में पूरी तरह जुट गया। उसने कई बम-विस्फोट किए, कई भारतीय फैजियों को मारा, मुखबिरों को मौत की नींद सुला दिया। सब से बड़ी बात तो यह कि आज तक कई बार पाक अधिकृत कश्मीर गया और वहाँ से प्रशिक्षित होकर वापस आया। सुले तो इस काम में तन-मन से जुट गया। शमीमा इस घोर चिंता में रहती थी कि उसका सुला ज़िन्दा घर वापस आएगा या नहीं, और शाम को जब उसकी छबि देखती तो मन-ही-मन झूम उठती। इस भय से आक्रांत वातावरण में एक दिन न जाने यह कैसे हो गया और क्यों हो गया? शमीमा उदास हो गयी। वह कुछ भी कह नहीं पायी। उसकी आंखों से आंसू बह निकले।

'क्या बात हैं?'-सुले ने पूछा।

'कुछ नहीं।'-शमीमा का उत्तर।

'ज़रूर कुछ बात है। कहती क्यों नहीं?'-सुले ने प्यार भरे लहजे में कहा।

'कुछ नहीं। सोचती हूँ कि इस तरह मार-काट करने से आपको क्या मिलता है? आपकी जंग तो सेना के साथ है किन्तु बीच में निर्दोष लोग मर जाते हैं। वह भी तो हमारे अपने भाई हैं'-शमीमा ने कहा।

'आज़ादी हमेशा बलिदान मांगती है।' सुले ने समझाते हुए कहा।

'मगर आज़ादी मांगने से पहले समाज के हर किसी वर्ग की राय जानना ज़रूरी है।'-शमीमा ने कहा।

'मतलब?'-सुले का आश्चर्य।

'देखिए, हमारे पंडित और सिक्ख भाई जो शताब्दियों से यहाँ रह रहे हैं, आतंक और भय के कारण अपने ही प्रदेश के दूसरे क्षेत्र जम्मू जाकर वहाँ कैम्पों में सड़ रहे हैं। क्या ये इस तरह की आज़ादी चाहते हैं?'-शमीमा ने पूछा।

'अरी, हमारे प्रदेश में पंडित और सिक्ख कितने हैं? हमारी जनसंख्या का मात्र दो-चार प्रतिशत! जिस तरह की आज़ादी हम चाहेंगे, उसी तरह की आज़ादी वे भी चाहेंगे।'-सुले ने कहा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'आपकी यह गलतफहमी है। इनकी राय जाने बिना मुझे लगता है कि हम इस अभियान में सफल नहीं होंगे।'–शमीमा ने कहा।–'भारत के हिन्दुओं का कोई भी फैसला तब तक सार्थक नहीं होगा जब तक न किसी विषय पर वहाँ के मुसलमान, सिक्ख या ईसाई की राय न मिल पाए।'–शमीमा ने कहा।

'वह कैसे?'–सुले ने पूछा।

'वह इसलिए कि हम सब एक ही परिवार के सदस्य हैं चाहे हमारा धर्म कुछ भी क्यों न हो।'–शमीमा ने कहा।

'ओह आज तो तुम अफलातून बन गयी हो।'–सुले ने कहा।

'ऐसी बात नहीं है, मैं सच कहती हूँ। ज़रा आप ही सोचिए कि क्या मिला हमें इस अभियान को चलाने से? कुछ नहीं। हम तो रोज़ दर्जनों मरते हैं, हमारी अर्थव्यवस्था ठप्प होकर रह गयी है। आज़ादी का नाम जपकर हम बदमाशों के गुलाम बन गए हैं।'–शमीमा ने कड़क कर कहा।

'फिर तुम्हारी मंशा क्या है?'–सुले ने पूछा।

'हम पहले की तरह मेहनत-मज़दूरी करेंगे अपना पेट भरने के लिए। हमारी मेहनत का कोई अनुचित लाभ न उठाए। हम जिये तो सिर्फ अपने लिए।'–शमीमा ने कहा।

'मेरे दोस्त अशरफ की तरह।'–सुले ने कहा।

'हाँ, वही अशरफ। उसने इन बन्दूकों को छुआ तक नहीं। देखो, कैसे मज़े में दिन कट रहे हैं उसके। और हम हैं कि अकरम के गुलाम बने हैं। उसके हर आदेश का पालन करने पर मजबूर हैं।'–शमीमा ने कहा।

❑

गत् कई दिनों से शमीमा की बातें सुले को छू गयीं। किन्तु अब उसने बन्दूक चलाने, बम-विस्फोट करने, ग्रिनेड चलाने का प्रशिक्षण पाया था। अब तक उसके हाथों से कई निहत्थे लोग हताहत हो गए थे। इस तरह से उसने एक जल्लाद का पेशा अपना लिया जिसको वह कतई छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। वस्तुतः इससे उसने बहुत पैसा कमाया। इसके अलावा वह सीमा पार पाकिस्तान चार बार गया। अब तक वह हर एक 'आप्रेशन' में सफल रहा है। किन्तु आज बीवी की बातें सुनकर उसको लगा कि वह गहरी नींद से बेदार हो गया है। हां सच कहती है शमीमा। आज तक मैंने आज़ादी के लिए इतनी झड़पें कीं, हर एक क्षेत्र में कितनी तबाही मचायी। कितने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निर्दोष लोग मारे गए, कितने भयानक बम-विस्फोट किए, स्कूलों और पुलों को उड़ा दिया, कई बैंको को लूटा या दिन-दिहाड़े नर-नारियों का अपहरण किया, मंजे हुए राजनीतिज्ञों पर गोली चलाकर मौत की नींद सुला दिया, और पंडितों तथा सिक्खों को यहाँ से भागने पर मजबूर किया। क्या इससे हमारी 'कश्मीरियत' पर आंच नहीं आयी है? क्या यह सच नहीं कि बनाने में कई साल लगते है और बिगाड़ने में एक पल भी नहीं? तिस पर भी मेरी समझ में नहीं आता कि हम भारत-सरकार से क्या मांग रहे हैं! आज़ादी-नहीं। यह तो एक खोखला नारा है। हम कब के आज़ाद हुए हैं। पाकिस्तान-नहीं। जिस देश में बीमारी, भूख और जहालत हो, वह देश कश्मीरियों को नहीं चाहिए। तो फिर हम क्या चाहते हैं? हम किस लिए दिन-दहाड़े कत्लेआम करते हैं? नहीं, आज मैं अकरम से पूछकर ही रहूँगा। लेकिन उससे मैं नहीं पूछ सकता। मुझे पता है कि वह कटु-सत्य मानने के लिए तैयार नहीं होगा। बेकार में मेरी रोटी छीन लेगा। और न जाने मेरे ऊपर कौन से मुसीबतें खड़ी कर देगा। वह तो यही सोच रहा था कि दरवाज़े पर किसी ने नॉक किया।

दस्तक की आवज़ सुनते ही वह जान गया कि अकरम का बुलावा है। न जाने कौन सा कुकार्य करने का आदेश देगा! आज मुझे पता चला है कि जो कुछ भी मैंने किया वह छल है, भ्रम है, धोखाधड़ी है, निर्दोष लोगों के साथ अन्याय है। इससे हमें कुछ नहीं मिलेगा। कुछ नहीं। इसके साथ ही उसने दरवाज़ा खोला। यह अकरम था।

'एक ज़रूरी आप्रेशन पर जाना है सुले। नहीं तो सुरक्षा कर्मी हमारे अड्डों पर छापा मारेंगे।'-अकरम ने कहा।

'करना क्या है?'-सुले ने पूछा।

'हमें बम से पुल को उड़ाना है, नहीं तो सुरक्षाकर्मी हमारे उन अड्डों पर छापा मारेंगे जहाँ हमने सिला-सामान रखा है।'-अकरम ने विस्तार से कहा।

'कौन-सा पुल?'-सुले ने पूछा।

'जो उस नाले पर बना है, उसी को।'-अकरम ने कहा।

'मगर इस गांव के बसने वाले लोगों का क्या सोचा?'-सुले ने समझाते हुए कहा।

'क्यों? क्या बात है?'-अकरम 'फिरन' के बीच में से बन्दूक की नली निकालने लगा।

'मैं कहना चाहता हूँ कि यही एकमात्र पुल है जो हमारे गांव को शहर के साथ जोड़ता है। यदि इसको उड़ायेंगे तो बीमार इसी गांव में दम तोड़ेंगे, प्रसूति प्रसव-पीड़ा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से मर जायेगी और यदि गांव को आग लग जाए तो दमकल गाड़ियां कहाँ से उसको बुझाने आयेंगी?'–सुले ने एक बार फिर सविस्तार कहा।

अकरम ने सुले की ओर ध्यान से देखा। उसको आश्चर्य हुआ सुले की इन बातों को सुनकर। हमारा यह जंगजू जवान बदल गया है, मुझे तो ऐसा ही लगता है। यह सरकार का 'ऐजेंट' तो नहीं है? यह तो किसी भी वक्त हमारे विरुद्ध मुखबिरी कर सकता है। यदि ऐसी बात है तो इसे किसी तरह ठोक-पीट कर ठीक करना ही पड़ेगा। फिर भी पहले इसके दिल को टटोलना ही पड़ेगा। जुल्म करने से पहले यह जानना ज़रूरी है कि उसके दिल में क्या है।

'सुले, अब तक हम जिस तरह से लड़ रहे हैं, क्या वह सब व्यर्थ है?'–अकरम ने पूछा।

'बिल्कुल व्यर्थ है। हम व्यर्थ में खून-खराबा करते हैं!'–सूले का सपाट उत्तर।

'आज तुमको यह क्या हो गया है? जानते नहीं, हम आज़ादी के लिए लड़ रहे हैं। इसको प्राप्त करने के लिए ही हम मूसीबतों का सामना कर रहे हैं।'–अकरम ने कहा।

'आज़ादी...आज़ादी...आज़ादी... यह सुनकर तो हम गत् कई वर्षों से दबे हुए हैं आप जैसे लोगों की मेहरबानी से। मुझे लगता है कि यह हमारा खोखला नारा है। आप मुझे बताइए कि कश्मीर के अपने कौन से स्रोत हैं जिनके बल पर कश्मीरियों को आज़ादी मिल जाएगी। यहाँ की वह कौन सी चीज़ है जिसमें हम आत्मनिर्भर हैं। हमें तो हर कोई चीज़ बाहर से मंगवानी पड़ती है। आज़ादी तो वह देश मांगते हैं जो किसी हद तक जनता का पेट स्वयं पाल सकें। भला आप ही बताइए, हमारी इस घाटी में फल और फूल के सिवाय और क्या है! शेष हमारा सारा खाद्यान्न एवं अन्य ज़रूरत की चीज़े तो बाहर से ही आती हैं। हम किस लिए अपना कीमती समय मारा-मारी पर नष्ट करते हैं? किस लिए हम सीमा-पार के लोगों के इशारों पर नाचते हैं और किस लिए अपनी सुन्दर घाटी को तबाह करने पर उतारु हो गए हैं?'–सुले का ज़ोरदार भाषण।

'तुम्हारी यह जुर्रत और वह भी मेरे सामने। इसका मज़ा चखाऊँगा।'–अकरम चेतावनी देकर वहाँ से एकदम चल दिया।

'मज़ा चखाएगा साला! यह मुझे कुछ भी नहीं कर सकता। यदि उसके पास बन्दूक है तो मेरे पास भी है। वह मुझे कुछ नहीं कर सकता है।'–सुले ने अपने-आपसे कहा और इसी के साथ शमीमा ने कमरे में प्रवेश किया। कहा–'चल सुले! शाहनाज़

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की शादी में नहीं जाना है?'–शमीमा अपना तिल्लेदार 'फिरन' पहनी हुई, रेशम जैसे बालों को सजाती-संवारती हुई उसके पास आयी। सुले उसकी ओर एकटक देखता ही रह गया। वह अपने-आपसे कहने लगा कि शमीमा इतनी सुन्दर क्यों है? शादी के बाद तो उसके जिस्म पर एक नया निखार-सा आने लगा है। चलती है तो ऐसा लगता है कि डल-झील का साफ शफाफ पानी छोटी-छोटी लहरों में अंगड़ाइयां लेने लगता है। यदि वह कहीं जाएगी तो आंख से ओझल नहीं रह जाएगी....

'आएगा सुले मेरे साथ...'–शमीमा ने एक बार फिर पूछा।

'नहीं।'–सुले का उत्तर।

'क्यों?'–शमीमा का आश्चर्य।

'आज मुझे आखिरी बार लड़ना है।'–सुले ने कहा।

'लड़ना...लड़ना...लड़ना....। अब लड़ना बन्द करो। मुझे अब आपकी ज़रूरत है।'–शमीमा ने कहा।

'मुझे भी तुम्हारी ज़रूरत है।' सुले ने कहा।

'तो फिर लड़ना किससे?'–शमीमा ने पूछा।

'अकरम से।'–सुले ने कहा।

'आय हो, ऐसा न करना। उसके पास बन्दूक है।'–शमीमा ने घबराते हूए कहा।

'तो मेरे पास क्या लाठी है? मेरे पास भी बन्दूक है। अगर वह नहला है तो मैं भी दहला हूँ।'–सूले का सपाट उत्तर।

इतने में न जाने यह कैसे हो गया। गोलियां चलने लगीं। सुले ने गोलियों का जवाब गोली से दिया। शमीमा सहम गयी। वह झट से सीढ़ियों से नीचे उतरी किन्तु उसका दुर्भाग्य! किसी ने पीछे से उसकी गर्दन दबोच ली। उसकी आंखों में अंधेरा छा गया। बाद में जब उसने आंखें खोलीं तो अपने-आपको अकरम के पास पाया।

सुले से बदला लेने के लिए अकरम नीच से नीच कुकर्म करने पर उतारू हो गया था। बदला लेने और अपने हवस की आग बुझाने के लिए उसने शमीमा का अपरहण करवाया। इसी से सुले की जुबान बन्द हो जाएगी। क्या समझता है वह अपने-आपको! रुसतम का साला! उसने झट शमीमा को खींचकर अपने पास लाया और उसके संगेमरमरी शरीर पर हाथ फेरने लगा। वह चिल्ला उठी। पर उसने उसका मुंह एकदम बन्द किया।

अंत में वही हुआ जो होना था। अकरम के सामने समर्पण करने से पहले वह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतना ही कह सकी–'सुले को हम दोनों की लाश हवाले करना–मेरी और मेरे पेट में पलने वाले बच्चे की।'

❑

इधर तड़ातड़ गोलियां चलने से सुले ने उन सारे जंगजू-जनूनियों को मारा जो अकरम ने उसके मारने के लिए भेजे थे। अब वह सिर्फ शमीमा की तलाश में फिरता रहा। गांव में यह खबर आग की तरह फैल गयी। सब एकदम जान गए कि यह किसकी साजिश हो सकती है। किन्तु सभी की जुबान बन्द थी। दूसरे दिन ज्यों ही सुले गांव की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए गया तो अचानक उसकी नज़र शमीमा पर पड़ी जो अर्ध–मृतावस्था में पेड़ की डाल से बंधी हुई थी। वह कुछ नहीं बोल पा रही थी। सुले ने उसको रस्सी के कसाव से आज़ाद किया, तत्पश्चात् उसको अपनी दोनों बाहों में भरकर कुछ क्षण के लिए अपने बदन में गरमी–सी महसूस की। बाद में उसने उसकी ओर देखा। शमीमा ने भी उसकी ओर देखा और कहा–'अकरम।' बस इस एक शब्द पर ही वह अटक गयी और हमेशा के लिए आंखें बन्द कर दी! अलविदा!

यह देख सुले की आंखों से आंसुओं की धारा शमीमा के शव के गाल पर गिरी और इस अवस्था में जब वह कब्रिस्तान पहुँचा तो उसने मुल्ला से कहा–यह एक लाश नहीं बल्कि दो लाशें हैं–शमीमा की और उसके पेट में मेरे बच्चे की!

✠ ✠ ✠

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्ते क्यों झर जाते हैं?

हर वर्ष यहाँ चार मौसम लगभग तीन मास का अंतराल छोड़कर एक-के-बाद एक नया संदेश लेकर आते हैं-भागते हुए समय के दामन को थामकर! हर मौसम की यहाँ अपनी रंगीनी है, अपना निखार है। यहाँ सब कुछ होता है अपने मौसम में और वह भी अपने नियत समय पर। खेत-खलिहान में हल जोतना, बीज बोना, फलदार पेड़ों पर शगूफे खिलना, फल लगना, पनीरी लगाना, निराई करना, धान बोना, और गेहूँ की बालियां आना, धान पककर तैयार होना, इसको घास के साथ काटना आदि तो मौसमों के आगमन के साथ ही शुरु हो जाता है और यही वे मौसम हैं जो हमें सर्दी की ठिठुरन से कंपाते हैं। गर्मी की जलन से जलाते हैं, बरसात से हमारे जल-स्रोत जलमग्न करते हैं और बर्फ की तहों से हमारे पहाड़ों की चोटियों से लेकर खुले मैदान तक सब कुछ संगेमरमरी बनाते हैं। इस घाटी की प्रकृति का तो यही नियम है। किन्तु उस दिन मुझे आश्चर्य हुआ उस पेड़ को देखकर!

हाँ, यह वही पेड़ है जो पिछले कई वर्षों से रामजी के सहन में खड़ा है। यूं तो प्रतिवर्ष बसंत में खिलता है। इसकी सूखी टहनियों में एक नई जान आती है। इसमें कोंपलें फूटती हैं, पत्ते खिलते हैं। पिछले कई वर्षों से इसकी टहनियाँ भारी-भरकम हो गई हैं। इन पर कुछ छोटी-छोटी टहनियां खिलकर फूटी हैं सर-सब्ज़ पत्तों के साथ! गर्मियों म इसकी छाया के नीचे घर के सभी सदस्य आराम से बैठते हैं। इसके नीचे हवा का रुण-झुनी स्वर सुनकर आनंदमय होते हैं और प्रातः सायं इस पर बैठे पक्षियों का कलरव तो इंद्रलोक में बजाया हुआ साज़ीना-सा लगता है। हर वर्ष अन्य पेड़ों की तरह हेमंत में इसके पत्ते झड़ जाते हैं और वह भी शनैःशनै! शीतकाल में यह बिल्कुल ठंठू हो जाता है। किन्तु इस वर्ष इसको यह क्या हो गया है? इसके पत्ते झड़ गए और वह भी वसंत में। यह तो बिल्कुल पहले की तरह नंगा हो गया है। हाँ, इसकी एक छोटी-सी टहनी बच गई है जिस पर अब भी पत्ते लगे हैं-सर-सब्ज़ किन्तु छोटे-छोटे!

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यों तो घर के सभी सदस्यों को इस पेड़ के साथ लगाव है, तथा इसको गांव का देवता या रक्षक के रूप में पूजते हैं। इसके मूल पर सुबह-सवेरे पानी देना, इसकी पूजा करना तो इनका नित्य-नियम बन गया है। इनको कोई मुसीबत आ जाए या घाटी पर किसी तरह के संकट के साए मंडराए, उस समय ये इसी पेड़ की शरण में आ जाते हैं। अपना-अपना विश्वास लेकर सब आगे की ओर बढ़ते हैं और घाटी में बसने वाले लोगों की यह आज की बात नहीं बल्कि हज़ारों वर्षों से इस बात पर दृढ़ रहकर अपने दिन येन-केन-प्रकारेण व्यतीत करने में व्यस्त हैं। किन्तु इस पेड़ के पत्ते तो इसकी जान हैं और यदि पत्ते ही न रहेंगे तो यह देखने में भूताकार लगेगा। आज तक मैंने उसकी इस तरह की हालत नहीं देखी। मैं भी तो अस्सी पार कर चुका हूँ किन्तु अपनी सारी उम्र इसको अन्य पेड़ों की तरह खिलता हुआ देखा है। इसके पत्ते तो मैंने कभी समय से पहले गिरते नहीं देखे हैं। आज यह इसको क्या हो गया है? लगता है कि हमारे इस गांव पर कोई-न-कोई संकट आने वाला है। क्या पता आंधी आएगी या बाढ़ आएगी। फिर भी इस समय घाटी के हालात खराब हैं। इस गाँव में हम पंडितों के दस-बारह घर ही हैं। शेष सारे पंडित पलायन कर न जाने दर-दर कहाँ भटक रहे हैं-अपनी जायदाद छोड़कर। उस समय हम भी भाग गए होते किन्तु यह इस पेड़ की कृपा थी कि हम किसी के झांसे में नहीं आए। हमने इन भगोड़ों को साफ कह दिया कि हम इस गांव के हैं और हमें इसी गांव में मरना है। हमें कोई नही मारेगा। हम किसी पर मारने का संदेह नहीं करते। उस समय हमारे दिल में यही प्रेरणा-ज्योत रज़ाक ने जलाई और इसी के सहारे हम अपने गाँव में बैठे हैं। किन्तु तुर्रा यह है कि रज़ाक ने हमें यहीं बैठने को कहा मगर वह खुद आठ-दस वर्षों से गायब है। रामजी बट्ट अपने कमरे की खिड़की से बाहर खुले में खड़े पेड़ की ओर देखकर और सोच-सोच कर बियाबान में भटक गए।

हाँ, यह उसी वर्ष की बात है कि रज़ाक इस गांव से गायब हो गया जब पंडित यहाँ से भागने लगे। पता नहीं वह कहाँ गया, यह तो आज भी मालूम नहीं। किन्तु गायब होने से पहले उसने नूरी से शादी की! नूरी तो इसी गांव की लड़की है। किसी ज़माने में उसका पिता यहाँ के अमीरज़ादों में माना जाता था। मगर आजकल उसमें वह बात नहीं थी। यहाँ आतंकवादी ही अब अमीरज़ादा माना जाता था। आतंकवाद ने सभी की कमर तोड़ दी है। बाप की पतली आर्थिक हालत को देखकर जवान नूरी ने रज़ाक के साथ ही जीने-मरने की कसमें खाई। इस पर भी जब से उसने पठानी सलवार-कमीज़ पहनना शुरू किया तो इस वेश में वह और भी निखर उठा। छह फीट का यह गबरू जवान मोहल्ले की औरतें उसे गली से निकलते देख सिर पर बंदे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्कार्फ संभालतीं, नव-यौवनाएं पर्दे उठा-उठाकर झांकतीं, पर रज़ाक के मन में नूरी ही बसी थी और उसके सपनों की किरणें नूरी के आंगन में ही आ कर छनती थीं। किन्तु सब कुछ हो गया अपने समय पर, शादी हो गई। बारात आ गई दोनों ने कुछ दिन एक-साथ काटे किन्तु एक दिन रज़ाक गायब हो गया। यह तो किसी को पता नहीं चला। अभी तो नूरी के हाथों की मेंहदी भी छूटी नहीं थी कि इस तरह का बिछोह! हर रोज़ उसका मन कई तरह की आशंकाओं से झुलस रहा था। दाईं आंख फड़क रही थी। आखिर उसकी डबडबायी आंखों से ओझल होता हुआ रज़ाक कब तक वापस आएगा...किन्तु वापस आने से पहले मैं यह जानना चाहती हूँ कि वह गया कहाँ है? और वह भी मुझसे पूछे बिना। कहते हैं कि लोग शहर में गायब होते हैं किन्तु इस छोटे से गांव में कौन कहाँ जाएगा? यदि कहीं जाएगा भी तो दूसरे दिन वापस आएगा। क्या पता कहाँ है इस समय? यह तो खुदा ही जानता है, मगर मेरे लिए उसके बिना यह दुनिया मज़ार के सिवाय कुछ नहीं है-यह सोचते ही एक दिन नूरी ने झुकी हुई आंखों से टपकते हुए आंसुओं की परवाह न करते हुए घर से भागने की कोशिश की, किन्तु...किन्तु रामजी ने उसे रोका। उसको फिर से घर जाने की सलाह दी। उसको यह कहकर समझाया कि इस छोटे से गांव में हम पंडितों के कुछ परिवार रज़ाक की प्रेरणा से बैठे हैं और वह भी उसकी अनुपस्थिति में, तो क्या हम तुमको भागने को प्रेरित करेंगे? ऐसा कभी नहीं होगा। तुमको यहाँ रहना है और यहीं रहना है, भले ही कुछ भी हो जाए!

नूरी ने रामजी की बात ध्यान से सुनी और वापस घर की ओर प्रयाण किया। सच कहता है यह पंडित! यदि जाऊंगी तो कहाँ? चलिए, मैंने रज़ाक को खुदा के सुपुर्द किया है। इसके बाद स्कार्फ बांधकर हाथ उठाकर ऊपरवाले से अपने सरताज की लंबी उम्र की दुआ मांगी। वह जानती थी कि उसको भी उसकी याद आती होगी। वह तो यहाँ घर में बैठी है अपनों के बीच और वह...यह सोचते ही उसका दिल धक्-धक् करने लगा, खुदा उसकी खैर करे!

काली-स्याह रात्रि के बाद रोज़ की तरह सुबह का सूरज पहाड़ों के ऊपर से निकलकर अपनी पीली-पीली धूप से पेड़ों की सर-सब्ज़ पत्तियों पर ऊष्मा बरसाने लगा। यह क्रम चलता रहा और इसी के साथ ये दस वर्ष बीत गए। किन्तु आज नूरी को लगा कि सूरज पहाड़ों के ऊपर से निकल कर साफ व स्वच्छ धूप से पेड़, फूल-पत्तों व अन्य वनस्पतियों का अभिवादन कर रहा है। उसकी आशा रोशन हो गई। दूर से उसको गाड़ी की आवाज़ सुनाई दी। शायद इसमें रज़ाक होगा। वही लौटा है अपने घर! इस समय उसको लगा कि सुबह का सूरज एकाएक रक्तिम हो, दहक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहा है। रज़ाक का वापस आना तो कोई छोटी-सी घटना नहीं। वैसे कहाँ जाता मेरा सरताज मुझे इस तरह छोड़कर, वह तो ज़रूर वापस आ जाता और उसको वापस आना था। इस समय उसकी चमकती आंखें, खिलता रंग, महकते बाल, चुलबुले बोल जो कल की कहानी होकर रह गए थे, फिर से वास्तविकता का रूप ले लिया और वह एक लंबी दौड़ लगाकर गाड़ी के सामने गई। उसके साथ ही अपनी अम्मी, राहती, रहमाना और पंडितजी को भी अपने साथ बुलाया। ये सारे उसके पीछे-पीछे गए और ज्यों ही गाड़ी क़ा दरवाज़ा खुला तो अंदर से मुंह पर मास्क लगाए तीन बंदूकधारियों ने बाहर आकर नूरी को ताबूत सौंपा और इसके बाद गाड़ी में कहीं फरार हो गए। ताबूत को देखकर सब जान बए कि इसमें किसका हाथ हो सकता है! सभी ने छाती पीटी और आवेश में आकर इनके मुंह से मुर्दाबाद निकल गया। यह किसकी ओर संकेत था। सब जानते थे। इस एक शब्द में रोष की चिंगारियां फूटती थीं। सब तो अंदर से यही कहते कि छल-कपट के ये दरिंदे आज चुप्पी का मुखौटा क्यों पहने हैं? इनके इरादे नेक नहीं। हाँ, यह सच है।

इतने में पुलिसकर्मी आ गए और ताबूत को अपने अधिकार में कर लिया किन्तु रामजी के इस आग्रह पर कि ताबूत खोल दें और नूरी को अपने पति के शव का अंतिम दीदार करने दें। लोगों ने पहले नूरी को जो इस समय अर्धचेतना में थी, ताबूत के सामने लाया, तत्पश्चात् इसका ढक्कन खोला। लेकिन नहीं, इसमें रज़ाक का शव नहीं था, उसके केवल कुछ टुकड़े थे। कुछ उंगलियां, कुछ बाल, एक टांग, शायद सिर का भी कुछ हिस्सा-यह तो उसका मर्द रज़ाक नहीं हो सकता। किन्तु इन्हीं के एक टुकडे पर रज़ाक लिखा था तथा दूसरे पर एच.एम.।

शव के टुकड़ों को कब्रिस्तान में दफना कर लोग तो दुखी थे ही मगर वे करते भी क्या? बदला लेते तो किस से? बंदूक ने सभी की ज़ुबान पर ताले लगाए थे। आज सब जान गए कि इस गांव में हवा का रुख किस ओर है। मगर रामजी सभी को इस दुखद घटना का ब्योरा इस तरह देकर कहते कि अभी तक मुझे विश्वास नहीं आ रहा है कि कश्मीर के हालात इतने खराब हुए हैं। किन्तु आज मैं असली बात की तह तक पहुंच गया हूँ। वस्तुत: हालात तो खराब नहीं है किन्तु इनको जानबूझकर किसी की शह पर खराब किया जा रहा है। मुझे नहीं लगता कि इनको इस कत्लेआम से कुछ हाथ लगेगा। ये तो झूठी राजनीति से प्रेरित चाल है। ये वही लोग हैं जो हमारी जन्नत को कब्रिस्तान बनाना चाहते हैं। दो वक्त की रोटी, पहनने के लिए कपड़ा, रहने के लिए मकान और आने वाली पीढ़ी के लिए विकास के रास्ते, यही तो हैं इंसान की मूल आवश्यकताएं। हमें तो ये सब प्राप्त हैं। किसी तरह की कमी नहीं है,

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर क्यों ये अपने ही वतन को किसी की शह पर नापाक करते हैं। बंदूक की संस्कृति ने ही यहाँ अत्याचार के शासन को संवृद्धि दी है। कहाँ जाएंगे निरीह जन जिनके मानवाधिकार व सुरक्षा सब बलि पर चढ़ी जा रही है। मानव-मूल्यों को इन्होंने खोटे सिक्कों के बराबर समझा है। घर से यदि निकल गया तो पता नहीं वापस आऊंगा भी या नहीं। इसी को कहते हैं कलियुग। मगर मुझे पूरी आशा है कि इस समय के ये आतताई एक दिन ज़रूर पछताएंगे अपनी करनी को भुगतेंगे। किन्तु इस समय ज़माना इनका है। सीमा-पार से मिलने वाले इशारों पर कत्लेआम करने का, नग्न-नृत्य करने का हौसला इनमें है। हमें तो इन्होंने बेबस और लाचार बनाकर रख दिया है। हम यह सब मूक बनकर देखने पर विवश हैं।-यह सब सोचकर रामजी घर की ओर चल दिया। उसके घर में दस-बारह सदस्य थे। उनमें बड़ा तो वही है। उसने रेडियो खोला। यहाँ समाचार में नूरी के पति रज़ाक की निर्मम हत्या की खबर थी। यह सुनते ही उसने रेडियो बंद किया। रज़ाक की मृत्यु-घटना उसके लिए असह्य थी? क्या पता किन हालात में आतताइयों ने उसको मारा। मगर समाचार है कि उसने हमें बचाने के लिए अपना बलिदान दिया है किन्तु अब ये मर गए और हमारे ज़िंदा रहने की क्या गारंटी है? पुलिस चौकी तो यहाँ से तीन किलोमीटर दूर है। आस-पास तो सब खुला है। ये तो हमारा किसी भी वक्त कत्ल कर सकते हैं। मोहल्ले वाले हमारे बचाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते हैं। इनके जीने के लाले खुद पड़ गए हैं और ये हमें किस तरह बचा सकते हैं! इस समय सभी की ज़ुबान पर 'या रब, रहम कर' है। चलिए, मैं भी सोचता हूँ कि समय का रुख किस ओर जाएगा।

किन्तु समय का कालचक्र रुका हुआ था। शबे-क़द्र की पावन रात्रि थी। आस-पास के लोग मस्जिद में नमाज़ के लिए जमा हो रहे थे। लाउडस्पीकर से अज़ान निस्तब्धता को बेध रही थी और रामजी भी जगत-कल्याण के लिए 'इंद्राखी' पढ़ने लगे। इस बीच किसी ने उसके सहन के दरवाज़े पर दस्तक दी। उसने सोचा कि यह अब्दुल होगा। मस्जिद जाने से पहले वह अपने घर की चाबी हमारे हवाले करता है। फिर भी इस वक्त कौआ या चिड़िया भी उसके कमरे से उड़ती तो वह डर जाता था। आतंकित हो, उसने दरवाज़ा खोला किन्तु वह अब्दुल नहीं था बल्कि पुलिस वर्दी पहने अस्त्र-शस्त्र लिए एक दर्जन से अधिक बंदूकधारी थे। उन्होंने सहन में प्रवेश करते ही गोलियां बरसानी शुरू कीं। रामजी ने दरवाज़े की ओट में अपने को छिपाया। इसके बाद बंदूकधारी मकान के अंदर आए और इन्होंने घर के सभी सदस्यों को गोलियों से छलनी कर दिया। इसके बाद एक बच्चे के शव को जलाया। सहन में अंधेरा था, इसलिए रामजी दिखाई न दिए। मगर उसने यह कत्लेआम अपनी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आंखों से देखा। कुछ ही पल में सभी की अंतिम सांसें खत्म हो गईं। सभी का मुस्कान भरा चेहरा खून से लथ-पथ हो गया। मकान के अंदर -बाहर सब जगह खून ही खून था। बस खून और उसके सिवाय कुछ नहीं।

मस्जिद से जब लोग वापस आने लगे तो पहाड़ की ओट से सूर्य की किरणें फूट चुकी थीं। ज्यों ही इन्होंने यह सब देखा तो वे क्रंदन करने लगे। बिखरी लाशों को देखकर, इनके साथ बरसों का लगाव मानों गुब्बारे में सुई चुभ गई। लाशों को देखकर किसी ने कहा, "अरे, इनमें तो रामजी नहीं हैं।"

"मैं अभी ज़िंदा हूँ", रामजी ने ओखली के पीछे से अपना सिर उठाकर कहा। यह सुनते ही गुलाम अहमद ने उसके पास जाकर सीने से लगाया। उसकी आँखों से आँसू बह निकले। इस बीच गांव की स्त्रियां क्रंदन करने लगीं। रामजी यह सब बुत की तरह देखता रहा। आज तक अपने परिवार के सदस्य उसको पेड़ की शाखाओं के समान लगते थे किन्तु आज उनके शव इसके सामने सूखी हुई डालियों के समान लगते थे। इस बीच गुलाम अहमद ने आंसू पोछ कर पूछा, "रामा! यह किस तरह हुआ?"

"जिस तरह हम सभी ने सारी उम्र कल्पना भी न की हो"- रामजी का स्पष्ट उत्तर। सहन में शव कतार में रखे हुए थे। हर कोई जानना चाहता था कि यह क्यों हो गया, कैसे हो गया? इतने में लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई। पुलिस, अर्ध-सैनिक बल एवं सरकारी कर्मचारी भी इनमें शामिल हो गये। प्रेसवालों का कुछ मत पूछिए। वे रामजी से एक-के बाद एक सवाल पूछने लगे किन्तु उसने किसी एक का भी उत्तर नहीं दिया। सब सवालों का उसके पास एक ही उत्तर था कि आज मैं बात की तह तक पहुँच गया। आज मैं जान गया कि सौ वर्ष पुराने भारी-भरकम पेड़ की शाखायें बसंत में ही क्यों सूख गई। उनके सर-सब्ज़ पत्ते समय से पहले क्यों मुरझा कर झड़ गए। सिर्फ एक डाली बच गई है जिसमें जान है, इसके पत्ते गिरे नहीं हैं। दरअसल ये होना था। आगे भी न जाने कितनी बार होगा। संग्रामपुर, गूल, दुधरहामा, वंदहामा तथा प्राणकोट के कत्लेआम और करगिल का युद्ध कितनी बार दोहराया जाएगा। यह तो भगवान ही जानता है। तिस पर भी इस सारे प्रदेश में कोई घर ऐसा नहीं बचा है, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान का, जहाँ मौत के ठंडे साये न पड़े हों।

इस बीच कई पुलिसकर्मी आ गए और इन्होंने लाशों को उठाना चाहा किन्तु रामजी ने उनको यह करने से रोका। "खबरदार! इनको हाथ नहीं लगाना। मुझे इस वक्त कुछ नहीं चाहिए। मुझे सिर्फ इनके दाह-संस्कार के लिए लकड़ी चाहिए!"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"इसीलिए तो इनको उठाना चाहते हैं। दाह-संस्कार तो श्मशान-घाट में विधिपूर्वक किया जाएगा।"

"नहीं, इनका दाह-संस्कार शमशान-घाट में नहीं बल्कि इस पेड़ के नीचे किया जाएगा। अभी तो इस पेड़ की एक टहनी में जान है" रामजी के स्पष्ट शब्द!

"क्यों?"...पुलिसकर्मी की उत्सुकता।

"क्योंकि पेड़ की जान इन शवों में है। इनका दाह-संस्कार इसके नीचे होगा। ये इसके नीचे जल जाएंगे। इनकी जली हुई काया से मिलने वाला धुआं एक प्रकार की खाद बनकर पेड़ की डालियों को पहले की तरह हरा कर देगा। इन पर पत्ते खिलेंगे और झड़ने का नाम तक नहीं लेंगे। एक नई पीढ़ी का उदय होगा। मुझे सिर्फ लकड़ी चाहिए। हाँ, लकड़ी!"

वही हुआ जो रामजी ने कहा था। उसने जले हुए शवों की राख पेड़ के मूल में दबा दी। इनका दसवां भी अपने ही गांव में किया। इसके बाद वह भागकर जम्मू आए किन्तु अकेले नही रज़ाक की अमानत नूरी के साथ!

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक और बम-विस्फोट

पुरानी मण्डी! मंदिरों के शहर जम्मू का एक भीड़ भरा एवं व्यस्त बाज़ार! पहले जब यहाँ शाम के साये में, उग्रवादियों द्वारा भयंकर बम-विस्फोट किया गया तो इससे सारा शहर हिलकर रह गया। राहगीरों में खलबली मच गयी। देखते ही देखते धक्कमपेल शुरु हो गयी। घायलों को छोड़िए, मृतकों के अंग मटरदाने की तरह इधर-उधर बिखर गए, किन्तु यह ककाजी का सौभागय था कि वह बच गया। मगर भाग्य की विडम्बना देखिए कि उसी सप्ताह उग्रवादियों ने ककाजी के आफिस के सामने एक और शक्तिशाली बम फोड़ा, जिससे इसकी सारी खिड़कियां टूट गयीं, शीशे चकनाचूर हो गए और आस-पास के सारे भवन इस तरह हिल गए मानो एक भयंकर भूचाल आ गया हो। ककाजी के हाथ-पांव सुन्न होकर रह गए और वह देखते ही बेहोश हो गये। उनको तत्काल उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती किया गया। कुछ दिनों के बाद ही उनको अस्पताल से छुट्टी मिली।

मगर इसका कदापि यह मतलब नहीं था कि वह पूरी तरह स्वस्थ था। ककाजी प्राय: सबों से यही कहता-'पहले ऐसा महसूस होता है कि जैसे सीने के अन्दर कोई धान कूट रहा है; इसके बाद सिरदर्द। साथ ही बेचैनी भी बढ़नी शुरु हो जाती है। शरीर में इतनी कमज़ोरी आती है कि उठना तक मुश्किल-सा हो जाता है।-स्वयं ककाजी भी कह नहीं पा सकते कि एकदम उनको यह क्या हो गया।

उसके शरीर पर न कोई ज़ख्म था, न ही चोट कि इसकी पट्टी की जाए। यह तो रिसता हुआ ज़ख्म भी नहीं था कि चीर-फाड़ करके इसकी पीक निकाली जाए। उस समय यदि कोई उसकी ओर ध्यान से देखता तो उसको यही लगता कि उसका दिल अभी उसके सीने से उछलकर बाहर निकलेगा क्योंकि यह इसके अन्दर बुरी तरह दमाली करता था। उस समय उसकी छटपटाहट देखी नहीं जाती। वह तो सभी से यही पूछता कि मेरा दिल एका एक रोग ग्रस्त क्यों हो गया? जबकि मैं कभी दिल का खोटा नहीं था। मुझमें तो दिल-दरिया ठठें मारकर बह रहा था। मैंने तो सभी को दिल दिया किन्तु आज मैं इस तरह दिल-ख्स्ता क्यों हो गया?'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ककाजी की आंखों से आंसू बह निकले। यह देख ऊषा उसके सामने आयी और साड़ी के पल्लू से आंसू पोंछकर कहने लगीं–'आप क्यों इस तरह हिम्मत हारते हैं? अभी हमारे भाग्य में न जाने क्या लिखा है। श्रीनगर से यहाँ भागकर जान बचाने के लिए आए किन्तु यहाँ भी वही सिलसिला जारी है। अब हिम्मत से काम लो। डॉक्टर साहब तो 'चैक-अप' करेंगे। भाई तो उनको लेने गए हैं।'

अस्पताल की वापसी पर इस तरह के विकार उसको कई बार हुए किन्तु उसने कभी हिम्मत नहीं हारी। कई बार डॉक्टर भी आए। कई तरह की गोलियां भी लीं। कुछ दिनों के लिए रोग से छुटकारा पाने के बाद वही होता जो आज उसको हो गया है। वस्तुतः अब यह रोग उसका पीछा छोड़ता ही नहीं। अब यह सिलसिला कई महीनों से जारी है।

लगता है कि यह रोग नहीं बल्कि शेर है जो शिकार करने के बाद सोता है। कुछ दिनों के बाद जब शेर को फिर भूख लगती है तो तेज़ दौड़ लगाकर वह नए शिकार को पंजों में जकड़ लेता है। इसके बाद उसको काटकर खून पीता है और मज़े में नर्म-नर्म मांस खाता है।

ककाजी की इतनी ही हसरत थी कि वह दूसरों के सामने अपने इस रोग की अभिव्यक्ति कर सकें। वह ऊषा को भी कह नहीं पा सकता कि उसके अन्दर क्या कुछ हो रहा है। इसी चिन्ता के मारे वह अन्दर से खोखला होता जा रहा है।

लंबी आह भरकर बेबस होने की स्थिति में उसने कहा–'शायद अब वह दिन मेरे करीब आने वाला है।'

'ऐसा मत कहिए। इसको अप-शकुन कहते हैं। दिल के पक्के बनिए। यही पक्का दिल लेकर हम यहाँ आए हैं। मैं तो पूरे विश्वास के साथ कहती हूँ कि आप ठीक हो जाओगे। डॉक्टर साहब भी यही कहते हैं।'–ऊषा ने तसल्ली देते हुए कहा।

किसी को तसल्ली देने के लिए ऐसे ही नपे-तुले शब्दों का प्रयोग किया जाता है, नहीं तो ऊषा को पता था कि बम फटने के वहम से इसके शरीर का कौन सा संवेदनशील अंग रोगग्रस्त हो गया है। वह तो इसलिए चिंतित थीं कि कहीं यह रोग उसके जीवन का अंतिम रोग साबित न हो जाए। यदि इस घड़ी में ऊषा इसको सांत्वना के दो शब्द न कहे तो और कौन कहेगा?

मगर उसको इस रोग से मुक्ति नहीं मिल सकती। यह तो एक तुक है कि बहता हुआ पानी अपने मूल स्रोत से नहीं मिल सकता। यह तो अब इसका अंतिम रोग साबित होगा। इस रोग ने अब इसको अन्दर से ही खोखला कर रखा है। यह ककाजी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से ज़्यादा ऊषा ही जानती थीं। मगर इसका आभास वह उसके सामने होने नहीं देती। यदि वह ऐसा करती तो ककाजी कब का हतोत्साहित होता।

ककाजी बचपन से ही डरपोक था। उसका दिल हर समय अशांत रहता था। शादी हुए अब उसके बीस वर्ष हुए। इस कालावधि में दोनों का एक-साथ रहना, खाना-पीना और एक पल भी एक-दूसरे से अलग न रहना उनके जीवन का नित्य-नियम बन गया था। इस तरह से ये दो शरीर एक सांस बन गए थे। ऊषा तो ककाजी की नस-नस पहचानती थीं। वह यह भी जानती थीं कि ककाजी को मेरे झूठे तसल्ली देने से ज़िंदा रहने की एक किरण-सी दिखाई देती है, किन्तु उसके दिमाग़ में यही एक हसरत कचोट रही थी कि वह शादी करते ही माँ क्यों नहीं बनीं। ठोबा ने इतनी देर बाद उसी कोख से जन्म क्यों ले लिया! अब तो उसके बाल भी पक गए हैं। किन्तु ठोबा अभी पांचवें वर्ष में ही कदम बढ़ा रहा है। यदि ककाजी दस वर्ष और ज़िंदा रहेगा तभी उसका भविष्य सुधर-संभल सकता है। किन्तु जिस रोग ने उस पर हमला बोल दिया है, उससे वह और दस वर्ष तक ज़िंदा नहीं रह सकता है। मुझे तो किसी पर भी विश्वास नहीं। देवर तो है मेरा। मगर इसके मरने के बाद वह मेरी कौन-सी रखवाली कर सकता है! शायद उसको भी मुझे ही पालना पड़ेगा।

ककाजी अच्छी तरह से अपनी आजीविका कमाता है। दस वर्षों से बैंक मनेजर के पद पर आसीन है। उसका वेतन आठ-दस हज़ार रुपए मासिक है। इसमें से वह आधा जमा करता है। उसने बीमा भी किया है। हाल में बंगला भी बनाया है। उसका श्रीनगर का आलीशान मकान जेहादी-जनूनियों ने कब का जला कर भस्म कर दिया। दिल्ली में भी फ्लैट लिया है। यदि मरेगा भी तो ऊषा को भीख नहीं मांगनी पड़ेगी। वह तो राज करेगी और अपने साथ दस आदमियों को भी खिला सकती है। फिर भी, जिसको मरना है, वही मरेगा।

किन्तु अभी यह घड़ी उसके मरने की नहीं है। उसको तो अभी ज़िंदा रहना है। ऊषा ने ये बीस वर्ष दो शरीर एक प्राण बनकर बिताए हैं, किसी तरह की चिंता किए बिना। मगर अब उसको बचाना उसके बस की बात नहीं। यह तो अब ऊपरवाला ही जानता है कि वह बच सकता है अथवा नहीं। यदि सच ही उसकी मृत्यु हो जाएगी तो ऊषा पर वज्र गिरेगा। उसकी बसी-बसाई दुनिया देखते ही देखते उजड़ जाएगी जिसको फिर से सजाने संवारने में समय लगेगा। वह तो उसी के साथ मरना चाहती है किन्तु नहीं, जब तक उसकी सांस चलती है तब तक वह जीवित रहना चाहती है। अपने लिए नहीं, अपने एकमात्र बेटे ठोबा के लिए।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊषा उठी किन्तु ककाजी ने उसकी साड़ी का पल्लू पकड़कर पूछा–'डॉक्टर साहब अभी नहीं आए?'

'वह तो आने वाले हैं।'–ऊषा का छोटा सा उत्तर।

इतने में किसी के सीड़ियाँ चढ़ने की आहट सुनाई दी। ऊषा झट उठी और कमरे में बिखरी पड़ी चीज़ों को समेटने लगी। उसने ककाजी से कहा–'शायद डॉक्टर साहब आ गए होंगे।'

'कहाँ है?'–ककाजी का उतावलापन।

ककाजी ने एक लम्बी आह भरी। इसके बाद निराश होकर कहने लगा–'मेरा रोग अब कोई भी डॉक्टर दूर नहीं कर सकता। मुझे पता है कि यह मुझे 'कामपोज़' की गोली लेने को कहेगा। इसके अतिरिक्त उसके पास तो कोई दवा है नहीं'।

'तो भी इससे कुछ वक्त के लिए आपको आराम मिलता है।'–ऊषा ने कहा।

'अरी पगली क्या बकती हो? रोग तो दूर नहीं हो सकता। इससे तो रोग कुछ वक्त के लिए दब जाता है।'–ककाजी ने उदास होकर कहा।

ऊषा ने कुर्सी उठाई और पलंग के सामने रखी। डॉक्टर साहब ने कमरे में प्रवेश किया। उसके साथ रूपजी भी थे–ककाजी का भाई!

ककाजी कुछ नहीं बोले। सिर्फ डॉक्टर साहब की ओर एकटक देखने लगे।

इतने में ऊषा बोलने पर मजबूर हो गयी–बम के फटने के बाद तो इनकी हालत बहुत खराब है। शरीर पर कोई चोट नहीं लगी है मगर न जाने इसका दिल ज़ोर-ज़ोर से क्यों धड़कता है? सारा शरीर पसीने से तर हो जाता है। इसके बाद हद से ज़्यादा कमज़ोरी आती है।'

डॉक्टर साहब ने भौहें सिकोड़ीं। इसके बाद रोगी के शरीर की जांच की। कहा–'हमने सोचा था कि घर पर आराम मिलने से इनका रोग शनै-शनै दूर हो जाएगा। मगर नहीं, यह बढ़ता ही जा रहा है। अब यह दवा की गोलियां लेने से ठीक नहीं होगा। बम फटने से इनके शरीर के संवेदनशील अंग में बुरी खराबी आ गयी है और वह है दिल। उस समय यह खूब धड़का है और अब इसको करार में लाना चीर-फाड़ से ही हो सकता है। इनको अब अस्पताल में भर्ती करना ही पड़ेगा। इसके बाद आप्रेशन!'

ककाजी ने आंखें खोलीं और आह भरकर कहा–'क्या पता इसके बाद मैं ज़िन्दा रहूँगा'।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'यह सब तो पहले ऊपरवाले पर छोड़ना, तत्पश्चात् विशेषज्ञों पर। तिस पर भी इसके लिए दिल हारने की कोई ज़रूरत नहीं। –डॉक्टर ने कहा।

बात को ज़्यादा तूल न मिले, ऊषा ने डॉक्टर साहब से पूछा- इसके लिये हमें क्या करना है।'

'इसके लिए सारा इन्तज़ाम अस्पताल में ही होगा। मगर एक बात ज़रूर है। आप्रेशन में खून की ज़रूरत पड़ेगी। रक्तदान करने वाला कोई होना चाहिए।'–डॉक्टर ने कहा।

यह सुनकर ककाजी ने ऊषा की ओर देखा। रूपजी दोनों की ओर एकटक देखने लगे।

डॉक्टर नुस्खा लिखकर वहाँ से चल दिया। 'कांपोज़' की गोली लेकर ककाजी को नींद लगी। ऊषा उसके सिरहाने बैठ गयी। उसने उनके माथे पर हाथ रखा। इसके साथ ही एक लम्बी आह भरी।

ऊषा जानती थीं कि 'कांपोज़' की गोली लेने से ककाजी को पल में ही नींद आएगी। उसको इस दुनिया का पता ही नहीं रहेगा। नींद से जगने के बाद ही वह खाना खाएगा। इसके बाद एक बार फिर नींद लगेगी। वस्तुत: इस गोली का असर चौबीस घंटे तक रहता है। बाद में पता ही नहीं चलता कि यह रोग उसे किस तरह ग्रस्त कर लेता है। ठीक उसी तरह जिस तरह किसी की रास्ते में कोई चीज़ खो जाती है किन्तु कुछ क्षण के बाद वह उसी रास्ते पर चलकर इसको ढूंढ़ने लगता है।

ठोबा दिन में एक-दो बार बापू के पास जाता है किन्तु जब से इनका स्वास्थय बिगड़ गया तब से मैं इसको इनके पास जाने नहीं देती। क्या पता इनका यह हृदय-रोग छूत-मुक्त है भी या नहीं। यदि इसको भी हृदय-रोग लग जाए तो मैं लुट जाऊंगी। इसलिए उचित यही है कि इसको कमरे में भेजा ही न जाए।

सोचती हूँ कि यदि इनकी हालत इसी तरह रह जाएगी तो वह दिन दूर नहीं जब मैं दाने-दाने की मोहताज बनूँगी। घर छूट कर परदेस में रहना तो हमारे लिए कष्टदायक है ही। तिसपर भी घर के किसी सदस्य को जब कोई बीमारी लग जाती है तो संचित पैसा उसी पर खर्च हो जाता है। खर्चा हो गया तो ठीक है किन्तु यदि बीमारी जैसी की तैसी रहे तो यह चिन्ता का विषय बन जाता है।

मगर अब उसका रोगमुक्त होना ही है, चाहे इसके लिए मुझे कुछ भी क्यों न करना पड़े। यदि ऐसा न हो पाए तो मेरा अस्तित्व मिटकर रह जाएगा। यदि ठीक नहीं हो गया तो फिर इसके लिए मृत्यु ही ठीक है... यह सोचकर ऊषा के नीचे से ज़मीन

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरक गई। यह मुझे क्या हो गया? मैं तो यह क्या सोच रही हूँ? मुझे तो ऐसा सोचना नहीं चाहिए। इससे पहले तो मेरी मृत्यु हो जाए। ऊषा ने अपने-आपको कोसकर कहा-'तुम्हारी जीह्वा कट जाए। पापिन! यह क्या कह रही हो? तुम तो उसकी पत्नी हो। परिपूर्ण शक्ति। यह क्या कह रही हो? शक्ति का अस्तित्व तो तभी है जब उसके पास शिव हो। ककाजी के बिना उसका कोई मोल नहीं।

मगर नहीं, यह तो मेरे बस में नहीं। जीवन-मरन तो उसी के हाथ में है। कौन कब मर जाएगा, यह किसको पता। हो सकता है कि ककाजी रोगमुक्त हो जाए और मैं मर जाऊँ। यदि ऐसा ही हो जाए तो यह घर उजड़कर रह जाएगा। यदि मैं मर जाऊँ तो ककाजी की सेवा कौन करेगा। सब से ज़्यादा नुक्सान तो ठोबा का होगा। उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं होगा।

ऊषा ने ककाजी की ओर ध्यान से देखा। उस समय वह गहरी नींद में था।

अब तक लगभग छः महीने इसी तरह बीत गए। ककाजी का रोग वैसे का वैसा रह गया। अब तक ऊषा सोचती रही कि आप्रेशन किए बिना शायद उनका यह रोग ठीक होगा। मगर नहीं, उसको तो आप्रेशन करना ही पड़ेगा।

मगर इस तरह का आप्रेशन करना तो इसके जीने-मरने का सवाल है। यह तो एक पेचीदा आप्रेशन है। वैसे तो सभी कहते हैं कि इन्सान के बचने की बहुत कम उम्मीद रहती है इसमें।

पहले तो यह बातें ककाजी से गुप्त रखी गयीं। मगर वह तो सब कुछ जानता था। वह तो अब सभी से यही कहते कि इस मुसीबत से बेहतर है कि आप्रेशन ही किया जाए। ऊषा परेशान हो गयी। तो भी उसने ककाजी से पूछ ही लिया-'तो फिर क्या आप्रेशन करना ही है?'

'हाँ, अब आर हो या पार। अब मुझसे सहा नहीं जाता।'-यह तो ककाजी का अंतिम फैसला था।

आप्रेशन करने के लिए डॉक्टर ने तारीख नियत की। ककाजी अपने-आपसे सोचने लगा कि क्या पता ये दिन मेरे ऊषा के साथ अंतिम दिन हों। एक दिन वह ऊषा के साथ प्यार से नैन लड़ाकर कहने लगा-' तुम्हारी ओर देखकर ऐसा लग रहा है कि एक ही नज़र से मेरा दिल निकाल रही हो। आज मुझे तुम्हारी भरी जवानी का अहसास हो रहा है। प्यारी! तुम कितनी सुन्दर हो। तुम्हारे माथे पर यह चम-चम बिंदिया ऐसे चमकती है जैसे नील-गगन पर चंद्रमा! मेरी मृत्यु के बाद इसको नहीं हटाना।'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह सुनकार ऊषा की आंखों से आंसू बह निकले किन्तु उसने इनको तत्काल पल्लू से पोंछ लिया। कहा–'मेरी भी आज तुम्हारी ओर देखकर दिल की धड़कन तेज़ हो रही है। ऐसा लगता है कि तुम्हारी सूरत बस गयी है–दिल में, मन में और अंत:करन में'।

ककाजी ने कुछ नहीं कहा। उसको लगा कि उसका दम घुट रहा है। कुछ क्षण ऊषा की ओर प्यासे नयन से देखकर कहने लगा–'चिंता करने की कोई बात नहीं। मेरी मृत्यु के बाद आपके जीवन में कोई कमी नही रह जाएगी। ये है मेरा जीवन-बीमा पत्र। आपको 'फेमली-पेंशन' भी मिल जाएगी। बैंक में तो पांच लाख रुपया जमा है। आपको तो राजरानी की तरह जीना है। हाँ, ठोबा का ध्यान रखना ।'

'बातें कम कीजिए न। आप तो शीघ्र ही रोगमुक्त हो जाओगे।'–ऊषा ने सांत्वनाा देते हुए कहा। साथ ही बात को काटकर पूछा–'यह मकान किसके नाम है?'

यह तो एक अच्छा प्रश्न किया ऊषा ने। ककाजी भी चाहता था कि उसकी मृत्यु के बाद इस मकान के लिए हाथापाई न हो जाए। इसको साफ-साफ कहना ही पड़ेगा। उसने ऊषा से कहा–'इसके एक भाग का मालिक तो रूपजी भी है।' –ऊषा ने सुना और वह अन्दर से ही जल गयी। इस पर वह ज़्यादा बोलना भी नहीं चाहती थी। न चाहने पर उसने इतना ही कहा–'क्यों? उसको इस मकान में रहने का कौन-सा अधिकार है? उसने तो एक पैसा भी इसके बनने में खर्च नहीं किया है। यह मकान तो आपने बनाया है और रूपजी को इसका भागीदार बनाने की कौन-सी आवश्यकता थी'।

यह सुनकर ककाजी के आंखों से आंसू बह निकले। ऊषा ने जाना कि खून के रिश्ते में गर्मी आने लगी है। फिर भी वह चाहती कि मकान का फैसला यदि इसी दम हो जाए तो कितना अच्छा रहता । उसको रूपजी से नफरत थी क्योंकि उसकी इनके माल व जायदाद पर नज़र थी। इतने में ककाजी ने कहा–'रूपजी तो कोई गैर नहीं। वह तो मेरा सगा भाई है। मैंने इसको अपने बेटे की तरह पाला है। कौन सा पहाड़ टूट पड़ेगा यदि वह भी इस मकान में रहेगा। मेरे ही तरह कश्मीर से भागकर आया है। यहाँ इस मकान में नहीं रहेगा तो क्या किराये के मकान में रहेगा?'

यह सुनकर ऊषा को लगा कि उसके मन-मस्तिष्क में भयंकर बम-विस्फोट हो गया। उसने कुछ नहीं कहा। इस समय वह पति पर नाराज़ थी। किन मुश्किल परिस्थितियों में उसने इस मकान को बनाया और अंत में इसका भागीदार भाई को

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बनाया–ऊषा यही सोचकर अपना सिर नीचा किए हुए थी। चुप्पी को तोड़कर ककाजी ने कहा–'मेरी तरफ देख लेना ज़रा दूर-दृष्टि से देखकर सोच ले कि मकान, माल व जायदाद एक इन्सान यही छोड़ता है। मेरी तरफ तो देख ले न। मकान यही रहेगा और मैं मर जाऊंगा। तिसपर भी मैंने किसी गैर को इसका भागीदार नहीं बनाया। यह तो मेरा अपना सगा भाई है।'

ऊषा तो कुछ नहीं कह पाती थी। उसके अन्दर के बम-विस्फोट से बदन कब का छलनी हो गया था। यदि वह प्रतिवाद करती तो डर था कि उसका कोई विकार न हो जाए। फिर भी उसका दिल नहीं मानता था कि रूपजी इस मकान में रहे। उसने ककाजी को आहिस्ता से कहा–'आपका कहना सत्य है किन्तु आप ही बताइए कि हमारे किस सुख-दुख में उसने हमारा हाथ बंटाया?'

यह सत्य है कि आज तक रूपजी खुदगर्ज़ी से काम लेता रहा। वह तो अपनी पत्नी को पूछता नहीं था, उसका सवाल ही पैदा नहीं होता था। यह सब ककाजी भी जानता था। इस सवाल का उसके पास उपयुक्त उत्तर नहीं था। तो भी वह ऊषा से कहने लगा–'ऐसी बातें मत सोच। क्या पता मेरी मृत्यु के बाद यही आपका हमदर्द बने। हितकारी।'

ऊषा तो अन्दर से जल रही थी। इन शब्दों ने उसके अन्दर आग पर घी का काम किया। मगर वह कुछ नहीं बोली। उसने सोचा कि इस विषय पर बात करना व्यर्थक होगा। वस्तुत: इसी को कहते हैं अपना-अपना भाग्य। मकान तो हाथ से गया और इस पर एकाधिकार करने का कोई उपाय या रास्ता नहीं। यही सोचकर उसकी समझ में आया कि रूपजी कमरे में कैसे घुस गया। उसने कहा–'अब हर चीज़ का इंतज़ाम हो गया।'

'मगर जिसका इंतज़ाम होना है, उसका तो नहीं हुआ। आगे का इंतज़ाम तो मैं भी कर सकती हूँ।'–ऊषा ने भौहें सिकोड़कर कहा।

'अब किसका इंतज़ाम होना है?'–रूपजी ने पूछा।

'खून का।'–ऊषा का उत्तर।

'उसका इंतज़ाम भी हो गया'–रूपजी ने कहा।

'खून किसने दिया?' ऊषा का प्रश्न।

'मैंने। मेरे और भाई साहब का ब्लड-ग्रुप तो एक ही है।'–रूपजी ने कहा।

यह सुनकर ऊषा ने ककाजी की ओर देखा। इसके बाद अपने-आपसे सोचने लगी–'सेहतमंद है न, इसलिए। मेरी तरह इसकी हड्डियां तो नहीं निकल आयी हैं।'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

❑

जब खून के कतरों का इंतज़ाम भी हो जाए तो उस रोगी के शरीर के रोगग्रस्त अंग का चीर-फाड़ करने में काहे की देर। इस तरह से ककाजी का आप्रेशन करना भी तय हो गया। अब उसको आप्रेशन टेबल पर रखना ही बाकी रह गया था। उसका भाग्य ही अब एकमात्र सहाराथा। यह सब तो ऊषा अच्छी तरह जानती थी। वह उसके पलंग पर बैठ गयी और पति के गले लग गयी। शादी के पहले दिन भी वह उसके साथ इसी तरह गले लग गयी थी। इतने में उसने उल्लू के ऊँधने की आवाज़ सुनी। उसने कहा-'ओम् नमः शिवाय'

यह सुनते ही ककाजी ने कहा-'सुनती हो? मौत का संदेश लेकर आया है। इस समय 'ओम् नमः शिवाय' क्यों पढ़ती हो? अभी तो मेरी सांसें चलती हैं। यह मंत्र तो उस समय पढ़ना जब मैं इस दुनिया में नहीं रहूँगा। इसी से मेरी आत्मा को शान्ति मिलेगी।'

ऊषा ने कुछ नहीं कहा। वह अपने-आपमें इसलिए पछता रही थी कि आज जब मैं इसके साथ अंतिम बार बातें करने आयी तो यह उल्लू बीच में कैसे टपक पड़ा। उसने ककाजी पर चादर डाली। इसके साथ ही उल्लू के ऊँधने की आवाज़ फिर सुनाई दी। ककाजी ने कहा-'सुनती हो?'

'सुनती हूँ, अब सो जाओ' ऊषा ने कहा।

'यह तो मेरे लिए मौत का वारंट लेकर आया है। आ, मेरे पास सो जा। मैं पहले की तरह तुम्हारे सीने पर हाथ रखूँगा।'-ककाजी ने प्यार से कहा।

ऊषा ने एकदम माना। वह उसके बिस्तर में आकर सो गयी। ककाजी ने उसके सीने पर हाथ रखा किन्तु उसकी नींद नहीं लग रही थी। शायद वह यही सोचती थी कि अब ककाजी की अंतिम घड़ी आने वाली है। मगर वह उसको बचाने के उपाय क्यों नही करती?'

'ककाजी अब इस दुनिया में नहीं रहेंगे।'-इसका खयाल आते ही ऊषा का सिर चकरा जाता।

पलभर के लिए ऊषा ने आंखें बन्द कीं। उसको लगा कि वह भी ककाजी की तरह बीमार है। उसका बदन थर-थर कांपने लगा। इसी के साथ एक अजीब प्रकार की कमज़ोरी महसूस होने लगी। उसकी आंखों के सामने ककाजी की मृत्यु का दुश्य सामने आने लगा। वह देख रही है कि रूपजी रोती निगाहों से उसको कह रहा है कि

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाई साहब की मृत्यु हो गयी है। यह सुनकर वह चीखती है और बाल नोचती है किन्तु डाक्टर साहब कहते हैं कि रोना-धोना बन्द करो। यह तो घर नहीं, अस्पताल है। फिर सांत्वना देकर कहते हैं कि दिल हारना कहाँ की बुद्धिमत्ता है। दिल के पक्के को ही बहादुर कहते हैं। किन्तु ऊषा उसको यह कहकर कोसती है कि आप तो नहीं जानते हैं कि इस समय मुझ पर क्या बीत रही है। यह तो ऊपरवाला ही जानता है। वस्तुत: जिसपर बीतती है, वही जानता है। मगर डॉक्टर साहब कहते हैं कि ऐसे मौकों पर दिल पर पत्थर रखना चाहिए। बीच में रूपजी कहते हैं कि तुम चिन्ता मत करो। तुम तो मेरी बहन हो। किन्तु उत्तर में ऊषा कहती है कि ऐ पगले, ऐसा कहकर मेरा मकान हड़पना चाहते हो? इसी तरह आपस में कोसा-कोसी होती है। सगे-संबंधी आते हैं। लाश उठाकर सब समझाते हैं कि अब यह आपका इम्तिहान है। इस तरह से ऊषा को लगता है कि अभी से मेरी ज़िन्दगी में बदलाव सा आ गया है।

यह तो सच ही उसकी ज़िन्दगी का इम्तिहान है और उसकी कर्त्तव्यपरायणता की एक घड़ी। अब इसको इसी घड़ी में जीना है। उसको अब अपने पांव पर खड़ा होना है। अब उसकी ज़िन्दगी का रुख बदल जाएगा।

ऊषा ऐसे खड़ी हो गयी जैसे किसी ने उसको जगाया। उसने ककाजी की ओर ध्यान से देखकर अपने-आपसे पूछा कि अब मुझे अपने में कोई कमज़ोरी नहीं लगती। मुझे अब चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं। अब मैं सचमुच उस दिन और उस घड़ी की इंतज़ार में हूँ। इतने में ककाजी ने कहा-'मुझे लगता है कि अब मैं ज़िंदा नहीं रह सकता। अब अपना खयाल रखना। रोना नहीं। मुंह बोले रिश्तेदार आपको ज़रूर रुलाएंगे, मगर उनकी बातों में नहीं आना।'

'ऐसा मत कहो। बस आराम करो। मुझे पूरी आशा है कि आप ठीक हो जाओगे।'-ऊषा ने कहा।

किन्तु इस समय ऊषा यह सब दिल से नहीं कह रही थी। उसने यह सब यों ही कहा। कुछ दिनों में यहाँ इसका अस्तितव ही मिट जाएगा। अस्पताल से उसकी लाश उठाई जाएगी। इसके बिना यह कमरा खाली हो जाएगा।

इतने में उसने ऐसा महसूस किया कि जैसे वह एक ज़िन्दा इन्सान के साथ बातें नहीं कर रही है बल्कि उसके सामने सड़ी हुई लाश पड़ी है। इस समय उसको इसकी ओर देखकर डर लग रहा था। किन्तु ककाजी ने पूछा-'आज मैं ठोबा को अपने पास सुलाऊँगा।'

इस पर ऊषा पहले कुछ न कह पायी। फिर अपने-आपमें सोचने लगी कि क्या

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पता यह छूत का रोग हो और ठोबा को मैं उसके पास सोने नहीं दूँगी। यह तो एक लाश है और ठोबा क्या लाश के गले लग जाएगा। फिर उसकी ओर यों ही कहा।'–वह तो इस वक्त खेल रहा है।'

'अच्छा तो खेलने दे उसे। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि वह तुम्हारे लिए ज़िन्दा रहे और तुम उसके लिए।'–ककाजी ने कहा और उसने सुना। सच ही वह ज़िन्दा रहना चाहती थी, सौ साल क्या, हज़ार साल तक ज़िन्दा रहना चाहती थी और इसके लिए वह कोई भी मुसीबत झेलने के लिए तैयार थी–अपने ठोबा के लिए। फिर भी कुछ पल के लिए वह घबरा गयी। वह ठोबा के पास गई और ज़ोर से उसके गले लग गयी। यही तो अब उसकी ज़िन्दगी का एकमात्र सरमाया है। उसको अब उसी के लिए ज़िन्दा रहना है। उसने ठोबा के शरीर में एक तरह की गर्मी महसूस की–ज़िन्दा रहने की।

❑

सब परेशान थे। अंत में वह दिन आया जब ककाजी का आप्रेशन करना था।

ककाजी की समझ में कुछ नहीं आता कि वह क्या करे! उसका शरीर थर-थर कांपने लगा। ऊषा सोचने लगी कि चलो अब इसको यमराज के हवाले कर दिया। उसकी आत्मा को अब शान्ति मिलेगी। यह तो अपने पीछे सब कुछ छोड़ गया–धन, मकान और जायदाद। अब तो यह सब मेरे लिए है। इसको उसने मेरे नाम कर दिया। शायद यह देखने के लिए कि मुझे इसका इस्तेमाल करना आएगा या नहीं।

अस्पताल में आज सबसे ज़्यादा चहल-पहल थी। सर्जरी के इतिहास में दिल के आप्रेशन का पहला प्रयोग था। यदि ककाजी बच गए तो बहुत सी बातें सामने आएँगी। रूपजी ऊषा को सांत्वना देते हूए कहने लगा–'इस वक्त हिम्मत नहीं हारना'– ऊषा उसके ये शब्द सुनकर जल गयी। उसने कहा–'अब मेरे संबंध में कोई भी क्या कहे, मुझे उसके साथ कोई सरोकार नहीं। सच तो यह है कि अब मेरे दिल का करार छूट गया'।

उसकी इन बातों को सुनकर रूपजी का मन मसोस कर रह गया। उसने कुछ नहीं कहा। अब दो घंटे हुए ककाजी को आप्रेशन थियेटर में। अरे, वहाँ से कोई निकला ही नही। आखिर बात क्या है? इसमें मौत और ज़िन्दगी का सवाल है। अंत में एक परिचारिका आप्रेशन-थियेटर से निकली। उसको देखकर ही ऊषा चिल्लायी। किन्तु वह एकदम चुप हो गयी और साथ ही सोचने लगी कि शायद वह मर गया

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होगा। मैं यहाँ आयी ही क्यों? इतने में मैंने घर में सारा इन्तिज़ाम किया होता। अभी लाश घर पहुंच जाएगी और वहाँ रिश्तेदारों का तांता बंधा रहेगा। लाश को देखकर मैं किस तरह रोऊँगी? हाँ, मैं तो पहले खूब चिल्लाऊँगी। इसके बाद...मुझे पता है कि क्या करना है। ज़िन्दगी की नांव को कैसे चलाना है।

आप्रेशन-थियेटर से बड़ा डॉक्टर निकला और उसने रूपजी को अपने पास बुलाया। रूपजी बड़े डॉक्टर के पास गया। यह देख ऊषा ने सब्र से काम लिया किन्तु उसके दिल की धड़कन तेज़ हो गयी। जब इसी तरह पाँच मिनट बीत गये और रूपजी वापस नहीं आया तो वह बेताब सी हो गयी। उसने सोचा कि ज्यों ही वह आएगा तो मैं रोना शुरु करुँगी। कहते हैं न इस समय रोने का अंदाज़ कुछ और ही होना चाहिए, नहीं तो अन्य स्त्रियां उसकी खिल्ली उड़ायेगी। इसी को कहते हैं कि एक की दाढ़ी जलती है और दूसरा उसकी आंच से हाथ सेंकता है। इतने मे रूपजी ऊषा के सामने खड़ा हो गया। 'भाभी'-उसकी सांसे फूल रही थीं। यह देखकर ऊषा चिल्लाई-'क्या बात है? बोलते क्यों नहीं?'

रूपजी ने ज्यों ही दम संभाला तो उसने कहा-'भाभी! आप्रेशन सफल रहा है।'

जिस प्रकार एक गुब्बारा फटकर रबड़ के टुकड़े में सिमटता है, उस समय यही हाल ऊषा का भी हो गया। उसके दिल व दिमाग में मानों एक और बम-विस्फोट हो गया, ठीक उसी तरह, जिस तरह जम्मू में बैंक के सामने विस्फोट हुआ था। उसने कहा-'क्या पता, यह सच है।'

'भाभी! यह सच है। भाई साहब धीरे-धीरे होश में आ रहे हैं।'-रूपजी ने धीरे से कहा।

ऊषा का सारा बदन कांपा जैसे बम-विस्फोट की भयंकर आवाज़ सुनकर उसको डर लगा हो। उसके बदन में एक अजीब तरह की कमज़ोरी आने लगी। वह एकदम पीली पड़ गयी।

ऊषा को देखते ही देखते यह क्या हो गया? उसको तो खुश होना चाहिए था। वह सोचने लगी कि यह कैसा चमत्कार है! मुझे क्या पता था कि रोगी का दिल फिर से ठीक हो जाएगा। मेरा दिल तो मानता नहीं। यदि मुझे पता होता कि यह ठीक हो जाएगा तो मैं ज़िन्दगी के नए सफर पर न निकली होती। मुझे तो यही पता था कि अब नया संसार बसाना है।

कुछ क्षण के लिए ऊषा ककाजी के स्वस्थ होने पर शोक क्यों मनाने लगी। जब कि उसको इस पर खुश होना चाहिए था-यह तो उसकी समझ में भी नहीं आया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शायद इसलिए कि उसने पिछले कुछ महीनों से एक ऐसे दिल को कराहते हुए देखा था जो लगभग मरा हुआ था। यह तो ठीक नहीं हो सकता था। इसका दिल नहीं मानता था। यह बात तो उसके दिल में तभी उतर गयी जब उसने ककाजी को अपनी आंखों से देखा!

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कागज़ के टुकड़े की कहानी

खुले आसमान से सूर्य की किरणें जब बर्फ से बादलों को चीरकर नगरोटा की धरती को छूने लगती हैं तो वहाँ बेहिसाब व बेशुमार विस्थापितों के शिविर दिखाई देते हैं–कुकरमुत्तों की तरह! यदि ध्यान से देखा जाए तो गत आठ-दस वर्षों से यहाँ एक नयी दुनिया बस गयी है, एक नये अंदाज़ में, अपने एक अलग रहन सहन के साथ। जो लोग अपने वतन में अर्श पर बैठे थे, वही आज फर्श पर बैठे है। जो वहाँ आपस में बांटकर खाते थे, वही आज यहाँ दाने-दाने के मोहताज बन गए हैं, सहायता केन्द्रों पर दर-दर भटकते हैं, और झूठे आश्वासनों पर विश्वास करते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह कि इनको अपने वतन में सुहावनी धूप सेंकने में मज़ा आता था और आज यहाँ खुले में, तपती धूप में बैठने पर मजबूर हुए हैं। इनके बदन पसीने से भीगे हैं और जब तपन का प्रकोप हद से ज़्यादा बढ़ जाता है तो एक छटपटाहट सी मचती है–मात्र कुछ पल जीवित रहने के लिए। जिस पर भी सर्प काटने का भय, बिच्छू के डंक मारने की आशंका, और तरह-तरह के विषैले जीव-जन्तुओं से दूर रहने की सावधानी बरतना तो अब दैनिक जीवन का नियम-सा बन गया है। वजह तो कुछ नहीं है। बस, अब ये फर्श पर बैठ गए हैं।

रुपकृष्ण भी अपने आलीशान मकान को हरीसन ताला लगाकर यहाँ रहने के लिए मजबूर हो गए। किन्तु मरना-जीना किसी के बस में नही। जहाँ जीवन के सत्तर वर्ष बिता कर अंतिम सांस लेने की चाह थी, वहीं आज यहाँ खुले आसमान में दम तोड़ गये। उनके मरने का कारण कुछ भी हो किन्तु उनके सिरहाने के नीचे से जो पुर्ज़ा मिल गया, उसको पढ़कर ऐसा लगता था कि इसके पीछे एक ठोस दलील है। असह्य दुख का कोहरा उनके दिल को पाश-पाश कर गया है। कल शाम को वह मेरे साथ इन शिविरों के आस-पास टहलते थे। दिन को बहुत गर्मी थी और सूर्यास्त होने के बाद वह मेरे शिविर के सामने आये और कुछ मिनट के लिए टहलना चाहा मेरे साथ। किन्तु बाद में उसने सिरदर्द होने की शिकायत की। मैंने पूछा–'धूप में तो नहीं बैठे थे?'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'न, सारा दिन टेंट में ही था। अलबत्ता एक बात तो ज़रूर है कि तार-तार हुए इस टेंट के अन्दर से धूप रुकती ही नहीं। इसके अन्दर बहुत गर्मी होती है और दम घुटता है। बस, यही बात है।'

'तो जाओ वापस अपने इस टेंट-नुमा नीढ़ में। हाथ-पैर ठण्डे पानी से धो लो इसी से सिर दर्द दूर हो जाएगा।'-मैंने सलाह दी।

'हाँ, यह ठीक कहा। पर हाथ-पैर धोने से पहले श्रीनगर दूरदर्शन से आज का समाचार बुलेटिन सुनूंगा'।

❑

दूसरे दिन अलसुबह जब मैं उठ गया तो अन्य की तरह समय काटने के लिए शिविर के आस-पास चक्कर काटने लगा। इतने में चांद जी मेरे पास हांफते हुए आए। कहा-'सुनते हो?'

'क्या बात है?'-मैंने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

'रूपकृष्ण नहीं रहे।'-उसने कहा।

यह सुनते ही मैंने महसूस किया कि मेरे पांव के नीचे से ज़मीन खिसकती जा रही है। कुछ संभल कर मैंने उनसे कहा-'क्या बकते हो? वह तो कल मेरे साथ ही थे'।

'यह बकवास नहीं, सत्य है। मैं तो अभी उनके शिविर के पास से निकल रहा था कि अचानक उनके शिविर के आस-पास कई लोग जमा हुए दिखे। कहते हैं कि पुलिस भी आ रही है।' -चांदजी ने एक ही सांस में कहा।

मैंने सुना और कुछ पल के लिए कहा कुछ नही। इसके बाद चांदजी की ओर ध्यान से देखकर कहने लगा-'यह रूपा की चाल तो नहीं? ज़हर तो नहीं दिया है उसने और वह मर गये। और इस वक्त लोगों को दिखाने के लिए रो रही है।'

'क्या कहते हैं आप भी? वह क्यों ज़हर देकर उसके प्राण लेती'?

'फिर भी मुझे इस औरत पर विश्वास नहीं। ढोंगी है। यह सब तो वह भी जानता था मगर बेचारा क्या करता। बाप ने शादी करने पर मजबूर किया वरना वह शादी ही न करता।'-मैने समझाते हुए कहा।

'तो क्या फिर इसका कुंवारा रहने का इरादा था?'

'नहीं, वह तो पहले ही किसी को चाहता था। किन्तु उसको न पा सका'-मैंने कहा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'वह किसको चाहता था?'–चांद जी ने पूछा।

'आईशा को।'

'आईशा? एक मुसलमान लड़की। और वह भी ब्राह्मण के साथ शादी करना चाहती थी? त्राहि-त्राहि! फिर क्या हुआ? क्या रूपकृष्ण शादी करने पर तैयार नहीं हुए?'

मैंने उनकी ओर ध्यान से देखा किन्तु कहा कुछ नहीं। मौन को तोड़कर उन्होंने ही कहा 'लड़की के पिता ने अड़चन डाली होगी?'

'लड़की के पिता मुसलमान थे। उसने बेटी को कई महीने तक घर की कोठरी में बन्द किया। उसको मारा-पीटा। किन्तु इतना होने पर भी लड़की नहीं मानी। उसके दिल ने रूपकृष्ण के साथ ब्याह करने की ठान ली थी। इधर रूपजी भी परेशान थे। वह तो किसी तरह आईशा के साथ शादी करना चाहते थे। किन्तु इसके लिए किसी भी तरह की पहल करना उनके लिए असम्भव था। अन्त में जब कुछ नहीं हो पाया, तो लड़की अपने ज़िद पर अड़ी रही। उसके पिता ने अपना मान-सम्मान बचाने के लिए शर्त रखी।'–मैंने एक ही सांस में कहा।

'शर्त? क्या शर्त थी?

'आप अभी नहीं समझे।

'बस यही कि कलमा पढ़ो, इस्लाम अपना लो और कर ले मेरी बेटी के साथ शादी! यही न।'

'हाँ, यही तो बात थी। मगर रूपकृष्ण के पिताजी नहीं माने। लड़की का बाप अगर नहला था तो रूपजी का बाप दहला। उसने लड़की के बाप की दलील को नहीं माना। आज तक इन्होंने जात नहीं बदली है जैसे धर हैं, कुकरू, कोल, किचलू, सपरू, खज़ांची आदि हैं। यह तो हमारी त्रासदी की आठवीं घटना है। मगर हम अभी ज़िन्दा हैं, भले ही दुनिया के कोने-कोने में बिखर कर रह गए हैं'।

'रूपकृष्ण के किस्से का क्या हुआ?– चांद जी ने पूछा।

'रूपकृष्ण का किस्सा वैसा का वैसा रह गया। दोनों के आपसी प्रेम की लहर घाट तक पहुंच कर बनती-मिटती लकीरों में बंट गयी'–मैंने कहा।

'मतलब? मैं समझा नहीं।'–चांद जी की उत्सुकता बनी हुई थी।

'लड़की का बाप कहता था कि मुसलमान बनने पर ही रूपजी का विवाह आईशा के साथ होगा और रूपजी के बाप का कहना था कि कौन सा पहाड़ टूट पड़ेगा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यदि आईशा अपनी मर्ज़ी से एक हिन्दू महिला बनेगी। दोनों अपने ज़िद पर अड़े रहे और बीच में रूपकृष्ण का मन बदल गया।'–मैंने कहा।

'क्यों?'

'समझे नहीं? इस विधवा के साथ उसके न चाहने पर भी शादी करनी पड़ी।

'विधवा थी तो क्या हुआ! मेरा पूरा विश्वास है कि इसी ने रूपजी को मारा होगा'–मैंने निसंकोच कहा।

चांदजी ऐसे सुनते रहे मानो ये सब बातें उनको पता ही न हों। वैसे, पता होता भी कैसे? कुछ पल रूककर वह पूछने लगे–'आईशा का क्या हुआ?'

'उसने कई वर्षों तक शादी नहीं की। वह इस आस में थी कि उसके पिता मानेंगे। मगर ऐसा हुआ नहीं। अंत में जब वह चालीस वर्ष की हो गयी तो इसका विवाह धोबी के साथ हो गया। रूपजी उस वक्त भी कुंवारे थे। वैसे वह कुंवारे ही रहना चाहते थे। वह मानते थे कि उनका मन आईशा के मन के साथ मिल गया है। वे दोनों परस्पर एक दूसरे के प्रति समर्पित और वचनबद्ध थे।

'मगर रूप जी को इस विधवा के साथ किसने जोड़ा?'–चांद जी ने पूछा।

'हमारे ही लोगों ने। इस घटना के बाद वह हमारी बिरादरी में बदनाम हुए। कोई भी उनको लड़की देने के लिए तैयार नहीं हुआ। अंत में आईशा के ही प्रयत्न से यह लड़की तैयार हुई जो कुछ ही महीने पहले विधवा हो गयी थी। न चाहने पर भी रूपजी ने शादी की। मगर बात यहाँ ही खत्म नहीं होती। इस नवयौवना को उनसे जो मिलने की आशा थी, वह नहीं मिली। यह वही चीज है जो हर औरत चाहती है, भगवान से मिन्नतें करती है और शादी के बाद इसी की आस में बैठी रहती है। इसी एक बात पर दोनों में बनी नहीं। वह तो उसको कई बार छोड़ने पर भी तैयार हो गयी और आज उससे न रहा गया हो, उसने उनका काम तमाम कर दिया।'–मैंने कहा।

'तो फिर इसमें औरत का क्या दोष! जहाँ नर है, वहाँ नारी भी है। आने वाली पीढ़ी का जन्म तो इसी से सम्भव है।'–चांद जी ने कहा।

'यह तो मुझे भी पता है। मगर मुश्किल यह है कि आईशा की गोद भी सूनी है। उसका पति अब तलाक देने पर आ गया है।'–मैंने कहा।

'हूँ!'–चांदजी बोले।

'जी हां। दोनों ने मात्र शादी करने की रस्म पाली और जब रूपजी कश्मीर से इसके साथ यहाँ आये तो आईशा ने उसको भारी मन से विदा किया। यदि उसके बस में होता तो वह भी रूपजी के साथ यहाँ आती। मगर उसको डर था'–मैंने कहा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'डर? किसका?'–चांद जी ने पूछा।

'जीवन का' मैंने झट उत्तर दिया।

'वह तो सभी को होता है। इसी लिए हम कश्मीर छोड़ आए। वहाँ के लोग एक दूसरे को नहीं मारते।'–चांद जी ने कहा।

'उसके पति सीमा पार जाने वालों में से थे।'

'आपको इस बात का पता कैसे चला?'

'यह सब तो मुझे रूपकृष्ण ने बताया था। आईशा के ही कहने पर वह वहाँ से चले आये यहां'।

कुछ पल के लिए हम दोनों मौन रहे। सिर्फ एक-दूसरे की ओर देखने लगे-बुत की तरह। अब की बार मुझे रूपकृष्ण के मरने का विश्वास हो गया। 'कल ही मिले थे मुझे। बिल्कुल स्वस्थ थे वह। हां, एक हसरत उनके दिल में ज़रुर चुभ रही थी और वह थी उनका आईशा से बिछोह। अंत में उन्होंने समय के हालात को कोसा। पश्चाताप किया। अपने वतन में दोनों परस्पर आबद्ध एक-दूसरे की ओर ऐसे देखते कि जैसे कोई प्यासा पानी की बूंदों की ओर देखता है। चलो इस नाटक के नायक की मृत्यु हो गयी किन्तु अब देखना है कि नायक के बिना नायिका की क्या भूमिका रहेगी। फिल्हाल मैं देखूं कि रूपकृष्ण को आग जुड़ी कि नहीं'।

मैं झट चांद जी के साथ रूपकृष्ण के शिविर तक गया। इसके आस-पास लोगों की भीड़ जमा हो गयी थी। लोग कई टोलियों में बंटकर बातें कर रहे थे। मैं झट शिविर के अन्दर गया। वहाँ रूपकृष्ण को न देखकर दुख हुआ। कल तो वह मेरे साथ था और आज उसको यह क्या हो गया! ज्यों ही रूपकृष्ण की पत्नी ने मुझे देखा, वह बिलख-बिलख कर रोने लगी। कहा–'देखिए, यहाँ भी हमारे पीछे शत्रु पड़ गये हैं'।

'मगर उसीने इसको मारा है।'–वह एक बार फिर बिलख कर रोयी।

मैंने सुना किन्तु उसकी एक बात भी समझ में नहीं आयी। मैं सिर्फ उसकी ओर देखता ही रह गया। उसने एक बार फिर कहा–'हाँ, उसी ने।'

'किसने ?'–मेरी उत्सुकता।

'आईशा ने।'–उसने झट कहा।

'क्यों ? उसको यह क्या हुआ? वह क्या यहाँ आयी थी?'–मेरे एक साथ तीन प्रश्न।

'नहीं, ऐसी बात नहीं है। आईशा को अपने ही पति ने बे-दर्दी से मारा है और

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह खाट पर बैठ गये और कागज़ के एक टुड़े पर कुछ लिखने लगे और रोने लगे। फिर उसकी हिचकियां बंध गयीं और फिर...इसकी जान तो कब की निकल गयी थी'।

इसके बाद वह टुकड़ा मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा–'यह देखो, इस पर क्या लिखा है। निरक्षर हूँ पढ़ नहीं सकती।'

मैंने काग़ज के उस टुकड़े को पकड़कर उसे खोला। टूटे-फूटे और नपे-तुले अक्षर लिखे थे इस पर। मैंने इनको ध्यान से पढ़ा। लिखा था–'मेरा अंत निश्चित है। कब? यह तो ऊपरवाला ही जानता है। जीने या मरने के बाद मुझ पर अधिकार तो आईशा का था क्यों कि मेरी अपनी संतान तो नहीं। अफसोस है तो इस बात का कि उनको कंधा न दे सका। मैं अपने वचन का पालन न कर सका। फिर भी मैं भगवान का शुक्रगुज़ार हूँ कि दूरदर्शन के माध्यम से आईशा का निष्प्राण देह देख सका। फिर भी मैं यह खबर कल के अखबार में पढ़ता। पास न सही, दूर से ही यदि एक दूसरे के प्राण उड़ गए तो क्या पता शून्य किस बिन्दु पर इनका एकाकार हो जाए!'

मैंने पुर्ज़े को उसकी ओर वापस थमाया और देखने लगा!

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज की ताज़ा खबर

पत्नी: खाना नहीं खाना है?

मैं: ठहरिए। मुझे आज के अखबार को सरसरी तौर से पढ़ते दो फिर...

खबर: सीमा के उस पार से आ रही शस्त्र प्रशिक्षित आतंकवादियों की एक टोली गिरिफ्तार। सैनिकों के साथ हुई झड़प में इसके सरगने की मृत्यु।

मैं: मृत्यु-देवता की छलनी में छनकर सभी का अंत निश्चित है। वहाँ किसी प्रकार की धोखा-धड़ी, कोई आंख मिचोली या किसी कीमती बन्दूक से गोली-वर्षा करने से काम नहीं चलता।

खबर: पड़ोसी देश की शह पर कश्मीर के कई युवक उकसावे में आकर बन्दूक चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए सीमापार गए हैं।

मैं: जब नव-जात अंकुरों को तवे-सी तपती दोपहरी का अग्निमय ताप लग जाए तो इनको बाहर आने से कोई रोक नहीं सकता, भले ही बाहर आकर ये सूख जाएँ। (पत्नी से पूछ्कर) मेरा लाड़ला चार महीने से कहाँ गायब है? कड़ी निगरानी रखना उसपर। कहीं वह इन्हीं भटके हुए युवकों के साथ भटक न जाए। खून-पसीने की कमाई से इसको पढ़ाया है। इस बुढ़ापे में अब उसी पर सारी आशाएँ टिकी हैं। यदि वह रहेगा तो यह घर भी रहेगा। घर का चिराग तो वही है।

खबर: कल देखते ही यह अफवाह उड़ गयी कि श्रीनगर के एक पूजा-गृह को सुरक्षा बलों ने आग लगाकर भस्म कर दिया।

मैं: क्या मंदिर और मस्जिद या गुरूद्वारा। यहाँ तो ये तीनों पास-पास और साथ-साथ हैं। यहाँ के हिन्दू व मुसलमान, सिख और ईसाइयों को एक-दूसरे के पूजा-गृहों पर श्रद्धा है। फिर क्या बात है कि हर मौसम को गाली देने वाले स्वर, अपनी हर कमज़ोरी को दूसरों का कफन ओढ़ने वाले लोग, अपने मोतियों जैसे दांत, अपनी ही जीभ से काटते हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खबर: कश्मीर में अब कुछ इने-गिने अल्पसंख्यकों के परिवार रह रहे हैं।

मैं: सच है। यदि ऐसा ही हाल रहा तो कश्मीर इकीसवीं सदी से चौदहवीं सदी की ओर मुड़ जाएगा। यह वही सदी है जब कश्मीरी पंडित भागकर या ज़बरदस्ती धर्म-परिवर्तन के कारण कश्मीर में इनके केवल ग्यारह परिवार बच गए थे। वह समय दूर नहीं जब गुला श्यामलाल की, गुलाम कादिर मोहन कृष्ण की तथा खोतनद्यद सोनमाल की ताक में लगकर समय के हाकिमों से फरियाद करेंगे कि पंडितों को वापस बुलायें ताकि हम उनसे मिल पाएं तथा पहले की तरह भाईयों की तरह रहें और शताब्दियों से ललद्यदं तथा नुंद ऋषि के दिए हुए भाईचारे के संदेश की किरण को झिलमिल कर पाएं।

खबर: राजधानी में कश्मीर-समस्या पर संगोष्ठी।

मैं: हाँ, क्यों नहीं। इस वक्त तो वक्ता भाषणों का 'रिहर्सल' कर रहे होंगे, लेखक कलम पैनी कर रहे होंगे ताकि उस दिन श्रोता सुन पायें कि कश्मीर करवट ले रहा है, यहाँ के लोग जाग उठे हैं और इसके साथ ही उनके मुंह से यह दिलकश नारा भी खिसक जाएगा-'कश्मीर हमारा है।'

खबर: अमरीका पाकिस्तान को आधुनिकतम हथियार देकर सैन्य रूप से मज़बूत देखना चाहता है।

मैं: क्यों नहीं। कलियुग में क्या कोई यह कल्पना कर पाया है कि एक ही माँ के दो लाल आपस में लड़ नहीं सकते।

खबर: भारत-पाकिस्तान के बीच कश्मीर-विवाद को लेकर युद्ध होने की सम्भावना!

मैं: युद्ध होगा या नहीं-कह नहीं सकते। अब तक भारत ने पाकिस्तान के साथ तीन युद्ध जीते हैं। किन्तु जीतने के बाद भारत ने अपने-आप हार मानी। सन् 47 ई० में युद्ध हुआ तो सारा कश्मीर जीतने के बाद इसका एक-तिहाई भाग पाकिस्तान को भेंट स्वरूप प्रदान किया गया। सन् 65 ई० में युद्ध हुआ तो हाजी पीर जीतने के बाद इसको वापस किया गया और सन् 71 ई० में युद्ध हुआ तो भारतीय सेना अपनी चौकियों पर डटी रही और अब की बार यदि युद्ध होगा तो भारत तथा कथित आज़ाद कश्मीर को फिर से पाकिस्तान को जीतकर इसको महाशक्तियों के कहने पर फिर से पाकिस्तान को वापस मिलेगा। बस, यदि युद्ध होगा तो यही होगा। इसके सिवाय कुछ नहीं होगा।

खबर: पुलिस की तलाशियों में ज़्यादतियां। एक बुर्कापोश बन्दूक-बरदार को औरत समझकर पुलिस के चंगुल से फरार।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं: अप्रत्यक्ष परिचय चाहे कितना ही दीर्घ रहा हो, प्रत्यक्ष परिचय से धोखा भी हो सकता है।

खबर: लाल चौक में आतंकवादियों ने एक लड़की का अपहरण किया।

पत्नी: खाना नहीं खाना है? यह तो अब ठण्डा हो गया।

मैं: खाना...खाना...खाना...। ऐन मौके पर खाना खाने के लिए कह रही हो।

पत्नी: फिर क्या भूखे रहना है? दिन के तीन बज गए।

मैं: भूखा क्यों रहूँगा। मगर...

पत्नी: क्यों? क्या बात है?

मैं: पहले तो मुझे यह खबर अच्छी तरह से पढ़ने दो। फिर...

पत्नी: यह कौन-सी इतनी दिलचस्प खबर है कि इसको पढ़कर ही रहना है?

मैं: मुझे यह बता कि हमारा लाड़ला कहाँ गायब है? मर्द की बात रही दूर, अब हमारी इस ऋषि वाटिका में औरतों का अपहरण भी किया जाता है।

पत्नी: हमारे लाडले ने चूड़ियाँ नहीं पहनी हैं कि उसका कोई अपहरण करे। वह तो अपने मित्र के पास गया है।

मैं: सच कहती हो? मुझे डर लगता है।

पत्नी: डरने की कोई बात नहीं। पहले मुझे इस खबर को सुना दो।

खबर: आतंकवादियों ने कल शाम कर्फ्यु लगते ही हसीना नामक एक कश्मीरी कमसिन लड़की, जो पास की गली से घर जा रही थी, को चार-चार बन्दूकधारियों ने चारों दिशाओं से आ घेरा। फिर इसको कार में भरकर किसी अज्ञात स्थान पर ले गाए। किन्तु पुलिस की वक्त पर कार्यवाही करने से इनके एक सरगने को मार दिया। उसका नाम जमील है जो हब्बाकदल का रहने वाला है। उसने अब तक बीस कत्ल किए हैं और सात बार सीमा-पार गया है। कहा जाता है कि कश्मीर में आतंक और भय फैलाने के लिए उसने सीमा-पार के हाकिमों से काफी धन जुटा लिया है।

मैं: यह जमील कौन हो सकता है? यह हमारा लाडला तो नहीं है?

पत्नी ने कुछ नहीं कहा। उसने पलकें झुकाकर खूब आंसू बहाए। उसका शरीर थर-थर कांपने लगा। कहने की बातें तो गले में ही अटक गयीं। कुछ पल के लिए वह शून्य की ओर देखकर कहने लगी-

जब पुलिस तलाशी लेने आएगी तो उनको 1,000,00 रुपए का ड्राफ्ट भी देना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं: यह कौन-सा ड्राफ्ट है?

पत्नी: इसी से आततताईयों ने मेरा बेटा खरीदा था।

मैं: तो तुमने मुझे अब तक क्यों नहीं कहा?

पत्नी: मुझे पाक कुरान पर हाथ रखवाकर राज़ को राज़दारी में रखने के लिए कहा गया था।

मैं: तो यह बात है। धर्म को राजनीति से जोड़ने वाले ये गद्दार क्या कश्मीरियों को तथा कथित आज़ादी के नाम पर बहकाते हैं। लानत है इन पर।

मैं इससे आगे कुछ नहीं समझा पा रहा हूँ। सोचता हूँ यदि पुलिस आएगी तो पहले ही प्रश्न में इन सभी बातों को इनके सामने रखूँगा।

✠ ✠ ✠

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

19 जनवरी, 1990

हाँ, यह वही दिन है! वही 19 जनवरी 1990 का दिन! एक ज़बरदस्त हलचल का दिन! यही वह दिन है जब घाटी के हिन्दू-मुसलमानों के बीच शक की एक ऊंची दीवार खड़ी हो गयी जिसको अब तक कोई भी राजनेता तहस-नहस करने में सफल नहीं हो पाया है। हाँ, यह वही दिन है! 19 जनवरी 1990! न जाने यही दिन क्यों चुना गया था शक की दीवार खड़ी करने को। यह तो मुझे आज भी पता नहीं चलता। वैसे तो उस दिन सुबह से ही घाटी में बहुसंख्यक लोग आपस में इस तरह कानाफूसियाँ कर रहे थे कि कोई सुन न पाए। इसके विपरीत अल्पसंख्यकों के मुट्ठी भर लोग घरों में बैठे भयभीत हो रहे थे, बाहर का तनावपूर्ण वातावरण देखकर। किन्तु मैं इससे डरा नहीं। तनाव तो यहाँ के लोगों का गहना है। अफवाहों पर ये हद से ज़्यादा विश्वास करते हैं और कुत्ता भी जब सड़क पर मर जाए तो ये हड़ताल करने के लिए दुकानदारों को मजबूर करते हैं। यह तो इनकी नियति है। वस्तुतः इनके पास समय है मगर काम करने को कुछ नहीं है। जब काम नहीं है तो बेकार में अपने-आपको व्यस्त रखना भी एक कला है। इनकी यह कला है पंगा लेना। मैं तो यही सोच रहा था कि दिन ढल गया और रात्रि के काले सायों ने सारी घाटी को अपनी लपेट में ले लिया। काला-स्याह अंधेरा हो गया। देखते-ही-देखते सारे गली-कूचे सुनसान पड़ गए। कुत्तों के भौंकने के सिवाय कुछ सुनायी न देता था। उस समय लगता था कि सरकार ने सारी घाटी में कर्फ्यू लगा दिया है। मगर सरकार है कहाँ? सरकार के नाम पर तो यहाँ कुछ नहीं है। रुबया सय्यद के अपहरण-काण्ड के बाद यहाँ की सरकार तमाशायी के रूप में छिन्न-भिन्न होकर रह गयी है। इस समय तो यहाँ चुस्त सरकार की ज़रूरत है जो उन मुट्ठी भर लोगों को दबा सके जो सीमा पार के कुचक्र आदेशों के बहकावे में आए हैं, उन्हीं पर नाचते हैं। उन्हीं को खुलेआम कार्यरूप प्रदान करते हैं। यही सोचते याद आया कि बूढ़ी बीमार माँ के लिए दवाई का कोटा खत्म हो गया है। क्या पता कल मिलेगा या नहीं। कल पर कोई भरोसा नहीं। मैं झट दवाई-दुकान की ओर भागा। ज्योंही मैं दुकान के पास पहुंचा, दुकानदार ने दुकान का शटर बन्द

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया। बहुत अनुनय-विनय के बाद उसने शटर खोला और कहा-'कौन है? हांगुल है। क्या चाहिए।'

मुझे गुस्सा आया उसकी इन बातों को सुनकर। यह क्या मुझे 'हांगुल' कहता है! हांगुल है इसका बाप। यदि हालात सामान्य होते तो मैं इसको यहाँ से ही घसीटकर वितस्ता नदी में फेंक देता। लेकिन इस समय मैंने गुस्सा पी लिया। इसकी ओर नुस्खा बढ़ाया और बदले में उसने मुझे दवाई की टिकियां और पैसे दिए। मैंने दवाई की टिकियां ले लीं और इसी के साथ मेरी नज़र दुकान के अन्दर लगी क्लाक पर पड़ी। इसकी सूईयां आधा घण्टा पीछे की ओर चल रही थीं। यह देखते ही मैंने इसको झट कहा-"भई, आपकी यह घड़ी गलत है। यह आधा घण्टा..."

"हाँ, मुझे पता है।" उसने कहा-"इसको कहते हैं पाकिस्तान स्टण्डर्ड टाईम।"

मैंने उसकी ओर ध्यान से देखा और वहाँ से खिसक गया। मैं सोचने लगा क्या बात यहाँ तक पहुंच गयी है? लोग अब पाकिस्तान स्टण्डर्ड टाईम के अनुसार काम करने लगे हैं, जबकि यहाँ पांच लाख हिस्दुस्तानी सेना मौजूद है। आखिर यह क्या माजरा है? हमें क्यों नहीं पता लगता।"

घर पहुंचने पर दवाई वाले ने मुझे जो पैसे वापस दिए थे, उनको देखकर मुझे कुछ कम आश्चर्य नहीं हुआ। यह सब पाकिस्तानी मुद्रा थी। हाँ, बात तो यहाँ तक पहुंच गयी है और हमें खबर तक नहीं। न जाने क्या होने वाला है और हम अपने ही हाल पर सांस ले रहे हैं।

इसी के साथ मैंने टीवी खोला। यहाँ दिखा रहे थे कि रूस से मुसलमान राज्य कैसे एक के बाद एक इस महाशक्ति से बिछड़ते जा रहे हैं जैसे एक भारी-भरकम पेड़ से फल गिर रहे हैं। रूस का एक बड़ा भाग कटता जा रहा है और यह वही रूस है जिसने कश्मीर का भारत के साथ विलय का हमेशा से समर्थन किया है। कश्मीर का अब क्या होगा? क्या यह भी भारत से टूटकर रहेगा! मुझे तो लगता नहीं मगर यहाँ के कुछ लोगों को इस बात पर अडिग विश्वास हो गया है। इनको यह पता नहीं कि यदि कश्मीर भारत से कटकर अलग होगा तो रूस की तरह भारत के भी टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। क्या भारत की आम जनता ऐसा होने देगी? कदापि नहीं। मैं तो यही सोच रहा था कि बाहर से न जाने यह क्या हो गया! पास वाली मस्जिद के माईक से एक ज़ोरदार आवाज़ आयी-

'नारा-ए तकबीर अल्लाह हो अकबर'

यह आवाज़ इतनी गरजी कि इसके साथ कुत्ते भी भौंकने लगे। यह नारा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दो-तीन बार दोहराया गया। ऐसा लग रहा था कि मस्जिद के अन्दर कई आतंकवादी घुसे बैठें हैं जो भय और आतंक का वातावरण उत्पन्न करना चाहते हैं। शायद यहाँ के अल्पसंख्यकों को धमका रहे हैं। मगर किसलिए? यह तो उस समय मेरी समझ में नहीं आया। इसी के साथ मस्जिद के आस-पास लोगों का तांता बंध गया, कट्टरपंथी मुसलमानों का। इनमें से कई अल्पसंख्यकों के मकानों में घुस गए और पंडितों को घरों से निकलने पर यह कहकर मजबूर किया-

'यह जेहाद है। इसमें हम सबको शामिल होना है। देखते नहीं कि रूस जैसी महाशक्ति टूट गयी महज़ मुसलमानों के दम पर। हिन्दुस्तान की बिसात क्या है? यही समय है जब हम कश्मीरियों को इससे अलग होना चाहिए। भला क्या समझ रखा है हमें इन हिन्दुस्तानी कुत्तों ने? बकरी या गाय'।

मैंने चुपके से सब सुना। इस समय सवाल-जवाब पर उतर आना मुनासिब नहीं था। जान किसी तरह बच जाए, वही काफी था। इतने में अल्पसंख्यकों के कई सदस्य अनिच्छा से इनके साथ मिल गए। मिले क्या, इनको अब अपने घर वापस आने की कोई आशा नहीं दिखती थी। इस तरह कुछ ही मिन्टों में मस्जिद के आस-पास लोग ही लोग जमा हो गए। इतने में लाऊड स्पीकर से एक बार फिर यह आवाज़ गरजी-

'नारा-ए तकबीर अल्लाह हो अकबर'

मैंने सुना और अपने-आपसे कहा कि यह कहाँ की शराफत है। ग्लैनसी कमिशन, जो महाराजा हरि सिंह के राजकाल में अंग्रेज़ों ने बिठाया था, की रिपोर्ट के आधार पर मंदिर, मस्जिद या गुरुद्वारों में लाऊडस्पीकर मात्र अज़ान, भजन या पाठ आदि के लिए रखे गए हैं और आज इनका दुरुपयोग लोगों को भड़काने, बहकाने या भगाने के लिए क्यों किया जा रहा है? मैं तो यही सोच रहा था कि इतने में मस्जिद के लाऊडस्पीकर से एक और भयानक आवाज़ की गूँज सुनाई दी-

'ऐ काफिरो, ऐ जाबिरो, वतन हमारा छोड़ दो'

यह सुनते ही मेरे पांव के नीचे से ज़मीन सरक गयी। अरे, ये क्या बक रहे हैं? यह किनको कह रहे हैं? शायद उन्हीं को कह रहे हैं जो हिन्दुस्तान के हिमायती हैं। किन्तु सोचने की बात है कि जाबिर कौन हैं और वतन किनका है? वतन तो हम सबका है और हम सब कश्मीरी हैं। और सबसे बड़ी बात तो यह कि हम कश्मीरी होने के साथ-साथ हिन्दुस्तानी भी हैं। किन्तु सोचने की बात है कि यह सब किनको कहा जा रहा है-काफिरों को? आश्चर्य इस बात का है कि आज तक यहाँ के

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुसलमान ने कभी हिन्दू को काफिर नहीं कहा है। यह शब्द किससे सीखा है इसने? यह तो उन मुल्लाओं की कारिस्तानी लगती है जिनको कट्टरपंथ पर विश्वास है। वस्तुत: गत् कई वर्षों से ये मुल्ला यहाँ विशेषतया उत्तर प्रदेश और बिहार से आकर बस गए हैं। इन्होंने यहाँ की मुसलमान लड़कियों से शादी की। इनके बाल-बच्चे हुए हैं और अब यहीं के होकर रह गए हैं। ये तो अपने प्रदेश का नाम तक नहीं लेते। ये तो यहाँ इस्लाम का प्रचार करते हैं और इसी के साथ यहाँ के मुसलमानों में हिन्दूओं के प्रति घृणा का विष घोल देते हैं। क्या इनको पता है कि काफिर किस जन-जाति का नाम है? मैं तो यही सोच रहा था कि बाहर से तड़-तड़ गोलियों के चलने की आवाज़ सुनायी दी। इसी के साथ ज़बरदस्त बम-विस्फोट हुआ। इतने में मस्जिद के लाऊडस्पीकर से एक बार फिर यह आवाज़ सुनायी दी-

'ऐ काफिरो, ऐ जाबिरो, वतन हमारा छोड़ दो'

इस वक्त मैं यह सुनकर घबराया। बूढ़ी बीमार माँ बिस्तर से निकल कर कहने लगी-'अरे क्या करते हो बेटा! यहाँ से भागने की तैयारी करो। सुनते नहीं। यह क्या कहते हैं? यह हमें यहाँ से भगाने की खुलेआम चेतावनी दे रहे हैं'।

मैंने सुना और कहा कुछ नहीं। अपनी चिन्ता नहीं थी मुझे पड़ोस के त्रिलोकीनाथ की जवान बेटियों की चिन्ता लग गयी। कहीं उठा न ले कोई इनको बन्दूक के बल पर। मैंने झट त्रिलोकीनाथ को आवाज़ दी किन्तु वहाँ से किसी ने कुछ नहीं कहा। मैं शक में पड़ गया। अंत में स्वयं उस काली-स्याह रात्रि में पास वाली छोटी गली को पार कर उसके घर गया। दरवाज़े पर दस्तक दी किन्तु खोला किसी ने नही। मैंने एक बार फिर दरवाज़े पर दस्तक दी और कहा कि मैं हूँ, कोई गैर नहीं है तो त्रिलोकीनाथ ने स्वयं दरवाज़ा खोला। ज्योंही मैं मकान के सहन में आया तो मुझे आश्चर्य हुआ। त्रिलोकीनाथ सपरिवार सहन में बैठा था। ठिठुरती सर्दी से उसके हाथ-पांव जकड़ गए थे। वह तो सिर्फ सुबह होने के इन्ज़ार में था ताकि वह अपनी जवान बेटियों के साथ यहाँ से खिसक जाए। उसकी ये बेटियां नंगे पैर खड़ी थीं। वे तो बहुत घबरायी हुईं थीं। मैंने त्रिलोकीनाथ से पूछा-"आप कहाँ जा रहे हैं?"

"बानिहाल के पार किसी भी जगह"-उसका उत्तर।

"बस, इस तरह?"-मैंने पूछा।

"हाँ, मैं हूँ न हांगुल। मेरी जान को खतरा है। जब मैं न रहूँगा तो मेरी ये बेटियां. ....." बात को काटकर उसने एक लम्बी आह भरी।

"हांगुल? मैं समझा नहीं"-मैंने कहा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"हाँ जिस पंडित को इन्हें कत्ल करना होता है, उसको ये हांगुल कहते हैं। पता है हांगुल क्यों कहते हैं?"–उसने कहा।

"नहीं, मेरी समझ में कुछ नहीं आता।"–मैंने कहा।

"जिस तरह हिरणों की प्रजाति में हांगुल सिर्फ कश्मीर में मिलता है उसी तरह ब्राह्मणों में एक विशेष ब्राह्मण-जाति पंडितों के रूप में कश्मीर में मिलती है। जंगलों से हांगुल का इन्होंने सफाया किया है, अब पंडितों की बारी है। इनको या तो मारना है या तितर-बितर करना है।"–त्रिलोकीनाथ ने सविस्तार कहा।

मैंने सुना और दवा बेचने वाले की शक्ल-व-सूरत आंखों के सामने आयी। उसने भी मुझे हांगुल कहा था। मुझे मारने के इरादे तो नहीं हैं उसके।

इतने में मस्जिद के लाऊडस्पीकर से एक ज़ोरदार आवाज की गर्जना हुई। किन्तु अब की बार इसमें बहुत बड़ा परिवर्तन था, नारा कश्मीरी में था :

'असि गछि आसुन पऽकिस्तान बटव रो'स तॅ बटॅन्यव सान'

(हमें चाहिए पाकिस्तान पंडितों के बिना, पंडितानियों सहित)

"सुना यार, क्या कहते हैं। पंडितों को खत्म करना है। पंडितानियों को रखेल बनाना है और कश्मीर को पाकिस्तान बनाना है। इस सूरत में हमारी बहु-बेटियों की इज़्ज़त आबरु सुरक्षित नहीं है? इन्होंने अपने मुसलमान भाई, जो गृह मंत्री के पद पर आसीन है, की बेटी का अपहरण किया तो हमारी बहु-बेटियां किस खेत की मूली हैं। हमें तो यहाँ से भागना चाहिए, अपनी जान बचाने के लिए नहीं बल्कि अपनी बहु-बेटियों की इज़्ज़त बचाने के लिए। इसीलिए मैं यहाँ खड़ा हूँ कि कब सुबह हो और मैं खिसकूं।"

मैंने त्रिलोकीनाथ की बातें ध्यान से सुनीं और वहाँ से चल दिया। सच कहता है त्रिलोकी। मुझे भी भागने के लिए कुछ न कुछ सोचना चाहिए। मगर करुँ क्या, बीमार बूढ़ी माँ को कहाँ ले जाऊँ। कबाइली हमले के वक्त यह भागने के लिए तैयार हो गयी थीं मगर उन दिनों जवान थी। इस समय इसकी काया जर्जर हो गयी है। बस या टैक्सी में ज़्यादा देर तक बैठ नहीं सकती। मेरी समझ में नहीं आता कि यदि भागूंगा तो कहाँ? उधमपुर–नहीं, कटरा–नहीं, जम्मू–हाँ यह ठीक जगह है बशर्ते कि जम्मू वाले वहाँ बसने दें। इतने में मस्जिद के लाऊडस्पीकर से एक और नारा लगा किन्तु अब की बार इसने चोला बदला–

"कश्मीर में रहना है, निज़ामे-मुस्तफा कहना है।" अरे यार, यह कौन सी तुक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। यह सत्य है कि कई मुस्लिम देश इस समय 'निज़ामे-मुस्तफा' के नाम पर जीवित हैं किन्तु यह एक नारा है। वस्तुत: इसका चलन कहीं नहीं है। फिर भी यहाँ इसके नाम पर लोगों के साथ ज़बरदस्ती हो रही है, महिलाओं को ज़बरदस्ती बुरका पहनाया जा रहा है जबकि सीमा के उस पार पाकिस्तान में यह पहनावा शनै-शनै खत्म होता जा रहा है। शराब की दुकान लूटी गई और शराब के सेवन करने वालों को मारने की धमकी दी गयी। यह दूसरी बात है कि लुटेरों ने जो शराब लूटी वह बाद में स्वयं पीली, और जो शराब पीने वाले हैं, वह जम्मू जाकर खुले आम शराब पीते हैं। सिनेमा-थियेटरों को बन्द किया गया ताकि कोई फिल्म देख न ले। किन्तु उन लोगों ने क्या सोचा है इन्होंने जो टेलिविजन पर विभिन्न चेनलों के माध्यम से दिन-रात फिल्म देखते हैं और वह भी घर बैठे आराम से। उन लोगों की भी कमी नहीं है जो जम्मू जाकर सिनेमा थियेटरों में फिल्में देखते हैं। इससे भी बढ़कर सोचने की बात तो यह है कि जो मुस्लिम देश 'निज़ामे-मुस्तफा' के नाम पर जीवित हैं, क्या वहाँ के लोग फिल्म नहीं देखते हैं? क्या वहाँ सिनेमा हाल मौजूद नहीं है? दुनिया बदल गयी है और हम वहीं लकीर के फकीर हैं। वस्तुत: हम कश्मीरी हर समय दूसरों के बहकावे में आए हैं और यही कारण है कि हमारा शोंषण हो रहा है-मैं तो यही सोच रहा था कि मस्जिद के लाऊडस्पीकर से एक और आवाज़ आयी किन्तु इस परिवर्तन के साथ-

"आज़ादी का मतलब क्या? निज़ामे मुस्तफा!"

मैंने सुना और इस एक वाक्य पर ध्यान देकर सोचने लगा। समझ में कुछ नहीं आ पा रहा है कि ये क्या कह रहे हैं। कभी विद्रोह भड़काना, कभी पाकिस्तान मांगना और कभी आज़ादी की दुहाई देना-आखिर ये क्या मांगते हैं? इनको क्या चाहिए? धर्म को आज़ादी से जोड़ना कहाँ की बुद्धिमत्ता है? आज़ादी और वह किस से? हम कब के आज़ाद हुए हैं। हम आज़ाद देश में रह रहे हैं और हमारा भविष्य इसी के साथ सुरक्षित है।

इसी बीच सुबह हुई। पक्षियों के मधुर कलरव के साथ ही त्रिलोकीनाथ अपनी जवान बेटियों के साथ मात्र अपनी इज़्ज़त -आबरु बचाने के लिए घर से निकले और बस-अड्डे की ओर रवाना हुए। मुझे गुस्सा आया त्रिलोकी पर। कैसा आदमी है यह भी! क्या वह लाऊडस्पीकर की इन आवाज़ों से इतना डर गया? वैसे तो इसने अच्छा किया। उसका यह कदम सही है। इस समय हालात तो हमारे पक्ष में नहीं हैं। सरकार ही नहीं है तो हमारी सुरक्षा डांवाडोल होकर रह गयी है। बहुसंख्यकों के एक वर्ग में बन्दूक आ गयी है। बन्दूक चलाने की रिहर्सल हम पर हो रही है। शायद मैं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भी बन्दूक का निशाना बन जाऊंगा यदि मैं यहाँ से न खिसकूंगा क्योंकि दवावाले ने मुझे हांगुल कहकर चेतावनी दी है। मगर मैं करुँ क्या! बूढ़ी बीमार माँ के लिए परेशान हूँ। वह तो यहाँ से भागने के लिए तैयार हो जाए तो सही। नहीं तो उसको किसी दिन बेटे की लाश देखनी पड़ेगी। क्यों न मैं उसी से सलाह-मशविरा कर लूं। उसने ज़िन्दगी के चार दिन देखे हैं। जो वह कहेगी, मुझे मान्य होगा।

दूसरे ही क्षण मैं माँ के कमरे में आया। माँ सिर नीचे झुकाए अपने-आपसे कह रही थी' कश्मीरी में-*बटॅ कूटॅ कटॅ मज़ार, कनिकूट तॅ पतॅ कशीरि मंज़ काह गरॅ*।

आश्चर्य हुआ मुझे यह सुनकर। जो हमें पता नहीं वह इस बुढ़िया को पता है। 'बटॅकूट' वह गांव है जहाँ पठानों ने पंडितों को मारकर पीसा था, बटॅ मज़ार डल झील के पास कब्रिस्तान है जहाँ पंडितों को मार कर दफन किया गया था, कनिकूट वह गांव है जहाँ पंडितों को पत्थर मार-मारकर मारा गया था और इसके बाद वह समय भी आया जब सारी कश्मीर-घाटी में केवल पंडितों के ग्यारह परिवार बचकर रह गए*। माँ को यह सब याद है।

"मां! क्या बड़बड़ा रही हो?"-मैंने पूछा

"कुछ नहीं पुत्र। सोचती हूँ समय हमेशा आगे बढ़ता है किन्तु हमारे लिए यह दुखद घटनाएं लेकर पीछे की ओर मुड़ता है। मगर हमने अपनी जान दी, किन्तु अपनी पुरानी संस्कृति पर आंच नहीं आने दी।"-उसका उत्तर।

"मां, यहाँ से भागना है। बस मैं बैठने की हिम्मत है?"-मैंने पूछा।

"मुझे पता है कि यहाँ से भागना है। रही हिम्मत की बात, कबाईली हमले में मैं पैदल भागने पर तैयार हो गयी थी, इस समय तो बस में जाना है। मगर हम यहाँ से अपने साथ क्या लेंगे"? उसने पूछा।

"बस, कुछ नहीं। अर्श पर थे, अब फर्श पर बैठना है। सब कुछ यहीं छोड़ना है, सिर्फ किसी तरह जान बचानी है।"-मैंने कहा।

"क्या बकते हो। मैं तो गठरी में एक फिरन, लुंगी और दो जोड़े *तरंग-कलपोश* ज़रूर लूंगी। वहाँ क्या मैला फिरन पहनूंगी?"-मां ने कहा।

"ये चीज़ें लेने की कोई ज़रूरत नहीं। वहाँ गर्मी है। आपको मैक्सी या साड़ी पहननी पड़ेगी।"-मेरा उत्तर

---

* *कश्मीरी पंड़ितों पर ये जुल्म पठान (अफगान) शासन-काल में हुए।*

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"नहीं, मैं ये कपड़े नहीं पहनूँगी। मेरे इन कपड़ों का मेरी संस्कृति से घनिष्ट संबंध है। भले ही मैं वहाँ गर्मी के प्रकोप से मर जाऊं मगर मैं यहाँ का सदियों पुराना पहनावा पहनना नहीं छोड़ूंगी।"–उसके स्पष्ट शब्द।

इतने में बाहर से महिलाओं के रोने-धोने तथा चीख-पुकार की आवाज सुनाई दी। मैंने खिड़की से झांककर बाहर की ओर देखा, काशीनाथ के मकान के सामने ऐम्बुलेंस खड़ी थी। जब इसका दरवाज़ा खुला तो पहले दो पुलिस वाले निकले, इसके बाद सफेद चादर में चार आदमी एक लाश को उठाकर मकान के अन्दर ले गए। यह देखते ही मैं झट सड़क पर आया और वहाँ एक आदमी से पूछा–"यह कौन मर गया?"

"काशीनाथ का बेटा"–उसका उत्तर।

"अरे, इसको मैंने कल शाम को ही देखा"–मैंने कहा।

"ठीक कहते हो। मगर उस पर हांगुल की लेबल लगी थी ना, इसलिए मारा गया।"–उसके स्पष्ट शब्द।

"हां हांगुल!"–यह कहते ही वह चला गया। इतने में मुझे पता नहीं कि मैं कब बूढ़ी माँ को लेकर बस अड्डे पर पहुंचा। वहाँ मेरी ही तरह बहुत सारे लोग जमा हो गए थे।

बाद में पता चला कि मस्जिद के लाऊडस्पीकरों से धमकियों की अनुगूंज सिर्फ मेरे मोहल्ले में ही नहीं हो रही थी बल्कि यह एक ही समय एक-साथ सारी घाटी में हो रही थी।

कुछ वर्ष पहले ईरान में भी इस तरह का प्रयोग हुआ था, मगर यहाँ यह कपट-नीति शत-प्रतिशत सफल रही– लगभग सभी अल्पसख्यकों को कश्मीर से भगाने में! हाँ, यह वही दिन है–19 जनवरी 1990 ई०का दिन!

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लाल धब्बे

धब्बे! खून के! लाल-लाल! तारकोल से पुती हुई सड़क के उस चौराहे पर! इनको देखते ही सभी को भय लगता था किन्तु इनके देखने के लिए यहाँ इतने लोग जमा क्यों हो गए हैं? धक्कमपेल। मुझे भी पता नहीं चला कि इन्हीं लोगों में मैंने किस तरह अपना स्थान बना लिया जबकि मेरा इस ओर जाने का निश्चय नहीं था और वह भी सर्दी की ठिठुरन में।

वैसे, उस समय तो ऐसा लगता था जैसे कुछ हुआ ही नहीं है। सिर्फ सड़क के उस चौराहे पर लाल धब्बे पड़े हैं। खून के! किन्तु लोगों के इस तरह जमा होने से ऐसा लग रहा था कि बात कुछ और ही है।

हाँ, आज की ताज़ा ख़बर है कि पूर्व कश्मीर में आम जनता के कुछ शरारती तत्वों ने मुट्ठी भर अल्पसंख्यकों के घर जलाए हैं, इनके मंदिरों को बड़े पैमाने पर क्षति पहुंचायी है, इनकी औरतों पर तरह-तरह के अत्याचार किए हैं। इस समय इनके कई सौ कुन्बे जान बचाने के लिए कालिज के अहाते में जमा हो गए हैं। इस तरह से इनके प्रति इन्होंने अत्याचार के इतिहास की घटना को आठवीं बार दोहराया है। घटना दोहरायी है तो क्या हुआ। वैसे तो इसके साथ आम लोगों का कोई सरोकार नहीं। यह तो मुट्ठी-भर समाज-विरोधी तत्वों का काम है जो एक दूसरे के बीच नफरत, भय, आतंक की बारूदी दीवारें खड़ी करना चाहते हैं और इसका जीवंत उदाहरण है इस चौराहे पर ये धब्बे! खून के लाल-लाल धब्बे! किन्तु उस समय आम -जनता ने इसकी ओर भी कोई ध्यान नहीं दिया। इसके लिए इन्होंने विरोध भी प्रकट नहीं किया। मगर सोचने की बात यह है कि ये विरोध प्रकट करते भी तो किससे? जब सरकार ही नहीं है तो किससे फरियाद करते। इस सूरत में ज़मीन पर लाल धब्बे नहीं पड़ेंगें तो और क्या होगा? किन्तु ये भूताकार की तरह क्यों फैलते जा रहे है? ऐसा लगता है कि विषैले नाग ने अपना फन कब का फैलाया है जिसके प्रति पहले-पहल लोगों का ध्यान नहीं गया किन्तु जब कुछ समय के लिए ये पूरी तरह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फैलकर विचित्र एवं भयावह चित्राकृतियों में तबदील हो गये तो सभी ने कह दिया कि अब आग लगने वाली है। तिसपर जितने मुंह उतनी बातें। वजह है कि इस बार बिगड़ते हालात पर अंकुश लगाना किसी के बस में नहीं रहा और इस तरह से ये लाल-धब्बे सभी की नज़र में सन्देहास्पद बनने लगे हैं।

तभी इन्हीं लोगों में से एक ने कहा कि इस समय धरती पर चारों ओर खून बह रहा है। सब जगह खून के लाल-धब्बे पड़े हैं। यदि यहाँ भी हो रहा है तो यह कौन सी बड़ी बात है। यह सब तो आकाश पर पुच्छल तारे का चमत्कार है। न जाने आने वाले छियत्तर वर्षों में क्या-क्या देखना है।'

'कैसी बातें करते हो? इसको कहते हैं अन्धविश्वास।'-यह सुनते ही दूसरा भड़क कर बोला-'पुच्छल तारे का लाल-धब्बों के साथ क्या संबंध?'

'कुछ नहीं।'-तीसरा बोला-'आपका कहना सत्य है। वस्तुत: सच यह है कि यहाँ हमारे में से किसी का खून किया गया है और खून बहने से सड़क पर ये लाल धब्बे पड़ गए हैं जो न जाने क्यों इस तरह फैलकर विचित्र किन्तु भयावह चित्राकृतियों में प्रतिपल बदलते रहते हैं। यही तो देखना है कि इसका क्या कारण है?'

'कारण कुछ भी हो किन्तु यह हमारे लिए चेतावनी है। अब हमें यहाँ से निकलने की तैयारी करनी चाहिए तभी तो हम आतंक और भय से बच सकते हैं।' तीसरा बोला।

'यहाँ से निकलोगे तो बसने के लिए कहाँ जाओगे? इसके बारे में सोचा है क्या?'-चौथे का प्रश्न।

'निरपराध मरने से बेहतर है यहाँ से सुरक्षित स्थान की ओर पलायन करना'-पहले ने कहा।

'अरे यार, हम क्यों यहाँ से पलायन करेंगे? हमारी सुरक्षा के लिए यहाँ इतनी सेना है, वह हमें इन दरिन्दों से बचा नहीं सकती?'-तीसरे ने कहा।

'यही तो हमारा भ्रम है। सेना तो सीमा की सुरक्षा करती है। हमें तो अपनी सुरक्षा स्वयं करनी है।'-पहले ने एक बार फिर कहा।

दूसरे ने एक लम्बी आह भरकर कहा-'हम न पलायन करने और न ही यहाँ रहने की स्थिति में हैं। हमें पहले निरपराध मारा जाएगा, तत्पश्चात् यहाँ से भगाया जाएगा।'

'क्यों?'-सभी ने एक साथ पूछा।

'अत्याचार तो निर्दोष एवं निरपराध लोगों पर ही किया जाता है।'-दूसरे ने तुनक कर कहा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं मूक-सा खड़ा यह सब सुन रहा था। लोग कुछ भी कहें, मगर यह सत्य था कि यहाँ इस चौराहे पर लाल धब्बे पड़े थे। यह तो पहली घटना है कि इस तरह हुआ है। इनको देखकर सभी को भय लग रहा है। कत्ल नाम से यहाँ सब घबराते हैं और कत्ल करना ये जानते ही नहीं। इसके विपरीत इस तरह की घटनाएँ अन्य नगरों में आए दिन होती रहती हैं। इनकी गणना करना असंभव ही नहीं, मुश्किल भी है। इस बीच मेरी समझ में नहीं आया कि यह क्यों हो गया, कब हो गया और कैसे हो गया? वैसे तो, जानता भी कैसे? मैं तो इस भीड़ में बुत की तरह खड़ा सोच के बियाबानों में भटक रहा था। मेरी इस सोच की भटकन ने मुझे शताब्दियों से पहले मौजूद इस हरी-भरी एवं रंगारंग फूलों की वाटिका के इतिहास को टटोलने में लगाया। मुझे यही लगा कि यहाँ के निवासियों के नस-नस में शताब्दियों से एक-दूसरे के प्रति प्रेम और भाईचारे का खून दौड़ा करता था। इसपर हमको ही नहीं, देश-विदेश के लोगों को गर्व है। यही कारण है कि सब इसका नाम सम्मान से लेते हैं। वस्तुतः बात तो यह है कि इस वाटिका का सिंचन तो हम सभी ने एक-साथ किया है। इसको अपने हाथों से सजाया है, संवारा है तथा इसमें पुष्पित एक-एक पुष्प को महकाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी है। इसकी कठिन से कठिन समय में भी सुरक्षा प्रदान करके सारी दुनिया को यह दिखाया है कि हमें भाईचारे की इस वाटिका से कितना प्रेम है! हम इसको कितना चाहते हैं! हम रहें या न रहें किन्तु हमारी यह वाटिका कई सौ पीढ़ियों तक सौहार्द का वसंत लेकर सर-सब्ज़ रहेगी। आज भी यह वाटिका उसी तरह हमारे बीच वैसी की वैसी है-नवयौवना की तरह। दुनिया में जब कहीं भी अत्याचार, भय एवं मारधाड़ की चिंगारियां भड़क उठती हैं तो वहाँ के लोग हमारी इस वाटिका में आकर यहाँ भाईचारे के रंगारंग फूलों से अपनी आंखें निहाल करते हैं। इसके बाद अपने देश में इसकी महक की याद लेकर वहाँ भाईयों की तरह रहने लगते हैं। वस्तुतः हमारी यह वाटिका सारी दुनिया में शान्ति के प्रतीक के रूप में मशहूर है। हमारे भाईचारे की रंगारंग फूलों से भरी वाटिका की ओर देखकर ही बीसवीं शती के युग-प्रवर्तक महात्मा गांधी ने अपनी आंखें निहाल की थीं। उनको पृथ्वी के इस भू-स्वर्ग पर आशा की किरण दिखाई दी थी।-यही सोचकर मैंने एक लम्बी आह भर ली। मैंने आस-पास की ओर देखा। किन्तु वहाँ कोई नहीं था। सब चले गए थे। मैं एकदम सोच की इस भटकन से निकलकर फिर इन्हीं लाल धब्बों की ओर देखने लगा जो अब तक पूरी तरह फैलकर भूताकार शकलों में परिणित हो गए थे, किन्तु जो इनको देखने के लिए अभी जमा हो गए थे, वह कहाँ है? वे कहाँ गए? यहाँ तो केवल मैं ही अकेला खड़ा हूँ। इस समय यहाँ चारों ओर सन्नाटा दिखता

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। सड़कें खाली हैं। सब कुछ वीराने में बदल गया है। इतने में मुझे पीछे से किसी के चलने की आहट सुनाई दी। मैंने पीछे की ओर देखा। हाँ, यह वही था जो खाकी वर्दी पहने लोहे का टोप लगाए तथा कंधे पर बन्दूक लिए वहाँ से मुझे हटने के लिए कह रहा था। उसको देखकर मैं वहाँ से एकदम हट गया किन्तु मैं अपने-आपसे पूछने लगा :

'आखिर क्यों?'

प्रत्युत्तर में न जाने कहाँ से आवाज़ आयी-'ज़बरदस्त बर्फ बारी और बारिश से हमारी वाटिका के सुन्दर फूल अस्थायी तौर पर गुमराही के गर्त में विलीन हो गए हैं। शीतकाल खत्म हो, बर्फ पिघले और बहार आने पर ये फिर से खिलकर महक उठेंगे!'

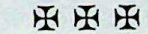

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आंख फड़कती है

हाँ, उसकी आंख फड़कती थी। मैंने उसकी आंखों की ओर ध्यान से देखा। बाहर से तो कुछ नहीं दिखता था किन्तु उसकी आंखों में लाल-लाल डोरे से स्पष्ट दिखाई देते थे-मकड़ी के बुने जाल की तरह। मैंने एक बार फिर इनकी ओर देखा। अंत में पूछा-'आपकी आंख के अन्दर से कसक तो नहीं होती?'

'नहीं, सिर्फ आंख फड़कती है।'-उसका उत्तर।

'दायीं या बायीं?'-मेरा प्रश्न।

'जनाब, बायीं आंख फड़कती है इसीलिए परेशान हूँ। इसको अपशकुन कहते हैं न।'-उसने कहा।

मैंने सुना और कुछ कहा नहीं। दायीं हो या बायीं, मुझे तो उसके साथ कोई सरोकार नहीं। मैं तो केवल आंख फड़कने का कारण जानना चाहता था। मैंने एक बार फिर उसकी आंखों की ओर ध्यान से देखा किन्तु वहाँ कुछ नहीं दिखाई दिया जो पहले दिखता था। मेरी समझ में कुछ नहीं आया कि उसकी इन आंखों को कैसे रोग मुक्त करुं। अंत में मैंने यों ही पूछा-'देर रात गए तक किताबें तो नहीं पढ़ते हो?'

'हाँ, किताबें पढ़ने का मेरा शौक बचपन से है।' उसका उत्तर।

'कौन सी किताबें पढ़ते हो?'-मेरा प्रश्न।

'इस समय मैं कश्मीर से संबंधित पुस्तकों का अध्ययन कर रहा हूँ। *राजतरंगिणी, श्रीकंठ चरित्र, विक्रमदेव चरित्र, ललेश्वरी वाक्याणि*-उसने एक ही सांस में कहा।

यह सुनते ही मैंने उसकी आंख का रोग पहचान लिया। मैंने उसकी आंखें एक बार फिर ध्यान से देखीं। आंख की सफेदी पर पड़े वही लाल-लाल डोरे। मकड़ी के बुने जाल की तरह। मैंने पूछा-'किताबें पढ़ने के बाद आप स्वपन तो नहीं देखते?'

मेरा इतना ही कहना था कि उसका चेहरा चमकने लगा। वह एक ही सांस में कहने लगा-'क्यों नहीं यार। अच्छी सी किताबें पढ़ने का मेरा तो यही उद्देश्य है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसीलिए रात गए तक मैं इन किताबों को पढ़ता हूँ। फिर मीठी-मीठी नींद सोता हूँ। स्वपनों की दुनिया में खो जाता हूँ। स्वपनों की यह दुनिया मेरे लिए मधुर और हसीन है। मैं देखता हूँ कि नन्दन-कानन कश्मीर के लोग तो हर तरह से सुखी हैं। पहले की तरह अब इनका शोषण नहीं हो रहा है। कश्मीर भारत का मुकुट है और यहाँ बसने वाले लोग इस पर लगे हुए मुक्ता-मणि हैं। यदि इस धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यही है, यही है, बस यही है। दुनिया भर के लोग सैलानियों के रूप में यहाँ आते हैं। कुछ समय के लिए विश्राम करने के बाद जब ये इस भू-स्थली को स्वर्ग से भी सुन्दर देखते हैं तो ये इह लोक यही व्यतीत करना चाहते हैं। यहाँ के लोग सुन्दर हैं, इनके रहने का ढंग साधारण है, इनका दूसरों के प्रति व्यवहार भाईयों जैसा है। ये आज भी ऋषि मुनियों की वाणियों से प्रभावित रहे हैं, उन्हीं की तरह रहते हैं दुनिया के झंझट-झमेलों से दूर रहना चाहते हैं।'

'इससे आगे तो कुछ नहीं देखते?'-मैंने बात को काटकर कहा।

'जनाब, सच तो यह है कि इसके बाद मेरे दिल की धड़कन इतनी तेज़ हो जाती है कि जैसे मुझे कोई जगाता है। इसके बाद आंख फड़कती है।'-वह एक ही सांस में बोला।

उसकी एक बात भी मेरी समझ में नहीं आयी। सिर्फ इतना ही जान पाया कि आंख के साथ-साथ इसके दिल पर भी असर पड़ गया है। इस बीच मैंने उससे एक और प्रश्न किया-'आपके कमरे में किसी माननीय नेता का चित्र तो नहीं है?'

उसने मेरी ओर देखा मगर बोला कुछ नहीं। इससे मैंने एकदम जाना कि मेरी बात सत्य है। अंत में मेरा अंतिम प्रश्न-'इसके सिवाय आपको कुछ और भी महसूस हो रहा है?'

'बस, आंख फड़कती है, इसलिए आपके पास आया हूँ'। -उसका छोटा सा उत्तर।

यह सुनकर मैं असमंजस में पड़ गया। इस समय मुझे उस पर गुस्सा आया कि इसने रोग को चरम-सीमा पर क्यों पहुंचा दिया है। इस रोग ने अब दिल पर भी असर कर डाला है। इस रोग के मूल अब शरीर को चीरकर इसके महत्वपूर्ण अंग दिल के चारखानों में फैल गए हैं। अब मुझे इनको उखाड़ना है और रोगी को रोगमुक्त करना है। वस्तुत: एक डॉक्टर की हर समय यही कोशिश रहती है कि वह रोगी को उसकी अंतिम सांस तक बचाने में सफल हो जाए। मैंने पूरी जांच-पड़ताल करने के पश्चात् उसको रोग-मुक्त करने के लिए दवाई दी। इसके बाद समझाते हुए कहा-'भई,

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आपके रोग को दूर करने में दवाई उतनी कारगार या असर कारक नहीं हो सकती जितना कि परहेज़। क्योंकि यह एक मानी हुई बात है कि परहेज़ इलाज से बेहतर होता है।'

'हाँ, यह तो मुझे भी पता है।'–उसका उत्तर।

'तो फिर ये किताबें पढ़ना छोड़ दे यार!'–मैंने कहा और अपना कीमती समय किताबों के अध्ययन करने या तस्वीरों को देखने में खराब नहीं करो।'

'क्यों?'–उसने मुझे इस तरह पूछा जैसे मैंने कोई गाली बकी हो।

'इसको रचना कहते हैं। इनसे आपके आंखों को रीएक्कशन हो रही है।'–मैंने समझाते हुए कहा।

'आप यह क्या कह रहे हैं डॉक्टर साहब? किताबों के अध्ययन करने से मुझे अंधेरे में उजाला दिखाई देता है।'–उसने एक ही सांस में कहा।

'आप तो मेरी बात को गलत समझते हैं। इसके सिवाय तो इस समय पढ़ने को बहुत कुछ है।'–मेरा छोटा-सा उत्तर।

'हाँ, यही तो मैं जानना चाहता हूँ। इस समय यदि मैं पढ़ूँ तो क्या? मेरी सारी उम्र तो अध्ययन करने में ही बीती है।'–उसने कहा।

'यह ज़रूरी नहीं कि आप बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ें। पढ़ने को तो बहुत कुछ है। जैसे हर दिन अखबारों की सुर्खियां देख लें। हाँ, जब आप ध्यान से सभी अखबार पढ़ेंगे तो आपकी आंखें खुल सकती हैं। इस शती के अंत तक आपकी आंख फड़कने का सवाल ही पैदा नहीं होता'–मैंने सविस्तार समझाते हुए कहा।

'इसके बाद मैं सुहावने स्वपन देखूँगा कि नहीं?'–उसने पूछा।

'नहीं। आप स्वपन-निद्रा से जागकर जीवन जीने का असली या वर्तमान रूप देख लोगे।'–मेरा उत्तर।

'मैं समझा नहीं।'–उसका आश्चर्य।

मैंने उसकी ओर ध्यान से देखा। कहा–'इसी से आप को इस दुनिया का असली अंधकार दिखाई देगा। इसके बाद आप महसूस करोगे कि जो सपने आप देखते हैं वे कहाँ तक इस बदलती हुई दुनिया में सत्य की कसौटी पर सही उतरते हैं। आपको दुनिया की असली तस्वीर नज़र आएगी।'–मैंने एक बार फिर सविस्तार कहा।

'तो इसका मतलब यही है कि अब तक मैं जो कुछ भी देखता था, उसमें वास्तविकता नहीं के बराबर थीं।'–उसने पूछा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हाँ, यही तो मैं कहना चाहता हूँ। आपकी आंख फड़कने का कारण तो यही है। ज़रा एक पल के लिए सोचिए कि आजकल कश्मीर कितना अशांत है। जहाँ दिन-दहाड़े चौराहों पर आतंकवाद का नंगा नाच हो, निर्दोष लोगों की मारधाड़ हो, उनका अपरहण कर कत्ल किया जाए, बम-विस्फोट हों तथा ग्रिनेड फटने की आवाज़ों से कानों के पर्दे फटने की नौबत आ जाए। जगह-जगह आलीशान मकान जलाकर उनका ढेर सारा मलबा देखा जाए, सदियों पुराने मंदिर, मस्जिद आदि को नष्ट करके खण्डहर के रूप में देखा जाए और इसी तरह की कितनी ही घटनाओं को होती हुई देखा जाए तो उस सूरत में आपकी आंखें अपने-आप खुल जाएंगी और फड़कने का नाम तक नहीं लेगी।'-मैंने उसको यह सब एक ही सांस में कहा।

उसने मेरी ओर देखा। मैंने भी उसकी ओर आश्चर्य-मिश्रित निगाहों से देखा। कुछ पल बाद मैंने कहा-'फिल्हाल आप मेरे इस कहे पर अमल करें। इसके बाद देखा जाएग़ कि हवा का रुख किस ओर होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि जो मैंने कहा, उस पर अमल करने से आपकी आंखें एकदम रोगमुक्त हो जाएंगी।'

'तो क्या फिर इससे मेरी आंख फड़केगी नहीं?'-उसने मुझसे एक बार फिर पूछा।

'नही, मैं सत्य कहता हूँ। इससे आपकी आंख कभी नहीं फड़केगी। वस्तुतः हर एक क्रिया में इसकी प्रतिक्रिया निहित होती है। यदि किसी क्रिया से आपकी आंख फड़कती है किन्तु इसमें निहित प्रतिक्रिया से आपकी आखें खुल जाएंगी। इनका फड़कना बन्द हो जाएगा।'-मैंने उसको समझाकर कहा।

उसने एक बार फिर मेरी ओर देखा। इसके बाद उसने आंखें मलीं। कमरे से बाहर आकर उसने कुछ नहीं कहा किन्तु मैंने इतना ही सुना-'मेरी आंख फड़कती है।'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विष और अमृत

उस दिन ढलती शाम को मैं कदम गिनता हुआ घर जा रहा था कि एकाएक रास्ते में उसने मुझे रोका। मैंने उसको ध्यान से देखा और अपने चिर परिचित आंकड़ों को आंखों में समेटकर यह जानने की कोशिश की कि शायद मैं इसको जानता हूँ। किन्तु ऐसी बात नहीं थी। वह मेरे लिए बिल्कुल एक अपरिचिता थी। फिर भी उसके साथ मेरे इस तरह के अप्रत्याशित सामने आने ने मुझे निर्दयता से खींचकर उसकी ओर आकृष्ट कर दिया। मैंने उसकी ओर एक बार फिर ध्यान से देखा मगर पहचाना नहीं। वह मेरी ओर ऐसी चौकन्नी नज़रों से देखने लगीं कि जैसे मैं उसका कोई अपना था और वर्षों के बाद यहाँ अचानक मिल गया।

उस समय यह जानना कतई मुश्किल था कि उसने मुझे देखकर क्या पाया किन्तु उसकी नीली-नीली आंखों को देखकर तथा इनके भीतर उमड़ते-घुमड़ते भावों को अच्छी तरह पहचानकर यह जानने में ज़रा भी देर न लगी कि अपने भीतर और बाहर की सारी विसंगतियों में हर पल जूझते हुए भी, वह अपने को एक ही सतह पर देखकर बिठाए रखने व प्रदर्शन में माहिर रही है। यदि ऐसा न होता तो उसका भीतरी बिखराव कब का बाहर छितरा जाता और वह मुझे देखकर अपने को संयम में न रखकर कुछ भी कर सकती थी, लेकिन ऐसी बात नहीं थी।

वह मेरे पास आ गयी। मैं एक बार फिर उसकी ओर ध्यान से देखने लगा। वह भी मेरी ओर ऐसे ही देखने लगी। फिर आंखों में आंसुओं का वेग रोकने के लिए उसने आंचल का सहारा लिया।

'क्यों? क्या बात है?'-मैंने पूछा।

'तुम कहाँ...' उसने इस तरह कहा मानों मुंह में यह वाक्य लकवे के रोगी की तरह निर्जीव हो। मैंने उसकी तरफ देखा और उसकी आंखों की पुतलियां भीगे पक्षी की तरह थरथराने लगीं।

अब की बार मैं उसको देखकर डर गया। समझ में कुछ नहीं आया कि उसको

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या कहूँ? कैसे कहूँ? इतने में उसने मेरा हाथ थाम लिया और पास की गली के नुक्कड़ पर बने मकान में लेकर वहाँ एक कमरे में बिठाया। उसके बाद वह मेरे बगल में बैठ गयी। उसकी आंखों में झूलती हुई इस तरह की बेपरवाही देखकर मुझे खुद अपनी ही आंखों में झांकने की ज़रूरत महसूस हुई। मैं ज़्यादा देर तक इस तरह उसके पास बैठने का साहस न कर सका। मैं तो एक ओर मुड़ने वाला ही था कि उसने एक बार फिर प्यार से मेरी बांह पकड़ ली। बहुत आश्चर्य हुआ उसकी इस हरकत पर किन्तु वह मेरी ओर देखकर कहने लगी–'कहाँ थे तुम अब तक? पांच वर्षों से तुम्हारे ही इंतज़ार में रही हूँ मंदिरों के इस शहर में। और तुम हो कि नन्दन-कानन कश्मीर की प्राकृतिक छटा का आनन्द-रस लूटते रहे हो। यहाँ मेरा शरीर जलता रहता है धधकती गर्मी से। आपने यहाँ मुझे क्यों छोड़ा है? मैंने कौन सी गलती की है? मुझे अपने साथ क्यों नहीं ले चलते? इन पांच वर्षों में दुनिया में कई परिवर्तन आ गए और आप हैं कि मेरे जीवन में कोई परिवर्तन न ला सके। पेंतालीस वर्ष लांघकर भी मेरी गोद सूनी है।'

उसकी उम्र पेंतालीस ही होगी, यह तो उसका चेहरा-मोहरा देखकर ही लगता था फिर भी अपना स्वास्थ्य और सौंदर्य बनाए रखने में वह सतर्क सी लगती थीं। माथे पर बिंदिया ऐसे चमक रही थी मानो नील-गगन पर चंद्रमा। गहने भी ज़रूरत से ज़्यादा पहन रखे थे। फिर भी उसकी बातें सुनकर ऐसा लग रहा था कि वह किसी कारण वश बहुत समय से दुखी है। उसने मेरी बांह पकड़कर आवारगी की सी हालत में एक बार फिर कहा–'उस दिन तुम रोज़ की तरह सुबह के दस बजे दफ्तर गए। किन्तु भाग्य की विडम्बना तुम्हारा बॉस आतंकवादियों की गोलियों का शिकार होकर अपनी ही कुर्सी पर दम तोड़ गया। उसके पद पर आपकी नियुक्ति हुई तब से आप अपने विभाग के अध्यक्ष पद पर आसीन हैं। वाह! पत्नी यहाँ इस परदेस में विरहणी का जीवन काट रही है और तुम श्रीनगर में मौज मना रहे हो।'

मैं उसकी इन बातों को ज़रा भी समझ नहीं पाया। इसलिए कोई निश्चित उत्तर देने के बजाय मैंने चुप रहना ही उचित समझा। किन्तु मेरे कुछ न कहने पर उसकी आँखों से उदासी के भाव स्पष्ट दिखाई देने लगे। मैं असमंजस में पड़ गया। फिर भी मैंने कुछ नहीं कहा। उसने मेरी ओर झुक कर देखा। बोली–'मैं समझ गयी कि तुमको श्रीनगर वापस जाना है। मगर यहाँ कहाँ ठहरे हो? कैम्प में... नहीं, किसी मित्र के घर पर... नहीं, किसी किराए के मकान में... वह भी तो नहीं। तो फिर कहाँ ठहरे हैं मुझे भी तो बताओ। और वापस कब जाना है?'

मैं मूक-सा बैठा, उसकी इन बातों को सुन रहा था। गोरखधंधा धीरे-धीरे जटिल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होता जा रहा था। मैं हर पल इस परिस्थिति से मुक्ति पाने की कोशिश में था किन्तु ऐसी कोई सम्भावना नहीं दिखती थी। इस बीच वह एक बार फिर बोली–'मुझे पता है कि अब आपको श्रीनगर जाना है। किन्तु यदि जाना ही है तो कब जाना है?'

'कल'–इस समय मेरे मुंह से एकदम निकल गया। किन्तु बाद में सोचा कि मैंने उसको यह क्यों कह दिया। असली बात की तह तक जाने से पूर्व मुझे यह नहीं कहना चाहिए था। मैं बहुत पछताया। इतने में वहाँ एक बुड्डा आया। उसको देखते ही वह उठी और कमरे के बाहर आयी। मैंने बुड्डे को नमस्ते की। इसके बाद बिना जूते पहने कमरे से बाहर आकर चैन की सांस ली।

दूसरे दिन प्रात: जब मैं अपने ड्राइंग-रूप में नाश्ता कर रहा था तो किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। आवाज़ आयी–'क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?'

'आइए'–मैंने कहा।

दूसरे ही क्षण कल वाला बुड्ढा मेरे सामने आ खड़ा हुआ। कल तो मैंने उसे बिल्कुल सरसरी तौर पर देखा था। किन्तु इस समय उसका चेहरा-मोहरा देखकर ऐसा लगा कि वह इस बुढ़ापे में कोई अनजाना दुख सह रहा है। वह एक लम्बी सांस लेकर मेरे पास वाले सोफे पर बैठ गया। मैं उसकी ओर ध्यान से देखता रहा। वह सिर झुकाए जाने क्या सोचने लगा। फिर मौन तोड़ता हुआ बोला–'मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरी बेटी आपको गलत समझ रही है। हाँ, जिस मकान में कल मैंने आपको देखा, वही मेरा घर है और वही उसका मायका। इस समय उसने मुझे यहाँ ज़बरदस्ती भेजा है कि आप उसके पति...'

यह सुनकर मेरे नीचे की ज़मीन सरक गयी। सारा शरीर पसीने से तर हो गया। माफी मांगने की स्थिति में मैंने उसे कहा–'दरअसल इसमें मेरा कोई दोष नहीं। रास्ते में उसने मुझे रोका और बांह पकड़कर वहाँ ले गयी। उसकी हालत को देखते हुए मैं यह नहीं कह सका कि मैं उसका पति नहीं हूँ। मैं इसके लिए शर्मिंदा हूँ।

'इसमें किसी का दोष नहीं। दरअसल इसी को भाग्य की विडम्बना कहते हैं। उसके पति के चेहरे के साथ आपका चेहरा बहुत मिलता है। कल आपको देखकर मुझे भी ऐसा लगा कि सच ही आप उसके पति हैं। किन्तु उसका पति...' बूढ़े ने कहा और इसके साथ ही अगला वाक्यं उसके गले में अटक गया। वह कुछ बोल नहीं पाया।

इस बीच मैंने चाय बना ली और उसकी ओर एक कप बढ़ाया। प्याला होंठों की ओर ले जाकर वह बोला–'मुझे बहुत खुशी है कि कल मैंने पांच वर्ष के बाद आपके

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साथ अपनी बेटी को पहली बार खुश देखा। आपको देखकर उसको ऐसा महसूस हो रहा है कि भरी जवानी में वह जो चीज़ खो बैठी है, वह अब उसे पुन: प्राप्त हो रही है। मैं उसको नहीं कह सकता कि यह उसकी निरपराध भूल है। सोचता हूँ यदि इसी बहाने वह जीवन के शेष भाग को आनन्द से जी सके तो कौन इसमें कैसी आपत्ति?'

इन बातों को सुनकर मैं उसकी ओर देखता ही रह गया। इतने में वह फिर बोला–'सुनिए, आप उम्र से मेरे बेटे के बराबर हैं, किन्तु घर में आपका परिचय मेरी बेटी के पति...। और मैं आपसे यही चाहता हूँ भी। क्योंकि छोटी उम्र से ही मेरी बेटी विरह रूपी ज़हर के घूट पीती आयी है किन्तु अब आपको देखकर यह ज़हर मिलन के अमृत में बदल जाएगा'।

एक तरफ उसके कातर शब्द तथा दूसरी ओर मेरा उसकी बेटी का नया पति घोषित होना–समझ में कुछ नहीं आ रहा था। इतने में वह फिर बोला–'हाँ, आपने उसको कहा था कि मैं कल जा रहा हूँ। वह आपको बस-अड्डे पर विदा करने आ रही है। उसका दिमाग खराब है न। बावली है। उसका मन बहलाने के लिए आप इसी दम यहाँ से निकलकर उसको बस-अड्डे पर मिलिए। शायद वह आपको विदा करने के लिए वहाँ पहुंच गयी होगी।'

यह सुनकर मैं असमंजस में पड़ गया। इस वक्त बहुत गुस्सा आया इस बुड्ढे पर किन्तु उसका दिल दुखाना नहीं चाहता था। फिर भी मैं इस वक्त कुछ कहने पर मजबूर-सा हो गया–'पिताजी मेरे तो बाल-बच्चे हैं। पत्नी अभी पेंतीस को लांघ चुकी है। कहाँ है आपकी बेटी का पति? भले ही उसने दूसरी शादी की हो, मुझे विश्वास है कि मैं उसको यहाँ लाने में सफल हो जाऊँगा'।

मेरा इतना ही कहना था कि वह मेरी ओर देखने लगा। अब तक मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि मनुष्य की आंखें कभी स्थिर और निर्जीव भी हो सकती हैं। उस समय उसकी आंखों को देखकर मुझे ऐसा लगा कि एकाएक इनमें कांच के टुकड़े भर दिए गए हैं। उसका सारा शरीर थरथराने लगा। उस समय मुश्किल से उसने अपना हाथ कोट के जेब में डालकर अखबार के कागज़ की एक कतरन निकाली और मुझे दे दी। मैंने इसे पढ़ा– 1 फरवरी 1990 में हुई कश्मीर में आतंक की एक घटना है–'श्रीनगर के लाल चौक में दिन-दहाड़े आतंकवादियों ने अल्पसंख्यकों से संबंधित कई युवकों को एक-साथ गोलियों से छलनी कर दिया। शव गटर के पास आठ घंटे तक पड़े रहे। इनको किसी ने छुआ तक नहीं। बाद में शिनाख्त करने पर पता चला कि मृतकों में एक महान देशभक्त सुरेन्द्र भी है। उसका दोष यही था

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि वह देशभक्त था और जब उसका शव घर लाया गया तब उसको देखकर पत्नी बेहोश हो गयी। होश आने पर वह पागलों की तरह बातें करने लगी...।'

पढ़ने पर वस्तु-स्थिति समझ में आयी। मुझे लगा कि निष्ठुर सृष्टि के ये दो नि:संग अभिशप्त मानव पुतले घोर पीड़ा की आग में झुलसे घायल होकर चीत्कार कर रहे हैं!

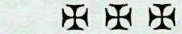

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्श से फर्श तक

अपने घर से हर किसी को मोह होता है। घर कैसा ही बना हो, छोटा या बड़ा, मैदानी क्षेत्र में हो या पहाड़ी की चोटी पर, तपते रेगिस्तान में हो या सर-सब्ज़ घाटी में, घर का नाम लेकर सभी की आंखें अभिमान से भर उठती हैं। घर से इसी तरह के मोह को देखकर कश्मीर के सुप्रसिद्ध कवि शेख नूरूद्दीन नूरानी ने कहा कि घर पर हज़ारों बार बलिहारी हो जाऊँ, इसके दरवाज़े से बाहर न निकलूं। किन्तु कल्पना कीजिए कि इसी एक घर से जब कोई सीधा-सादा आदमी, सोची-समझी चाल के तहत निकालने पर मजबूर किया जाए तो उस समय उसके दिल पर क्या बीतती है यह तो वही जानते हैं जो इस वक्त अपने ही प्रदेश में खुले आसमान के नीचे शिविरों में सड़ रहे हैं-गत दस-बारह वर्षों से। इनका दोष कुछ नहीं है। हाँ, यदि दोष है तो बस यही है कि ये दिल से हिन्दुस्तान को चाहते हैं और 'हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद' का नारा लगाते हैं। यह भी सत्य है कि हिन्दुस्तान को ये इसलिए नहीं चाहते कि यहाँ हिन्दू रहते हैं बल्कि इसलिए कि यह कई धर्मों के रहने वालों की नीड़ है।

इनका घर तो आखिर छूट गया-बन्दूक का डर दिखाकर! पहले तो इनका घर किसी तरह की क्षति पहुँचाए बिना खड़ा था। किन्तु बाद में बन्दूकधारियों ने इनमें रखा सामान लूटा। यह तो वही सामान था जो इन्होंने उम्र भर एक-एक करके इकट्ठा कर रखा था। सामान तो लुटेरों ने लूटा तो क्या हुआ। अपना घर तो सुरक्षित है। यदि कश्मीर वापस जायेंगे तो वहीं रहने के लिए अपना घर है। किन्तु नहीं, उनकी इस आशा पर भी पानी फिर गया। घर लूटने के बाद ये धू-धू करके एक के बाद एक जलाए गए-सारी दुनिया को यह दिखाने के लिए कि कश्मीर में अल्पसंख्यक रहते ही नहीं थे। किन्तु इतिहास की सच्चाइयों पर कभी लीपा-पोती नहीं हो सकती। इतिहास की सच्चाइयां समय का दर्पण है। फिर भी स्वर्ग से विस्थापित ये लोग हर बार यह कश्मीरी लोक-गीत गुनगुनाते रहते हैं-'घर बनाया खुले अहाते में, सुन्दर एवं रंगदार खिड़कियाँ-दरवाज़े लगाये हैं इसके, घर यहीं रहेगा किन्तु हम नहीं रहेंगे, मन का मेला सुखमय है।'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये वही लोग हैं जो हिन्दुस्तान के उस भू-भाग से विस्थापित बनकर आए हैं जो इसका ताज है और शाहजहाँ का 'पृथ्वी' पर अवतरित फिरदोस या जन्नत-बे-नज़ीर। यहाँ के लोग शान्तिप्रिय हैं और घर में तेज़ चाकू रखना पाप मानते हैं। आज हर रोज़ वही लोग मर रहे हैं। आज उसी जन्नत में धुआं उठ रहा है तथा लपटें आकाश को लीलने के लिए बांहें फैलाती नज़र आ रही हैं। हर आदमी परेशान है यहाँ और लोगों का कत्लेआम सारी दुनिया को दहशत का संदेश भेजता है। यहाँ की आवाज़ अब आतंकवाद की आवाज़ बन गई है। यहाँ का हर एक आदमी बदहवास होकर आगे बढ़ता है ताकि वह पीछे से किसी जंगजू-जनूनी की गोली का शिकार न बन जाए।

वह भी समय था कि यदि इस जन्नत में कोई दुर्घटना से मर जाता तो सभी हिन्दू-मुसलमान व सिक्ख शोक मनाते थे। कई दिनों तक मृतक की ही चर्चा की जाती थी। किन्तु अब यहाँ किसी का मरना अचंभा नहीं। मरने-मारने पर अब यहाँ जैसे किसी को सरोकार ही नहीं। बस, अखबार की सुर्खियों में खबर आ गयी तो बहुत है! दूसरे दिन भी अखबार में इसी तरह की खबर सामने आती है। इस तरह से यह क्रम जारी है और लगता है कि आगे भी जारी रहेगा। आखिर इस मारा-मारी का कोई मकसद होगा? यह तो मेरी समझ में नहीं आता। एक दिन मैंने सोचा कि क्यों न मैं यहाँ के लोगों से पूछूं कि आप असल में क्या चाहते हैं? आपकी वह कौन सी परेशानी है जो आपको अन्दर से खाए जा रही हैं?

मैं जम्मू में नगरोटा के कश्मीरी विस्थापित शिविर में पहुंचा जहाँ इस समुदाय के कई सौ पंडित परिवार खुले आसमान के नीचे फटे-पुराने तंबुओं में बेहाल व बेहिसाब रह रहे हैं। कहीं चार डंडों पर पुरानी फटी धोती लिपटी है जो गुसलखाना बना है तो कहीं इसी तरह की दरी लगाकर चौका या रसोई घर बना है जहाँ वह कडम का साग एवं अन्य खान-पान की वस्तुएँ बेचते हैं। सब निर्धन हैं किन्तु व्यवस्थित। यहाँ देखकर ऐसा लगता है कि यहाँ एक नयी दुनिया बसी है, एक अलग संसार ने अपनी विशेष संस्कृति को पूरी आन-बान के साथ जन्म दिया है। मैंने इस तरह के एक शिविर में प्रवेश किया किन्तु अन्दर आते ही मेरा दम घुट गया। आश्चर्य भी इस बात का कुछ कम नहीं हुआ कि पुराने मैले 'फिरन' में वहाँ एक अस्सी वर्षीय बुढ़िया बैठी थी-बिलकुल आराम से। उसको देखकर ऐसा लग रहा था कि जैसे उसमें सारी उम्र यहाँ की गर्मी झेलने की क्षमता थी। मेरे आते ही शिविर के अन्दर अन्य विस्थापितों का तांता बंध गया। सभी के चेहरे शोक और गम में डूबे हुए थे किन्तु कुछ एक ऐसे भी थे जिनको देखकर ऐसा लगता था कि ये गोली का जवाब गोली से देना चाहते हैं। उनके सब्र का प्याला छलक रहा है। सब अपनी फरियाद सुनाने लगे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फरियाद.....फरियाद.....फरियाद.....

पहले संग्रामपुर, इसके बाद गूल और दुधरहामा, और अब वंदहामा–इसी वर्ष इन चार क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर कश्मीरी पंडितों का कत्लेआम किया गया। ये वही पंडित हैं जिन्होंने वहाँ से पलायन नहीं किया था। और इस पर जम्मू-कश्मीर सरकार की यह ढ़ींगें मारना कि वह कश्मीरी पंडितों को वापस भेजने के लिए वचनबद्ध है!

'जो सरकार वहाँ बचे कुछ हिन्दू परिवारों को सुरक्षा न दे सके वह यहाँ से वापस जाने वाले विस्थापित पंडितों की सुरक्षा का आश्वासन किस बूते पर दे रही है। इससे साफ लगता है कि न सरकार को हमारी ज़रूरत है न ही वहाँ की आम जनता को। वह शनैः शनैः कश्मीर को एक मुस्लिम-प्रदेश बनाना चाहते हैं और भारत में यह ढोल पीटते हैं कि धर्म-निरपेक्षता की मशाल यदि कहीं जलती है तो वह जलती है सिर्फ कश्मीर में।

'मगर सत्य तो यह है कि वहाँ यह मशाल पूरी तरह बुझ गयी है। यह आज की बात नहीं। गत छः सौ वर्षों से पंडित तरह-तरह के अत्याचारों का शिकार हुए हैं और यही कारण है कि अपनी इज़्ज़त-आबरु व कीमती जान बचाने के लिए हमारा यह आठवीं बार का पलायन है जिसका इतिहास साक्षी है। फर्क केवल इतना है कि अब की बार हमारा बड़े पैमाने पर पलायन हो गया है। अतीत में हमारी बिरादरी के अधिकांश लोग भय और आतंक के कारण धर्म-परिवर्तन कर मुसलमान बन गए। यही कारण है कि कश्मीरी मुसलमानों में आज भी हमारे परिवारों के उपनाम मौजूद हैं जैसे धर, कुकरू, कोल, मलिक, बखशी, किचलू, पंडित आदि वस्तुतः ये मुसलमान नहीं है। ये वही हिन्दू हैं जो ज़ोर-ज़बरदस्ती से मुसलमान बनाए गए।

'इस बार तो हम भागने के लिए तैयार नहीं थे किन्तु हम भागने पर मजबूर हो गए। वह भी मात्र दो या तीन महीने के लिए। हमने नहीं सोचा था कि सरकार के ढीले रवैये के कारण आतंकवाद की चिंगारियां इस तरह फूटकर भयंकर रूप से भडकेंगी।'

'वस्तुतः हमने अपना घर-बार छोड़कर कश्मीर को बचाने के लिए ज़बरदस्त कुर्बानी दी। मानो आज़ादी का नारा गुब्बारे में हवा की तरह था। हमारे निकलने से गुब्बारे पर सूई चुभ गयी और हवा एकदम बाहर निकल गई।

'कौन-सी आज़ादी और किससे अज़ादी? हम तो सन् 47 में आज़ाद हुए हैं। हमारी इस आज़ादी के लिए कई जवान शहीद हुए हैं। हमें तो यहाँ हर तरह की आज़ादी प्राप्त है–धर्म की आज़ादी, काम करने की आज़ादी, बोलने की आज़ादी और अब बीच में यह कौन-सी आज़ादी टपक पड़ी।'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हाँ, यह आज़ादी कश्मीर को स्वायत्तता देने से मतलब रखती है। मगर कश्मीर कभी स्वायत्त नहीं रह सकता। स्वायत्तता उन देशों को मिलती है जिनके पास अपने संसाधन हों। कश्मीर में फल-फूल के सिवाय और उगता क्या है? जिन लोगों के पास साल भर के लिए अनाज न हो, उन लोगों का देश कैसे स्वायत्त रह सकता है?

'इतना ही नहीं, जिस क्षेत्र के साथ पांच देशों की सीमांए लगती हों, देश के उस क्षेत्र की स्वायत्तता असम्भव है। स्वायत्तता मिलने पर वह इन पांच सीमाओं की देखभाल कर सकेगा? लगता तो नहीं। इसको भारत का अंग रहकर ही अपनी पहचान बनानी है।'

'चलो, इस बारे में कश्मीर की आम जनता की क्या सोच है, इससे हमें लेना-देना नहीं। मगर हम बीच में पिस गए। हम बेघर हो गए। अर्श पर थे, फर्श पर बैठने के लिए विवश हो गए हैं। हमारे पास ज़मीन थी, बाग-बगीचे थे, आलीशान मकान था। वह सब हमसे छीना गया और इसके एवज़ में मिला है यहाँ रहने के लिए एक टेंट या 'टेनामेंट' और चार आदमियों का मासिक भत्ता अठारह सौ रुपले।'

'सरकार ने अठारह सौ रुपए से हमारी जुबान बन्द कर रखी है। एक तरह से हम बिक कर रह गए हैं। नहीं तो सोचने की बात है कि हमारी इस दुर्दशा को देखने के लिए आज तक कोई प्रधानमंत्री (इन्द्र कुमार गुजराल को छोड़कर) हमारे पास आए हैं? भारत क्या, दुनिया भर घूमने के लिए इनके पास वक्त है मगर हमारे पास आने और हमारा दुख-दर्द जानने के लिए वक्त नहीं। हाँ, दूसरे दलों के कार्यकर्त्ता हमारे आंसू पोंछने के लिए आते हैं।'

'सब कहते हैं कि कश्मीरी विस्थापितों को घर भेजेंगे। इनके सिवाय कश्मीर अधूरा है। यह बात अब सशक्त नारा बन गया है। इसी एक नारे से कश्मीर की वर्तमान सरकार अस्तित्व में आ गयी। जब पंडित कश्मीर जाने के लिए तैयार हो जाते हैं तो वहाँ ठहरे मुट्ठी भर पंडितों का कत्लेआम किया जाता है। यही तो इनकी हमारा कश्मीर न लौटने की चेतावनी है।'

'चलो मान लिया कि हम वापस कश्मीर जायेंगे किन्तु सोचने की बात है कि वहाँ जाकर हम कहाँ ठहरेंगे? हमारा बसा-बसाया घर धू-धू करके जलाया है टेरेरिस्टों ने। इस तरह से हमारे मोहल्ले कब्रिस्तानों में बदल गए हैं। हमारा जो मकान बच गया है, उस पर आतंकवादियों ने अनाधिकृत कब्ज़ा किया है! यदि हम कभी कश्मीर जायेंगे भी तो हमें नई जंग लड़नी पड़ेगी।'

'अरे घर तो जलाए हैं मगर इन्होंने मंदिरों को भी नहीं छोड़ा। उनको या तो

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गिराया या जलाया। क्या इनके गिराने या जलाने से किसी देश को आज़ादी मिल सकती है? मंदिर हो या मस्ज्दि ये दोनों फिर से बनेंगे मगर इनके ढहने की कहानी इतिहास के पन्नों में हमेशा कैद रहेगी'।

'अरे यार सोचने की बात है कि मूलत: अफगानी किन्तु पाकिस्तान से आए मस्तगुल ने शेख नूरूद्दीन की अति पावन दरगाह 'न्नारे शरीफ' को भी नहीं छोड़ा। उसे भी जलाकर राख किया। शेख के श्रुखों (श्लोकों) व सिद्धान्तों पर दोनों हिन्दु व मुलसलमानों को विश्वास है। जिस दिन यह घटना घटी, उस दिन सभी ने मातम मनाया किन्तु इसके विपरीत क्या हुआ कि पाक समर्थित आतंकवादियों ने हिन्दुओं के भव्य मंदिरों को जलाया-बदला लेने के लिए। क्या इसी से इनको आज़ादी मिलेगी?

'यह कौन सी नयी बात है। गत् दस वर्षों से कश्मीर में इस तरह की कई घटनाएं घटी हैं। पाकिस्तातन में बारूद के ढेर फट गए तो बदले में पंडितों को गोलियां मिली। ज़िया-उल-हक हवाई दुर्घटना में मारे गए तो बदले में पंडितों के मकानों में लगे खिड़कियों के शीशे चकनाचूर कर दिए गए। मकबूल बट को फांसी की सज़ा मिली तो बदला पंडितों से लिया गया और एक दिवसीय क्रिकेट मैच में यदि पाकिस्तान हारा तो पंडित को गालियाँ मिलती थीं और जीते तो भी गालियां। इस तरह से पंडित आतंक और भय से घबराकर अंत में भागने पर मजबूर हो गए।

मगर भागने से पहले हमारे कई आदरणीय व्यक्तियों व नेताओं को चुन-चुनकर मौत के घाट उतारा गया। टीकालाल टपलू, प्रेमनाथ भट्ट, नीलकंठ गंजू, लसा कौल, पुष्कार नाथ हण्डू, बंसी लाल सप्रू, सर्वानन्द कौल प्रेमी, हृदय नाथ वांचू आदि को गोलियों से छलनी कर दिया गया। इस तरह से अब तक सारी घाटी में हमारे समुदाय से संबंधित सैंकड़ों लोग मारे गए हैं। यह देख हमारे लिए भागने के सिवाय कोई चारा नहीं रह गया था।

'इतना ही नहीं, हमें साफ-साफ कह दिया गया कि यहाँ से भाग जा 'नहीं तो कुछ भी झेलने के लिए तैयार रह। कई अखबारों में हमें वहाँ से तुरन्त भागने की धमकी दे दी गयी जिसमें '*अलसफा*' अखबार का नाम उल्लेखनीय है। मस्जिदों से मुल्ला लाऊडस्पीकरों पर यही कहकर हमें भागने पर मजबूर कर रहे थे। इस पर तुर्रा यह कि यह सब देखकर भी सरकार खामोश तमाशाई की तरह बैठी थी।

'सरकार कहाँ थी? वह तो बेबस थीं। वी.पी. सरकार जगमोहन को राज्यपाल के पद पर भेजना चाहती थी। 11 जनवरी को श्रीनगर में तथाकथित आज़ादी का झण्डा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फहरने वाला था। जगमोहन के आने से पहले ही हालात बद से बदतर हो गए थे। यह देख उसको टी.वी. से चेतावनी के रूप में कहना पड़ा कि यदि इस दिन किसी तरह की गड़बड़ हुई तो मेरे अमन का चाबुक खिसक जाएगा।

'अंत में क्या हुआ। दिल्ली के तत्कालीन कठमुल्लों ने जानबूझकर जगमोहन को कुर्सी से हट्य दिया। यदि उस समय इन्होंने ऐसा न किया होता तो कश्मीर के हालात ऐसे न होते जो आज हैं। हम कब के अपने घर वापस गए होते और हमारी चल-अचल संपत्ति को इतनी क्षति न पहुंची होती। इतने लोग न मर गए होते और कश्मीर पहले की तरह स्वर्ग से सुन्दर दिखाई देता।

दरिया के बहते पानी को रोका नहीं जा सकता। जो होना था, वह हुआ। इसको फिर से दोहराने का क्या मतलब? हमें देखना है कि वर्तमान परिस्थियों में कश्मीर जा सकते हैं अथवा नहीं। यदि एक ही वर्ष में संग्रामपुर, गूल, दूधरहामा या वंदहामा जैसे कत्लेआम दोहराए जायेंगे तो हमारा जाना असंभव है। शायद यह उस समय सम्भव होगा जब कश्मीर की राजनीति में कोई ज़ैनुलआबदीन जैसा *बड़शाह* पैदा होगा। जाने को हम सब वहाँ जायेंगे मगर स्थायी तौर पर वहाँ रहने के लिए तैयार नहीं। अब हम सजग हो गए हैं। हम अब भागने के लिए तैयार नहीं।

हम बिखर गए हैं और बिखरकर ही रहेंगे। हमारी बिरादरी सीमित होकर रह गयी है। हमारी प्राइवेसी पर आंच आ गयी है। हमारी बिरादरी में बहुत कम बच्चे पैदा होते हैं। वजह यह है कि हमारे नीड़ अब फटे-पूराने टेंट हैं। कई उदाहरण ऐसे भी हैं कि महिला जम्मू में है और उसका मर्द जयपुर या अन्य किसी जगह में। टेंटों में भी दम्पत्तियों की अपनी प्राइवेसी नहीं। इसलिए बच्चों की जन्म-दर घट रही है। सन 1990 ई० में पुरखू के विस्थापितों के कैम्प में केवल तेरह बच्चों ने जन्म लिया। यदि स्थिति ऐसी ही रहेगी तो वह दिन दूर नहीं जब कश्मीरी पंडित का नाम इतिहास के पन्नों तक ही सीमित होकर रह जाएगा। हम कब तक फटेहाल टेंटों या किराये कमरों में रहेंगे?

हमें जम्मूवासियों का शुक्रगुज़ार रहना चाहिए जिन्होंने मुसीबत की इस घड़ी में हमें अपने घरों में शरण दी। कश्मीरी विस्थापितों की एक बड़ी संख्या इस समय इन्हीं के घरों में रहती है। इस बीच इनके साथ हमारे खूनी रिश्ते भी स्थापित हो गए हैं।

मगर यह बात उस समय नहीं थी, जब हम यहाँ पहले आ गए। कोई अपना कमरा खाली करने पर तैयार नहीं था। वह तो इस शक में था कि कहीं हम कल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके मकान पर नाजायज़ कब्ज़ा न करें। किन्तु जब उसको मुह मांगा किराया मिलने लगा तो वह सारा मकान देने पर तैयार हो गया। यही कारण है कि जम्मू में जो मकान एक मंज़िला थे इन्हीं वर्षों में उसकी चार मंज़िलें चढ़ गईं।

इसी को कहते हैं अपना-अपना भाग्य। कश्मीर में हमारे आलीशान मकान समय के कुचक्र ने जलाए और यहाँ हमारे किराये पैसों से लोगों ने एक मंज़िला मकान पर चार मंज़िलें खड़ी कर दीं। वहाँ हम अपने मकान में बैठने के लिए तरसते हैं किन्तु यहाँ फटे टेंटों में या किराये के कमरों में बैठने के लिए विवश हैं।

चारा भी क्या है? अब हम इस चक्रव्यूह में फंस गए हैं। यदि कश्मीर वापस जायेंगे तो वहाँ ठहरेंगे कहाँ? अधिकांश हिंदू घर तो जलाए गए हैं। फिर भी वहाँ जाना तब तक कल्पना मात्र है जब तक कि वहाँ के लोग हमें दिल से स्वीकार करेंगे क्योंकि असल में हमारी सुरक्षा तो उन्हीं को करनी है। फिलहाल तो ऐसा नहीं दिखता है।

सच है, हमें सोच समझकर कदम उठाना है। किसी के बहकावे में नहीं आना है। इतनी मुसीबतें झेलकर अब हमें फिर भाग खड़ा नहीं होना है बल्कि पैर टिकाकर खड़ा होना है। दुश्मन को नेस्तनाबूद करना है। हमने मुसीबतें झेली किन्तु आगे की पीढ़ी का भविष्य सजाना है, संवारना है। अपना समुदाय जीवित रखने के लिए हमें कुछ भी करना है।'

मैंने यह सब सुना विस्थापितों के कैम्पों में और अंत में इसी निष्कर्ष पर पहुंचा कि वास्तव में यह कश्मीरियों की आज़ादी के लिए जंग नहीं है। यह तो सिर्फ कश्मीर को भारत में एक इस्लामी राज्य बनाने की जंग है। फिर उसे पाकिस्तान को सौंपने की साज़िश है। इसलिए इन्होंने यहाँ के पंडितों को भय और आतंक से अपने ही प्रदेश में विस्थापितों का जीवन बिताने पर विवश किया है किन्तु यह कब तक चलेगा?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विद्रोह

कश्मीर घाटी में भय और आतंक के कारण जब कश्मीरी-पंडितों के अधिकांश परिवार शनै शनै पलायन करके जम्मू तथा अन्य सुरक्षित स्थानों की ओर चले गए तब रामजी अपने मोहल्ले में आराम से रह रहे थे। वह हिले तक नहीं जब कि उस मोहल्ले में बसने वाले अन्य पंडित-परिवार कब के भाग गए थे। इधर-उधर, आगे-पीछे सारे मकान खाली हो गए थे। उस मोहल्ले की गलियां सुनसान दिख रही थीं। उन में सिवाय कुत्तों के कोई नहीं दिख रहा था। रामजी का दिल भी करता था कि यहाँ से भाग जाए किन्तु इसी के साथ वह सोचता कि यहाँ से भाग कर जाए तो कहाँ? सारी उम्र इस घर को सजाया है, संवारा है और इसी को छोड़कर यहाँ से जाऊँ? यह करने को दिल नहीं मानता है। तिसपर घर में इकलौती जवान बेटी है। अभी तो वह भी कुँवारी है। उसको खून-पसीने की कमाई से पढ़ाया है। भगवान की दया से अब वह अच्छे पद पर आसीन है। उसको किसी के साथ ब्याहना है। यहाँ से जाने के बाद यह सब असंभव सा लगता है। वर मिलना या न मिलना दूर की बात है किन्तु इसके दहेज का जो सामान इकट्ठा कर रखा है, वह नहीं मिल सकता। तिसपर वहाँ रहने का सवाल है। रहेंगे तो कहाँ? कौन सी जगह है जहाँ हमें शरण मिलेगी? फिर मुझे किसी ने कुछ नहीं कहा। मैं यहाँ से क्यों भाग जाऊँ? मैं तो नियमित रूप से अपने दिन काटता हूँ किन्तु यह भी सत्य है कि घाटी के हालात दिनों दिन खराब होते जा रहे हैं। आतंकवादियों द्वारा हमारी बिरादरी के कई जवान दिन-दहाड़े कत्ल हो गए हैं। कई लड़कियों का अपहरण करके पहले बलात्कार और फिर उन्हें गोलियों से छलनी कर दिया गया है। कई लोगों के मकान जलाए हैं या जलाने वाले हैं। सड़क पर चलना तो मुश्किल हो गया है। डर इस बात का है कि पीछे से कोई आतंकवादी गोलियों से भून न डाले। इस समय यहाँ मौजूद कुछ पंडित-परिवार इस आशा में हैं कि हालात ठीक हो जायेंगे, किन्तु इसके विपरीत हालात दिनों-दिन खराब होते जा रहे हैं। समझ में कुछ नहीं आता कि मुझे क्या करना चाहिए।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतने में न जाने क्या हुआ। वह चौंक-सा गया। उसने एक ज़ोरदार धमाके की आवाज़ सुनी। इसके बाद गोलियों का तड़-तड़ शोर। धमाके से उसका मकान क्या, सारा मोहल्ला हिलकर रह गया। वह घबराया। बेटी उसके साथ लिपटकर रह गयी। वह उसी दम अपने मकान से निकल भागा। इसके दरवाज़े तक बन्द नहीं किए। येन-केन-प्रकारेण वह बेटी के साथ जम्मू पहुंच गया। जम्मू पहुंचकर उसकी जान में जान सी आने लगी।

यहाँ के लोग उसके साथ सहानुभूति से पेश आए। कुछ दिनों के लिए अपने घर में शरण दी किन्तु ऐसा कब तक? अंत में उसने कश्मीरी पंडितों के एक विस्थापित शिविर की ओर प्रयाण किया। 'पापा! हम इस तार-तार हुए टेंट में नहीं रह सकते।'–बेटी ने कहा।

'फिर कहाँ रहेंगे बेटी? रहना तो इसी में पड़ेगा फिल्हाल। अर्श पर थे, पर अब फर्श पर बैठना पड़ेगा।'–उसका उत्तर।

'आपका कहना सही है। क्या हम किराये के मकान में नहीं रह सकते?'–बेटी ने पूछा। 'किराये के मकान में बैठेंगे तो किराये के पैसे कौन चुकायेगा? यह भी तो देखना है।'–उसने कहा।

'आप किराये का मकान ढूंढ लें। मैं अपनी तनख्वाह से एक हज़ार रुपया तक किराया चुका सकती हूँ।'–बेटी ने कहा।

किसी तरह मिन्नतें करने के बाद रामजी ने एक कमरा किराया पर ले लिया। खाना-पीना, उठना-बैठना, सोना-जागना, मेहमानों का आतिथ्य-सत्कार करना-सब कुछ इसी इकलौते कमरे में ही करना था। महीने का एक हज़ार रुपया किराया भी देना है। किन्तु इस मकान में रहने से एक सहूलियत तो ज़रूर थी–बेटी का आफिस घर से नज़दीक पड़ गया।

❑

कश्मीरियों के विस्थापन की दु:खद घटना को आज कई वर्ष हो गए किन्तु अब तक कश्मीर के हालात वैसे के वैसे हैं। विस्थापितों के वापस अपने घर जाने की कोई सम्भावना नहीं लगती। इस बीच पंडित नई परेशानियों में फंस गये। लेकिन फिर भी किसी ने एक-दूसरे की परेशानियों को समझने की कोशिश नहीं की। इसका मुख्य कारण है कि कश्मीरी पंडित परिवार टूट गए हैं। रामजी की बेटी भी अपनी परेशानी में उलझकर रह गयी है। यही कारण है कि आज उसने दिन भर आफिस में कोई काम

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं किया। सिर्फ अपनी सीट पर बुत की तरह बैठी रही। वह सोचती रही और अपने-आपको कोसती रही। वजह यह थी कि आज मिस रैणा ने उसके रिसते घाव पर ऊँगली रखकर चोट की थी, जिससे उसकी बीती, यातना भरी बातों का मवाद एकदम बाहर निकल आया। वह नहीं समझ पायी कि कैसे विद्रोह करे। किसे कहे वह कि मेरी जवानी तेज़ी से ढलती जा रही है। मेरे चेहरे से अब लावण्य खत्म होता जा रहा है। श्रीनगर में आफिस 'जाइन' करने के बाद से मैं यहाँ और वहाँ इन्हीं राहों को देखती आ रही हूँ। इन्हीं पर चलती रहती हूँ और अब चालीसी लांघकर भी मुझे इन्हीं राहों पर से भटकना पड़ता है। बस, घर से आफिस और आफिस से घर! इस बीच मेरे जीवन में कोई बदलाव नहीं आया है। हाँ, इस बीच मेरी कई सहेलियों का विवाह हो गया बच्चे भी हो गए, किन्तु अभी मैं वैसी की वैसी हूँ। आज उसके सहयोगी क्लर्क शायद उसके मन को पढ़ रहे थे तभी तो वे आपस में मुस्कराकर बातें कर रहे थे। जब उसको सबकी दृष्टि असहनीय हो गयी तो वह सिरदर्द का बहाना कर वहाँ से चल दी और घर आने पर पर्स के अन्दर टाईप किया हुआ त्याग-पत्र निकाला। हां त्याग-पत्र। अब यही उसको जीवन की इस उलझन से मुक्ति दे सकता है। यही अब विद्रोह का रास्ता बना सकता है।

कई वर्षों से उसके मन में बर्फ की सिल की तरह आस, एक उम्मीद जम गयी है, फेरे लेने की आस और किसी के साथ अपने भाग्य की गांठ बांधने की। उस जमी सिल को अब यही त्याग-पत्र पिघला कर पारा-पारा करेगा। वह कितना ही सहनशीलता का प्रदर्शन करे, किन्तु उसने मन-ही-मन भावनाओं की कच्ची-पक्की बेलें लगायी हैं इस आशा में कि फूल खिलेगा और ज़रूर खिलेगा। मगर नहीं, उसकी यह आस दिल में ही रहेगी। न फूल खिलेगा न ही इसके आगे खिलने की आशा दिखती है। ऐसा इसलिए है कि वह विस्थापित के रूप में यहाँ रहने के लिए विवश है। घर से खाली हाथ लेकर यहाँ आए हैं। सुनने में आया है कि घर का सारा सामान लुटेरों ने लूटा है और घर को भी जलाया है। इस तरह से इस समय घर की आर्थिक स्थिति पतली है और यदि मैं नौकरी छोड़ दूँ तो कमरे का किराया कैसे चुका पाएंगे, घर के अन्य खर्चे कैसे पूरे होगें और मेरा टीप-टाप कैसे बरकरार रहेगा। गत् कई वर्षों से वह यही सोचकर परेशान है। उसकी समझ में कुछ नहीं आता कि वह क्या करे, किससे कहे और कैसे कहे अपने मन की व्यथा। उसकी आयु की सभी लड़कियों का ब्याह हो गया। इनमें से कई इस समय दिल्ली में हैं, कई बम्बई और मद्रास में। कईयों ने अन्तर्जातीय विवाह किया और शायद मैं ही एक हूँ जो कश्मीरीयत बचाने के लिए अभी भी कुंवारी हूँ। किन्तु मेरी इस सहन-शीलता का अनुचित लाभ मेरी ही बिरादरी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लड़कों ने उठाया। यह जानकर भी कि इस समय हमारा समुदाय घोर आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के संकट के कारण अर्श से फर्श पर आ गिरा है, तो भी ये शादी से पहले लड़की वालों से तरह-तरह की फरमाइशें करते हैं–कार की, स्कूटर आदि की। इस तरह से अब भी मुझ जैसी गरीब लड़कियों की शादी नहीं हो पा रही है और अब मेरी तरह इनके बाल भी पककर सफेद हो रहे हैं। इस समय मैं इस बात के लिए पछता रही हूँ कि मैंने प्रेम क्यों नहीं किया। किन्तु नहीं, मैंने आज तक सहनशीलता का प्रर्दशन किया क्यों कि मैं प्रति मास पापा को पूरी तनख्वाह थमाकर उसकी इस विस्थापन में सहायता करना चाहती हूँ। किन्तु इसके बदले में वह अपनी बेटी के लिए, उसकी जवानी का उभार देखकर भी क्या करते हैं। सिवाय आंखें मूंदने के कुछ नहीं। वह तो मेरी सहनशीलता का अनुचित लाभ उठाते हैं। वस्तुत: अब मेरी यह सहनशीलता अंतिम सीमा तक पहुंच गयी है। मुझे लगता है कि ये मेरे पिता नहीं, शत्रु हैं। ये तो मेरे बोझ को सिर पर महसूस ही नहीं करते। पर ये सोचते क्या हैं? क्या मैं इनके लिए अपना जीवन बरबाद करुंगी? आज मैं नौकरी छोडूंगी, चाहे घर की हालत कुछ भी रहे। इसके साथ ही उसकी सोच ने दूसरी ओर करवट ले ली। वह सोचने लगी कि यह कैसा लगेगा कि बेटी ने बाप को उल्टे हाथ तमाचा मारा। किन्तु वह करेगी तो क्या? अब उसको ये बातें सुनकर दुख होता है। अब सगे-संबंधी उसकी ओर देखकर कहते हैं कि अब क्या शादी होगी इसकी? ऊंह! यह तो अब बुड्डी होने को है। सिर के बाल भी सफेद हो गए हैं।

उस दिन यही सोचते शाम घिर आयी। पापा कमरे में लक्ष्मी के फोटो के आगे पूजा-अर्चना करते थे। यह देख बेटी को अपने-आपसे हंसी आयी। वह रोज़ उसको इसी तरह देखती है पर बदले में उसको क्या मिला? कुछ नहीं। हाँ, गरीबी और असहायता उसको पहले ही वरदान स्वरूप मिली थीं किन्तु अब विस्थापन का अभिशाप भी मिला। चलो यह भी ठीक है। मगर बेटी के लिए वर क्यों नहीं देती? हो सकता है कि उसने मांगा ही न हो क्योंकि वह तो उसको प्रति मास अपने वेतन की मोटी रकम थमा देती है। चलो, यह भी ठीक है। लड़का हो या लड़की, एक इन्सान तो भगवान का भेजा हुआ प्रसाद होता है। मां-बाप की आशाएँ अपने सुख-दुख में बच्चों पर ही टिकी रहती हैं किन्तु जब बच्चे जवानी की सीढ़ियां चढ़ते हैं तो मां-बाप से उनकी एक मांग ज़रूर होती है जिसको पूरा न होने पर वे विद्रोह करते हैं। उसी का प्रदर्शन मैं आज करने जा रही हूँ। नहीं तो कल मैं दफ्तर कैसे जा सकती हूँ। वहाँ तो मिस रैणा मेरे घाव पर फिर चोट करेगी। मिसेज़ रीता मेरी ओर घूर-घूरकर देखेगी। और वह सांवली किन्तु मोटी उम्र में मुझसे छोटी शायद यही

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहेगी कि तू क्या अभी कुंवारी है? उस समय मेरे पास क्या उत्तर होगा। बस यही कि मुझसे बुरी लड़कियों के विवाह हो जाते हैं, किन्तु मैं अच्छी-चंगी हूँ, बस यही ऐब है कि विस्थापन के कारण आर्थिक हालत कमज़ोर और पतली हो गयी है। किन्तु क्या कोई यह मानेगा? नहीं, कभी नहीं। इसलिए मैं विद्रोह करने पर उतारु हो गयी हूँ। मैं कब तक अपने होंठों को सिल लूंगी, कब तक मैं इस किराये के कमरे में रहूँगी? आज मुझे कुछ करना ही होगा क्योंकि ऐसा लगता है कि अब मेरा भविष्य प्यासे जानवर की तरह छटपटा रहा है। यदि आज मैं विद्रोह न करुँ तो मेरा भविष्य अंधकार में भटकता रहेगा। इसी सोच के बयाबान की भटकन में वह एक ही 'टन' से चौंक गयी। पापा कमरे से बाहर आए। उनको देखकर ही उसने पर्स खोला और उसमें से कागज़ निकालकर उनको देने ही वाली थी कि पापा ने कहा-

'अब की बार दो हज़ार रुपए से काम नहीं चलेगा। 'क्यों, क्या बात है?'

'मकान-मालिक ने किराया बढ़ा दिया।'

'कितना?'

'पंद्रह सौ रुपए से दो हज़ार'

'वह कैसे?'

'मेरी समझ में भी नहीं आता, कहता है कि यदि नहीं दोगे तो कमरा खाली करो।'

'ऐसी बात है? मैं नौकरी नहीं करना चाहती।'

'क्यों बेटी? यह क्या कह रही है। घर छूटने के बाद यह विस्थापन का भार। यदि तुम नौकरी नहीं करोगी तो इसको मैं कैसे उठा पाऊँगा?'

'मगर इसके लिए मैं अपना जीवन बरबाद नहीं कर सकती। आप तो मुझ पर अन्याय करते हैं।'

'कैसा अन्याय? क्या तुम खाती-पीती नहीं? बता?'

'मैं ऐसा नहीं कहती। किन्तु आज मैं आपको साफ शब्दों में कहना चाहूँगी कि अब मुझे अपना अधूरा होना अच्छा नहीं लगता।'

'अधूरा?'

'हां अधूरा! चालीस लांघकर भी अभी मैं अधूरी हूँ। जब कि मेरी सहयोगी पच्चीसी में पग बढ़ाकर ही माँ बन गयीं। इसी पर मेरा आपसे विरोध है।'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह सुनकर बेटी का पापा पसीने से तरबरतर हो गया। विस्थापन से पहले वह बेटी की शादी करने के लिए तत्पर थे किन्तु विस्थापन के बाद उनको इस की ओर ध्यान ही न रहा। फिर भी इस समय उसने बेटी को ध्यान से देखा–सुन्दर, गोरी-चिट्टी, स्वस्थ किन्तु उसके चेहरे पर कहीं-कहीं से झुर्रियों के आकार साफ दिखाई दे रहे थे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पैदाइशी पापी

शरद् ऋतु के प्रारंभिक दिन! वर्ष भर के इसी एक मौसम में धूप सेंकने से मज़ा आता है। इस दिन गुला भी धूप में बैठकर अपने बदन की कमज़ोर एवं निर्जीव अंगों को धूप से सेकता रहा था। अब वह पूरी तरह सोचने लगा कि उसने अपने-आप को अपाहिज बना दिया है। गुमराह जहादी जनूनियों के बहकावे में आकर वह गोली चलाने पर मजबूर हो गया और अंत में उन्हीं गोलियों का शिकार बनकर अपनी काया को जर्जर बना दिया–तथाकथित आज़ादी के नाम पर। एक ढकोसला नारा! वतन को तबाही के दहाने पर ले जाने वाला नारा! मुझे अब इससे कोई सरोकार नहीं। उसने मुझे एक ही जगह बैठने के लिए मजबूर किया जब कि इससे पहले मैं शहर का कोना-कोना छान मारता था। इस तरह से उसने अब महसूस किया कि वह पैदाइशी पापी है। अब उसको कदम उठाने या चलाने का कोई हक़ नहीं। उसको अब कोई गुला न कहे! वह तो अब लंगड़ा है, लंगड़ा ही रहेगा और सब उसको लंगड़ा कहकर ही पुकारेंगे। वह कभी-कभार सोचता कि दुनिया का अस्तित्व दिन-रात से कायम है। जब तक यह दुनिया है तब तक इसमें आदमी रहेंगे किन्तु इन आदमियों की दुनिया क्यों निराली है? इनकी इस दुनिया में कई लोग पानी की एक बूंद के लिए तरसते हैं और कई ऐसे भी हैं जिनको किसी चीज़ का अभाव नहीं। कई सड़कों पर भूखे मरते हैं और कईयों ने सारी उम्र खाया-पिया है किन्तु अब पानी की एक भी बूंद पचा नहीं सकते। कईयों को तन ओढ़ने के लिए कपड़ा नहीं है और कई ऐसे भी हैं जो दिन में कपड़े के दस जोड़े पहनते हैं। इन बातों पर पहले भी उसका ध्यान गया था। किन्तु उस समय वह यह कहकर इसी निष्कर्ष पर पहुंचता कि यह तो ईश्वर की, किस्मत की देन हैं। किन्तु आज वह सोचता है कि यह भगवान की देन नहीं बल्कि यह मानव के प्रति सरासर अन्याय है। यह देन है उन धन-दौलत वाले चापलूसों की जो गरीब, शोषित और अपाहिजों की लाचारी का अनुचित लाभ उठाते हैं। तिस पर भी जिसको किसी कला क़ा वरदान प्राप्त हो, वह तो आसमान से बातें करता है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इनको इस बात का ध्यान ही नहीं कि यहाँ सब निरोगी होकर आते हैं किन्तु अंत में किसी-न-किसी रोग से पीड़ित यहाँ से जाना है। हर बार एक आह भरकर गुला अपने-आपसे कहता काश, तिकड़ी के दोनों पात्र बराबर रहें। उसको अपाहिजों के प्रति सहानुभूति थी क्योंकि वह स्वयं गोली लगने से अपाहिज बन गया था। वस्तुत: यह सत्य है कि जिस तन लागे, वही तन जाने। वह इनके लिए बहुत कुछ करना चाहता था किन्तु खाली हाथ क्या कर सकता था। खाली जेब लेकर क्या कभी किसी चीज़ का सौदा किया जाता है। किसी लखपति से पैसा मांगने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। वह तो सिर्फ एक गायिका के पीछे पड़ गया। अथक परिश्रम करने के बाद उसके गाने की महफिल का आयोजन किया। उसने टिकटों के पैसे इस आशा से जमा किए थे कि बाद में इस राशि को ज़रूरतमंद अपाहिजों में बाट लेगा। किन्तु नहीं उसने दूर शून्य की ओर देखा और इसी के साथ बयाबानों में भटक गया।

हाल तमाशाइयों से खचा-खच भरा हुआ था। सभी इसी प्रतीक्षा में थे कि कब स्टेज से पर्दा हट जाए और उनकी मन-चहेती गायिका अपनी सुरीली आवाज़ में गाए। श्रोता तो उस पर पागल हो गए थे। बात तो कुछ नहीं थी। बस, उसकी आवाज़ सुरीली थी। गुला भी उसी के इन्तिज़ार में था। अंत में पर्दा हट गया और स्टेज पर गायिका और उसके आस-पास साज़ बजाने वालों को देखकर दर्शकों ने तालियां बजायीं। साज़ बजाने वाले उसके पास ऐसे बैठे थे जैसे भौंरे फूल के आस-पास मंडरा रहे हैं। गायिका ने गाना शुरु किया और इसी के साथ साज़ बजने लगे। गायिका की सुरीली आवाज़ हाल में गूंजने लगी। इससे दर्शक महसूस करने लगे कि स्टेज पर साज़ों के साथ देवी-देवताओं ने पदार्पण किया है। गाने की महफिल खत्म हुई। इसी के साथ दर्शक हाल से खिसकने लगे। गुला को पता ही न चला कि बैसाखियों के सहारे वह गायिका के पास कैसे पहुंच गया। वह तो उसके साथ बातें करना चाहता था। शायद अपना दुख-दर्द सुनाना चाहता था। वह उसके पास बैठकर उसकी सुरीली आवाज़ की प्रशंसा करना चाहता था। इतना ही नहीं, उसके गायन की कुछ कमियों की ओर इशारा करना चाहता था। किन्तु उसके अनुसार उसके गायन में जो कमी थी, वह तो थी ही। मगर उसने पहले इस संबंध में कुछ नहीं कहा। किन्तु गायिका अपने गायन में कमियों के बारे में जानना चाहती थीं। आखिर कौन सी कमी है उसके गायन में? यदि कोई कमी है तो वह उसको दूर कर सकती है। उसने गुला को इस बारे में बार-बार पूछा मगर उसके इस प्रश्न का उसके पास एक ही उत्तर था-'गुलाब तो अपने नीचे के काटों का महत्व क्या जाने, या अंधा क्या जाने कि वसंत आ गयी है।'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मतलब?'–उसका सवाल

'आपकी इस गायिकी में यदि मानवता का जज़्बा ओत-प्रोत होता तो मैं आपको एक बड़ा कलाकार ही नहीं मानता बल्कि आपको देवी के तुल्य पूजन भी करता'– गुला के स्पष्ट शब्द।

यह सुनकर गायिका गुस्सा हो गयी। वह अपने इस गुस्से को अन्दर से ही पी गयी। कहा–'मगर मैं जानना चाहती हूँ कि आजकल किस काम में मानवता का जज़्बा निहित है जिसके फलस्वरूप गरीब, लाचार या अपाहिजों की सहायता की जा सके। सभी तो कमाते हैं अपने पेट की आग बुझाने के लिए। फिर भी हम छोटे कलाकार मानवता का नाम जीवित रखने के लिए क्या कर सकते हैं? जो चोर-बाज़ारी या तस्करी करते हैं उनके पास तो खूब धन होता है।'

'इस वक्त जब गोली लगने से कई नवजवान अपाहिज हो गए हैं, उनकी सहायता आप जैसी कलाकार ही कर सकती हैं।'–गुला ने कहा।

'मैं तो खाली हाथ क्या कर सकूंगी। भगवान की देन के रूप में मेरे पास गायिकी का फन है'।

'यही फन या कला यदि आप महीने में एक बार हमारी भलाई के लिए इस्तेमाल करेंगी तो हमारे हालात बहुत हद तक सुधर जायेंगे।'–गुला का उत्तर।

'तो क्या इसके लिए मैं ही उपयुक्त कलाकार हूँ'।–गायिका का गुस्सा।

'ना, ऐसी बात नहीं। अलबत्ता मुझे आपकी यह कला जानदार और सार्थक लगती है। यह लोगों को कला कर्त्तव्य परायणता का संदेश दे सकती है।'– गुला का उत्तर।

'आपका दिमाग सही है? मैं क्या आपके लिए अपना कीमती समय नष्ट कर दूँ। हट जा मेरे सामने से। मैं कमाऊँ और पारिश्रमिक लोगों में बांट दूँ। यही ना? ध्यान से सुनिए, मैंने गाना इसलिए नहीं सीखा है। यह कला मेरी आजीविका कमाने का एकमात्र साधन है। मुझे तो आप जैसे लोगों से क्या वास्ता? वैसे भी जो चलने-फिरने के योग्य नहीं, उनकी समाज में कोई ज़रूरत नहीं। ऐसे आदमियों को दरिया में फेंक देना चाहिए।'–गायिका ने एक ही सांस में कहा।

गायिका के इस कथन का समर्थन साज़ बजाने वालों ने सिर हिलाकर किया। उन्होंने न चाहने पर भी ऐसा किया मात्र गायिका को खुश करने के लिए। गुला ने यह सब ध्यान से देखा और सुना। इसके बाद गायिका की ओर देखा। उसकी नज़र से बचकर वह धीरे-धीरे उठा और बैसाखियों के सहारे वहाँ से खिसक गया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसके साथ ही गायिका चीखी। वह घबराते हुए दरवाज़े के बाहर आयी। उसके मुंह से ये शब्द स्पष्ट सुनाई दे रहे थे–'चोर, बदमाश, पकड़ो...पकड़ो'...यही बोलते हुए वह दरवाज़े के सामने गिर पड़ी। उसको साज़ बजाने वालों ने उठाया। सब उसके आस-पास जमा हो गए। सभी जानना चाहते थे कि उसको यह एकदम क्या हो गया। अंत में जब उसको होश आया तो उसने अपनी खोखली आवाज़ में कहा–'उसने मेरा पर्स चुरा लिया।'

'किसने?'–साज़ बजाने वालों ने पूछा।

'गुला ने।'–उसने एक बार फिर खोखली आवाज़ में कहा।

❑

निश्चय यदि दृढ़ हो तो कोई भी काम करना मुश्किल या असंभव नहीं। मगर गुला के लिए यह घड़ी परीक्षा की थी जब उसके माता-पिता भी कहने लगे कि तुम चोर हो। तूने ही खानदान पर चोरी करने का कलंक लगाया है। यह सत्य है कि उसने गायिका का पर्स चुराया था जिसमें मात्र दस रुपए थे। किन्तु रुपए के अतिरिक्त भी इसमें बहुत कुछ था जो उसकी अमूल्य निधि थी। पढ़ाई में उसने अब तक जो कुछ अर्जित किया था, उसका सार तो इसी में था। हाँ, उसके सारे प्रमाण-पत्र। जब यह उसके मां-बाप ने सुना तो वे परेशान हो गये वे तो उसको पर्स वापस करने के लिए मजबूर कर रहे थे। उन्होंने उसको यहाँ तक धमकी दी कि यदि पर्स वापस न किया गया तो उसकी बैसाखियां जला दी जाएंगी। वह नहीं चाहते थे कि उनके प्रिय पुत्र को अपने इस अपाहिज संसार में चोरी का कलंक लग जाए। इसके विपरीत वे उसको हर समय समझाते कि अपनी मेहनत से कमाई करोगे तो मान-सम्मान से रहोगे। हमें तो उन लोगों की ओर नहीं देखना है जिन्होंने काले धन से बैंक के खाते खोले हैं या जो आज से चालीस वर्ष पूर्व गरीबी की रेखा से नीचे जी रहे थे, वही आज लाखों में बातें कर रहे हैं। मगर गुला उत्तर में यही कहता कि उसके पास पर्स अमानत के रूप में रहेगा और इसमें किसी प्रकार की खयानत नहीं होगी। किन्तु गायिका को पर्स उसी सूरत में वापस मिलेगा जब हम जैसे लोगों की भलाई के लिए गायन के एक कार्यक्रम का आयोजन हो सके। इसके लिए पहल तो उसी को करनी है। इसी से दूसरों को प्रेरणा मिल सकती है। हमें तो पूंजीपतियों से क्या लेना-देना। ये तो हमारी मुसीबतों का पहाड़ उठाने वाले नहीं। वे तो पैसा देखकर अंधे हो गए हैं। वे तो सोचते हैं कि इस दुनिया में हमारे जैसे सभी हैं। किस तरह पैसे से और पैसा कमाया जाए, यही तो उनकी नीयत है। इस तरह से तराजू के एक पलड़े पर गिरते हुए

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानव मूल्यों का भार है तथा दूसरे पलड़े पर गायिका के गायन का आयोजन यदि न हो पाए तो गुला की आरजू दम तोड़ कर रह जाएगी। और यदि गायिका को पर्स न मिल जाए तो उसको नौकरी या काम मिलना मुश्किल है। माना कि वह प्रसिद्ध कलाकार है किन्तु प्रमाण-पत्रों के बिना आजकल कुछ नहीं चलता। तिकड़ी का कौन-सा पलड़ा नीचे है और कौन सा ऊपर-यह तो किसी की समझ में नही आता था। पर्स यदि गायिका को वापस मिल जाएगा तो फिर क्या वह महफिल में गाएगी। मगर इस समय गुला अपनी बैसाखियां जलाने के लिए तैयार था। वह अपनी दुनिया उजाड़ देना चाहता था मगर उसका निश्चय अटल था। जो काम करने पर वह आता था, वह तो करता ही था। वह तो हर किसी से कहता कि तुम एक अपाहिज की सूरत देखते हो मगर उसके लगन की दाद नहीं देते। उसकी बेबसी पर तरस खाते हो मगर उसकी मायूसी पर झूठे आंसू भी नहीं बहाते। उसको रोज़ रोटी खाते देखते हो मगर उसकी मूल आवश्यकताओं की ओर ध्यान नहीं देते। किन्तु यह गुला के व्यतित्व का एक पहलू था। गायिका के लिए ये सारी बातें तर्कहीन थीं। वह तो एक कलाकार थी और अपनी कला का प्रदर्शन करना चाहती थी। कुछ पैसों के लिए वह अपनी कला बेचना नहीं चाहती थी। वह तो एक सस्ती गायिका नहीं थी। वह तो किसी का कहना मानने के लिए तैयार नहीं।

फैसला हो जाए तो किस तरह? गुला के माता-पिता के सामने यह एक बड़ा प्रश्न था। गायिका ने उनको यह कहकर धमकी दी कि यदि बारह घंटे तक पर्स वापस न किया गया तो वह थाने में रिपोर्ट लिखवाएगी। मगर वे नहीं चाहते थे कि पुलिस उनके घर तलाशी लेने आए। अब गुत्थी को सुलझाना तो उन्हीं का काम था। उनको कुछ समझ में नहीं आता कि गुत्थी सुलझे तो कैसे? वह करेंगे भी तो क्या? उनकी आंखों से आंसू बह निकले। अंत में वे गायिका के घर गए और अनुनय-विनय कर कहने लगे कि वह थाने में रपट न लिखवा ले यह तो हमारी इज़्ज़त का सवाल है। हम तो आपको अपनी बेटी के रूप में मानते हैं। क्या हमारी बेटी घर की तलाशी पुलिस से करवाएगी? क्या बहन अपने भाई को पुलिस से पकड़वाएगी? किन्तु इन बातों से गायिका पसीजी नहीं। इन बातों का उसके लिए कोई महत्त्व नहीं था। अंत में जब उसने कुछ नहीं माना तो गुला के बापू ने सिर से पगड़ी उतार कर उसके कदमों में रख दी। इस समय गायिका को उसकी बेबसी का कटु अहसास हो गया। वह पसीज गयी। उसने अपने मधुर कण्ठ से गाना गाने के कार्यक्रम में भाग लेना मान लिया-गुला की खुशी के लिए। शर्त यह थी कि जो आय इस कार्यक्रम से वसूल होगी वह अपाहिजों की भलाई के लिए व्यय होगी। यदि ऐसा न हो तो मैं मुफ्त में बदनाम नहीं होना चाहती।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंत में गाने के कार्यक्रम का आयोजन हो गया। हाल गाना सुनने वालों से खचाखच भर गया। कुछ सैकण्ड के बाद स्टेज का पर्दा हट गया। किन्तु देखने वालों को आश्चर्य तब हुआ जब उन्होंने माइक के पास गुला को देखा। वह दो बैसाखियों के सहारे खड़ा था। उसने माइक में कहा–

'इससे पहले कि आप अपनी मनपसंद गायिका के मधुर कण्ठ से गाना सुनें मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि इसके पीछे एक विशेष मक़सद है जिसकी रूप-रेखा सुनकर आपका दिल बाग-बाग हो जाएगा। हाँ, आज यह गायिका उस मानवीय सहायता का श्रीगणेश कर रही है जो ललितादित्य के समय की इन्द्रप्रभा, चक्रवर्मन के समय की हंसा, हर्ष के समय की नागलता और बड़शाह के समय की तारा न कर सकी है। माना कि इसके पास अपना एक अलग फन है मगर फन तो फन ही होता है और इससे लोगों का मनोरंजन किया जाता है। आपको यह सुनकर सुखद आश्चर्य होगा कि आज यह हम जैसे लोगों की सहायता के लिए गा रही हैं ताकि दूसरों को इस बात का अहसास हो जाए कि उनको भी हम जैसे लोगों की सहायता करनी चाहिए। हमारा ध्यान रखना इनका कर्त्तव्य बनता है। अंत में इनसे निवेदन करता हूँ कि माइक के सामने आएं और अपने रसीले गायन से आपका मनोरंजन करें...।'

इसके साथ ही सभी ने तालियां बजायीं। गायिका माइक के सामने आयीं। उनके साथ साज़ बजाने वाले खड़े हो गए। गायिका ने गाना शुरु किया और साज़ बजाने वालों ने साज़ बजाए। साज़ों की गूंज होते ही तालियां बजने लगीं। कुछ सैकन्ड तक साज़ बजते रहे मगर ज्यों ही गायिका ने गाना शुरु किया तो उसको खांसी आने लगी। उसका गला सूख गया। उसकी खांसी का दौर चलता रहा और वह गा न सकी। वह छटपटाई। यह देखते ही सुनने वालों ने हंगामा किया। उसने धीमे से गुला को कहा कि मेरे गले में खराश हो रही है। लगता है कि मेरा गला इसी दम बैठ जाएगा। मेरी सांस रुक रही है। इसके होते हुए भी उसने गाने की लाख कोशिश की किन्तु पहले उसके गले में से जो मधुर आवाज़ निकलती थी वह बेसुरी हो गयी। वह एकदम उठकर चल दी। हाल में खलबली मच गयी। पर्दा गिर गया।

वस्तु-स्थिति देखकर गुला बहुत दुखी हुआ। आज उसको इस बात का अहसास हो गया कि वह पैदाइशी-पापी है। उसको इस बात की पूर्ण आशा थी कि यदि गायिका इनकी भलाई के लिए गायेगी तो दूसरों की आंखें भी खुल सकती हैं। वह तो हमारे लिए बहुत ही अच्छा होगा। हमारे जलते रेगिस्तान में हरियाली आएगी। गरीबों की बात भी कोई सुनेगा और उनमें हमें सहायता करने का एक नया जज़बा उभरेगा। अभी तो गायिका ठीक थी, यह देखते ही देखते उसको क्या हो गया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरअसल शरीर पर कोई भरोसा नहीं। यह तो पत्थर से सख्त और फूल से कोमल है। चलो, इस बार न सही, अगली बार उनके गायन के कार्यक्रम का आयोजन करना ही पड़ेगा। नहीं तो यह मज़ाक रहेगा। जो सुनने वाले पहले आए थे उन्हीं को फिर से आमंत्रित किया जाएगा नहीं तो सब यही समझेंगे कि कोई चाल थी जिसके द्वारा मैंने उनके टिकट के पैसे ऐंठ लिए। मैं क्यों इस तरह की बदनामी अपने ऊपर ले लूँ। क्यों न मैं इस समय गायिका के घर जाऊँ। गुला ने बैसाखियां थाम लीं और पूरी गति के साथ उसके घर की ओर चल दिया। वहाँ गायिका सोयी हुई थी और घर के सदस्य उसके आस-पास गुम सुम बैठे थे। वह कमरे के अन्दर आया और इन्हीं के साथ बैठने लगा। इस समय वह कुछ न समझ पाया कि यहाँ क्या बात है। अंत में गायिका ने आंखें खोली और गुला की ओर देखा। वह एकदम उठी और रुंधी हुई आवाज़ में कहने लगी–'तुम?'

'हाँ, मैं गुला।'–उसका उत्तर।

'ऐसा न कहिए आपका नाम गुलाम अहमद है। आज मैंने आपकी मुसीबत समझी। दिल चाहता है कि काश मेरा गला ठीक हो जाए और मैं केवल आप जैसे लोगों के लिए गाऊँ।'–उसने रुंधे हुए गले से कहा।

गुला कुछ समझ न पाया कि वह क्या कह रही है। वह असमंजस में पड़ गया। फिर भी उसने सांत्वना देकर कहा–'आपका गला ठीक हो जाएगा। आपने हिम्मत क्यों हारी है?'

'अब तो मेरा गला ठीक होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। मुझसे जो बातें करनी हैं करिए। नहीं तो फिर पछताओगे।'–उसने कहा।

गुला की समझ में कुछ नहीं आ पा रहा था कि वह क्या कह रही है। उसने पूछा–'क्यों?'

'मेरे साऊँड बॉक्स को कैन्सर हो गया है। अगले सप्ताह डॉक्टर इसे मेरे गले से निकालेंगे।'–गायिका के स्पष्ट शब्द।–'आपको अब हक बनता है मुझे गूंगी कहने का। आप चल नहीं सकते और मैं बोल नहीं पाऊँगी। अब मैं भी आप ही की तरह अपाहिज हूँ। आप भी परेशान हैं और मैं भी परेशान हूँ।'–उसका रुआं-सा उत्तर।

यह सुनकर गुला ने महसूस किया कि उसके नीचे से ज़मीन सरक रही है। उसकी आंखों से आंसू बह निकले। वह उसकी ओर एकटक देखने लगा। दिल में बनाया महल दिल में ही भरभरा गया। उसने सिर झुकाया और बच्चे की तरह रोने लगा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गायिका अपने स्थान पर से उठी और उसके पास आ गयी। कहा–'मत रो मेरे भाई! इसमें आपका क्या दोष। दरअसल मैं ही आसमान से बातें कर रही थी। इसी को कहते हैं शाप। यदि मैंने उसी दिन आपका प्रस्ताव मान लिया होता तो शायद मेरी यह हालत न हुई होती। मैंने आपका दिल दुखाया। अब मैं आपके हवाले हूँ। मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। सिर्फ मेरी खबर पूछने आना।'

यह सुनकर गुला सोच के बयाबान में भटक गया। उसकी इस सोच का एक अलग अर्थ था। वह मानता था कि वह पैदाइशी पापी है किन्तु इस बात की कल्पना नहीं करता था कि उसके पापों के जाल में कोई अन्य फंस जाए। उसने अपने आपसे कहा कि यदि मेरी ये बैसाखियां न होती तो इस तरह की घटना कभी न हुई होती। मुझे तो इसकी सज़ा जरूर मिलनी चाहिए नहीं तो मैं कोई और कुकर्म करुँगा।'

घर पहुंचकर उसने सोचा कि वह अपनी बैसाखियों के टुकड़े-टुकड़े कर दे। शायद इसी से उसका नया संसार शुरु हो जाए।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़िन्दाबाद, ज़िन्दाबाद

उसको देखकर ही उसने एक लम्बी आह भरी। फिर अपने-आपसे कहा-'यह मेरा पीछा नहीं छोड़ेगी क्या?'

सड़क के चौराहे पर वह बिजली के खंभे के सहारे दत्चित खड़ा था। वैसे तो, वहाँ वह किसी की प्रतीक्षा नहीं कर रहा था। बस यों ही वहाँ खड़ा था। उसकी नज़रें जन-समूह की ओर लगी थीं, जो इसी चौराहे से गुज़रकर न जाने कहाँ जा रहा था। चारों ओर शोर था। उसकी समझ में कुछ नहीं आया कि यहाँ ऐसा क्यों है! वह यही सोच रहा था कि इतने मे किसी की परवाह किये बिना वह उसके सामने खड़ी हो गयी।

उसको सामने देखकर वह पसीने से तरबतर हो गया। क्यों यह उसकी समझ में भी नहीं आया।

उसने पहले उसके साथ हाथ में हाथ मिलाया। फिर दोनों एक साथ चलने लगे। कहाँ? यह तो उसकी समझ में भी नहीं आ रहा था। उसने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया। ऐसा करना तो उसने इसलिए ज़रूरी समझा क्योंकि.....यदि ऐसा न करता तो लोग क्या कहते।

कुछ क्षण बाद दोनों के बीच खुलकर बातें हुई। उसके साथ शादी का वायदा करने के बाद वह एकदम निडर एवं निर्लज्ज सा बन गया था। शर्म हया का पर्दा उठाने की रस्म को उसने ही यह कहकर पूरा किया था-'एक मर्द होकर भी तू डरता है! ताज्जुब है!'-इस छोटे से वाक्य ने उसके भीतर के भय पर मानो एकदम हमला-सा बोल दिया। तब से उसको इस बात का ध्यान ही न रहा था कि वह किस से प्रेम करता, किसकी पूजा करता था। इस प्रकार दस वर्ष की तपस्या को उसने अपने-आप विफल कर दिया।

लोग आ-जा रहे थे। वह भी उनके साथ कदम से कदम मिलाकर जा रहा था। चलते-चलते उसने अपनी इस साथिन से पूछा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'इतना बड़ा जन-समूह! यह कहाँ जा रहा है?'

'आज जलसा है न।' 'किसका?'

'वह तो मुझे भी पता नहीं। अलबत्ता सुना है कि आज कोई नेता भाषण देगा, जिसमें वह हमारे हित की कोई महत्त्वपूर्ण बात कहेगे। एक अहम फैसले की!

'फैसला! कौन सा फैसला?'

'मुझे क्या पता। यह तो उसका भाषण सुनने के बाद ही पता चलेगा।'

'यह वही फैसला तो नहीं जो मैंने परसों अपने सगे-संबंधियों और यार-दोस्तों को सुनाया?'

'कौन सा फैसला सुनाया?

इसके बाद दोनों ने एक-साथ ज़ोरदार कहकहा लगाया। उसके मुंह से 'शादी' शब्द सुनकर वह मन-ही-मन खिल उठी। इस बात का गर्व हुआ कि शादी करने के लिए उसने जो चाल चली है, वह सार्थक रही है। नहीं तो, कहाँ वह सुन्दरी! रूपसी! जिसकी पूजा में वह छुटपन से ही विलीन था। दरअसल उस प्रेम के पूजने से क्या लाभ जिसका सिंचन पैसा व माल-जायदाद से न किया जाये। उसके पास तो हुस्न था, मगर थी वह बेचारी एक गरीब लड़की! इसलिए तो इसने उसको छोड़ा।

वह तो उसके साथ चलता रहा। मगर वह जगह है कहाँ, जहाँ इस जलसे का आयोजन हुआ है। जहाँ कोई नेता राष्ट्रहित में लोगों को अपना फैसला सुनायेगा। आखिर यह फैसला है क्या, जिसको इतना महत्त्व दिया गया है-उसने अपने मन में सोचा।

आखिर वे जलसागाह के निकट पहुंच गये। एक बड़ा मैदान, जिसमें एक विशाल जन-समूह! स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े, सभी इसी प्रतीक्षा में थे कि कब उनका नेता आये और वे सुनें कि उन्होंने उनके हित में क्या फैसला किया है।

जलसागाह का सुन्दर शृंगार रंगारंग झंड़ियों से किया गया था। यहाँ दूर से लकड़ी का बना एक मंच भी दिख रहा था, जिस पर कुर्सियां पूर्व-पश्चिम की ओर मुंह किये खड़ी थीं। सामने था लाऊडस्पीकर!

यहाँ पहुंचकर वह लड़की उसके साथ इस तरह चिपकी रही मानो कोई उसको यहाँ से भगाकर ले जाएगा। वह उंगलियों के संकेत करती हुई बोली-

'इस मंदिर की तरफ देखो न। इसके कलश पर भी यह तिरंगा फहरा रहा है और यहाँ इस मंच पर भी'।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'क्यों न फहराता'–उसका उत्तर।

'हाँ, क्यों नहीं मैं भी तो यही कह रही हूँ। वह तो भगवान का घर है और यह नेता का दौलतखाना! दोनों स्थानों पर लोग झुकने आते हैं।'–उसके कहने में व्यंग था।

जलसागाह के चारों ओर झंडियां फहरा रही थीं। सब खुश थे। अपने प्रिय नेता की प्रतीक्षा में यहाँ सुबह से ही खड़े थे। उनके भाषण को सुनने के लिए उत्सुक थे। उनके फैसले को सुनने के उत्सुक थे! सभी की नज़र में इस फैसले का बड़ा महत्त्व था। सब यही सुनना चाहते थे कि आखिर यह फैसला है क्या! बाद में वे उस पर टीका-टिप्पणी करना चाहते थे। उनके हित में है या नहीं..! उनका भाग्य संवार सकेगा या नहीं।

वह भी इस विशाल जन-समूह में खो गया। इसलिए खुश था कि आज यहाँ कोई नेता आयेगा और हमारे हित में फैसला सुनायेगा। बाद में वह लोगों से इसके संबंध में उनकी राय पूछेगा! उनके हित में है या नहीं। वह यही सोच रहा था कि उसकी नज़र अपनी साथिन पर पड़ी। वह उदास-उदास-सी दिख रही थी। क्यों? यह उसकी समझ में भी नहीं आया। आखिर वह उससे कहने लगा–

'इस आज़ाद माहौल में तुम उदास-सी क्यों दिख रही हो?'

'मुझे यहाँ घुटन-सी महसूस हो रही है। यहाँ आज़ादी कहाँ।'

'क्यों? क्या कह रही हो? हम सब अब आज़ाद हो गये है।'

'नहीं।'

'क्यों?'

'हम जहाँ थे, आज भी वही हैं। आज़ादी उनको मिली जिन्होंने गरीबों के साथ अन्याय किया, अपने सगे-संबंधियों को तरह-तरह का लाभ पहुंचाया। अपनी कुर्सी को बहाल रखने के लिए गरीबों से वोट मांगा। मैं सोचती हूँ कि ऐसे लोग हमें कब छोड़ेंगे?'

'जब तुम मुझे छोड़ दोगी, तभी।'

'ऐसा कभी नहीं हो सकता। कभी नहीं।'–यह कहते हुए उसने एक हलकी सी चीख मारी। वह सहम गया। उसने उसको दोनों हाथों से थाम लिया। कुछ क्षण पश्चात जब वह संभल गयी, वह उसके साथ कदम से कदम मिलाकर मंच के बहुत करीब आ गयी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मंच! इसके सामने विशाल जन-समूह! सब नेता की प्रतीक्षा में खड़े थे! नेता लोगों का हितचिंतक! उसने कई बार नि:स्वार्थ भावना से लोगों के हित में कार्य किया है।

इतने में जलसागाह में खलबली-सी मच गई। लोगों ने खड़े होकर नारे लगाने शुरु किये। फिर हाथ में ली हुई झंडियों को हिलाने लगे। बीच में हमारे सामने कोई खड़ा हो गया और उसने हम दोनों को एक-एक झंडी फहराने के लिए दे दी। इसके बाद एक बार फिर 'ज़िन्दाबाद' का नारा गूँजने लगा और वह मुझसे कहने लगी-

'मेरा दिल धड़क रहा है।'

'क्यों? शायद विशाल जन-समूह को देखकर घबरा रही हो'

'नहीं।'

'तो फिर?'

'उस फोटो को देखकर न जाने मुझे क्या हो रहा है।'

'क्यों? यह तो राष्ट्रपिता का फोटो है।'

'नहीं। उनकी रूह यहाँ तड़प रही है।'

'क्या कह रही हो? इस महान नेता के नक्शे-कदम पर चलकर ही हमारे वर्तमान नेताओं ने जनहित कार्य के करने की प्रेरणा ली है। मंच की शोभा तो इसी फोटो से है'।

'यदि ऐसा होता तो मैं उन नेताओं का भगवान से कुछ कम नहीं मानती।'

'तो फिर क्या होता है?'

'जुल्म-सितम, लट खसोट और अपना उल्लू सीधा करने के लिए इस महान नेता का नाम हर जगह बदनाम किया जा रहा है।'

'वह कैसे?'

'जिंस तरह तूने मुझे असली राह से भटका दिया है।'

'नही, नहीं ऐसा मत कहो। अव तुम मेरे देवता हो।'-इसके साथ ही उसने एक बार फिर हलकी सी चीख मारी। मैंने उसको दोनों हाथों से थाम लिया। कुछ क्षण बाद वह संभल गई।

इतने में दूर से शोर सुनाई दिया। मंच के सामने जो आदमी बैठे थे, उन्होंने झंडिया हिला-हिला कर 'ज़िन्दाबाद' के नारे लगाने शुरु किये। बाद में सभी ने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालियाँ बजाकर 'आ गया, आ गया' कहा। ज़िन्दाबाद चीखने वालों ने ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाये। देखते ही देखते मंच पर एक आदमी खड़ा हो गया। वह कौन था–यह उनकी समझ में नहीं आया। उसने लाऊडस्पीकर के सामने खड़े होकर अपनी बुलंद आवाज में कहा–

'खामोश! खामोश!!'

यह सुनकर सब चौंक गये। सभी ने आँखें मसल-मसलकर उस आदमी को ध्यानपूर्वक देखा। हर किसी को विश्वास ही नहीं आ रहा था कि यह वही है। आज तो यह बिल्कुल पहचाना नहीं जाता। अरे यह क्या वही है या अन्य कोई! ये तो आज अपने वस्त्रों में नहीं है। सब यही सोच रहे थे। फिर एक-दूसरे से खुसर-फुसर होने लगी। इतने में लाऊडस्पीकर से किसी ने एक बार फिर अपनी बुलंद आवाज़ में कहा–

'खामोश! खामोश!!'

'क्या आप इसको पहचानते हो?'–उसने लोगों से पूछा।

'नहीं, नहीं।'–सभी ने हाथ हिला-हिलाकर कहा।

'यही तो हमारे नेता हैं न! हमारे हित चिंतक हमारे पालनहार! ये तो सारे देश में मशहूर हैं। सब इनको अच्छी तरह जानते हैं। किन्तु आश्चर्य यह है कि आप इनको पहचानते नहीं। अरे, आपकी आंखों से दिखाई देता है या नहीं। हाँ, अब समझ में आ गया। इन्होंने आज नये वस्त्र पहने हैं न। इनके बदन पर आज वे पुराने वस्त्र नहीं जिनमें आप इनको हमेशा देखते आये हैं। किन्तु यह मत समझिये, यह सब इन्होंने आपके लिए किया है, आपके कल्याण के लिए। सुख-शान्ति के लिए। इस खुशी में सब तालियाँ बजाओ।'

सभी की समझ में कुछ नहीं आया। लोगों ने पहले यों ही तालियाँ बजायीं। फिर झंडिया हिलाकर 'ज़िन्दाबाद' के ज़ोरदार नारे बुलंद किये। पीछे से अब इतना शोर हो पा कि कानों के पर्दे फटने लगे। इतने में लाउडस्पीकर से उसी आदमी ने ज़ोरदार आवाज़ में कहा–

'खामोश! खामोश!'

'अब मैं आपके प्रिय नेता को फूलों का हार पहनाऊंगा। फिर देखना अपने इन नये वस्त्रों में ये कैसे जचेंगे!'

इसके साथ ही ज़िन्दाबाद के ज़ोरदार नारे एक बार फिर गूंजने लगे। सभी ने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झंडिया फहरा दीं। इसके साथ ही सब की नज़रें मंच की ओर लगी हुई थीं। अंत में लोगों ने नेता को फूलों का हार पहनाया। इसके बाद पटाखे और आतिशबाज़ी चलाई! चारों ओर लोगों की चहल-पहल बढ़ गयी, फिर नेता महोदय लाउडस्पीकर के सामने खड़े होकर लोगों से सम्बोधित होकर बोले-

भाईयो और बहनों!

मैंने आज नये वस्त्र पहने, पुराने छोड़े। यों समझो कि मैंने दल-बदल किया है। आपको मैं इन वस्त्रों में अच्छा लगता हूँ न! मुझे पूरी आशा है कि इन वस्त्रों में, मैं आपको अच्छा ज़रूर लगूंगा। मैंने दल बदल किया, केवल कल्याण के लिए। देश के नव-निर्माण के लिए। राष्ट्रपिता के स्वपनों को साकार करने के लिए। इसके लिए यदि मैंने 'फिरन' पहनना छोड़ दिया और कोट-पतलून पर उतर आया तो इसमें कौन-सी आपत्ति! इसका उद्देश्य केवल एक है-देश की तथा देशवासियों की सेवा करना। अब सच कहना, ये नये वस्त्र मुझ पर कैसे जंचते हैं! मेरी कसम।'

लोगों को विश्वास ही नहीं आ रहा था कि उनका प्रिय नेता ऐसे वस्त्र धारण करेगा। क्या पड़ी थी उसको ऐसे वस्त्र धारण करने की। ये तो अपने ही वस्त्रों में अच्छा लगता था। उसने ये वस्त्र क्यों पहन लिए! शायद इसलिए कि वह इस बुढ़ापे में साहब बनना चाहता है। जवान बनना चाहता है। इसी को कहते हैं न, साठ वर्ष पार करने के बाद कोई बुद्धिमान बनता है तो कोई मूर्ख।

ऐसा देखकर वह भी असमंजस में पड़ गया। उसकी समझ में कुछ नहीं आया। हाँ, इस बात की तह तक वह ज़रूर गया कि नेता यदि साठ पार करते ही मूर्ख हो गया, किन्तु उसको भरी जवानी में ही मूर्खता के साये ने घेर लिया है।

उसने अपनी साथिन की ओर ध्यान से देखा। वह उसके साथ हाथ में हाथ लेकर उसके साथ चिपकी खड़ी थी। इसी ने तो उसको पथ-भ्रष्ट किया। यदि वह अमीर बाप की लड़की न होती तो वह उसके पीछे इस तरह दबदर न फिरता रहता! पैसों के सिवाय तो उसमें और कौन-सा आकर्षण है! न उसको अक्ल है न शक्ल। वह तो हथनी की तरह मोटी-मोटी है। पैसों के लालच के कारण उसने अपनी उस हूरपरी को छोड़ दिया, वह गलत राह पर आ गया। उस लड़की में क्या कुछ नहीं था। सुन्दर! शरीफ! किन्तु उसका तो एक दोष ज़रूर था। वह एक चपरासी की लड़की थी और समाज ने यही कलंक माथे पर मढ़ दिया था।

जाने वह किस सोच में पड़ गया। उसने अपने अन्दर खोखलापन महसूस किया। उसे अपने और नेता के करतूतों में कोई फर्क नहीं दिखाई दिया!

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जलसा खत्म हो गया। लोग अपने-अपने घरों को जाने लगे। वह भी उस लड़की के साथ चल दिया। चलते-चलते उसकी सांस फूल गई। आंखों में अन्धेरा-सा छा गया। रास्ते में यह दिखाई ही न दिया कि कौन कहाँ जा रहा है। चारों तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई दिया।

शास्त्रों में अंधेरे को अज्ञानता कहा गया है। और अज्ञानता को अंधेरा। किन्तु वह इस समय अंधेरे की आंखों से उजाले को देख रहा था। इस देश के नकली रंग-कई प्रकार के इन्सानों को, उन इन्सानों को जो अपना उल्लू सीधा करने के लिए गरीबों का शोषण कर रहे हैं। उन इन्सानों को जो स्वार्थ और वासना के पीछे पड़े हुए हैं और उन गद्दारों को जो शीश महलों में रहकर गरीबों की झोंपड़ियों को मिसमार कर रहे हैं।

वह दो-तीन कदम आगे बढ़ा। गर्दन घुमाकर जब उसने अपनी साथिन को देखा तो वह चौंक गया! कहा-'अब कहाँ जायेंगे?'

'जहाँ आपकी मर्ज़ी'-उसका उत्तर था।

'मैं चाहता हूँ, अब हम पहले की तरह अपनी-अपनी राह पर वापस लौटें'।

यह सुनकर लड़की को बहुत गुस्सा आया। उसका चेहरा तमतमाया। कहा-'पहले दल बदला, अब फिर उसी दल में वापस जाने का इरादा है?'

और लड़की को ने उसको इस तरह कस कर पकड़ा कि कहीं वह भाग न जाए। फिर सामने जाती हुई टैक्सी को इशारे से रोका। टैक्सी रुकते ही उसने उसको उसमें भरकर स्वयं उसके बगल में बैठ गई। ड्राईवर ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा। और उसने कहा...'फंस गया तो तड़पना क्या?'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बन्दूक का भय

यह तो ढ़की-छिपी बात नहीं बल्कि इस बात को सब जानते थे कि श्रीनगर के मध्य में स्थित शंकराचार्य नामक ज्वालामुखी पहाड़ किसी भी समय फटकर सारी कश्मीर-घाटी का सर्वनाश करेगा, किन्तु अब तक यह फट्य नहीं। फिर भी उसको समय-समय पर इस बात का अहसास होता जा रहा था कि इसमें लावा धीरे-धीरे उबलता जा रहा है। मगर आज यह पहाड़ एकदम फट गया और लावा भारत के कोने-कोने में बिखर कर रह गया। घाटी का कुछ मत पूछिए, वहाँ गली-गली में मुट्ठी भर गुमराह युवकों ने भय और आतंक का वातावरण उत्पन्न किया। तड़-तड़ गोलियां चलने लगीं, ज़ोरदार बम-विस्फोट होने लगे, बैंक लूटे गए, दिन-दहाड़े निर्दोश नर-नारियों का अपहरण किया गया तथा मासूम लोगों की चुन-चुनकर हत्याएँ होने लगीं। गली-गली में रुदन सुनाई देने लगा और इसी के साथ पंडित तथा सिक्ख अल्पसंख्यकों की बस्तियाँ धीरे-धीरे खाली होने लगी। कान्ता यह सब देख रही थीं किन्तु इसी के साथ कुछ पल के लिए आँखें बन्द भी करती। वह सोचती कि ऐसा हर प्रदेश में होता है। फिर भी सोचने की बात है कि जब सरकार ही नहीं है, पर्वत नहीं फटेगा तो क्या आसमान ज़मीन से मिल जाएगा!

उसको गर्व था कि उसके मोहल्ले का कोई भी लाल गोली चलने की घटिया हरकत से प्रेरित नहीं हुआ है। आज भी रुखसाना उसके घर मिलने आयी। किसी दिन जब एक-दूसरे को नहीं देखतीं तो दोनों बेचैन, परेशां हो जाती थीं। जब घाटी में यह शोर-शराबा शुरु हुआ, मजाल है किसी ने कांता को सताया हो, उसके मकान के किसी द्वार-पट पर पोस्टर चिपका कर यहाँ से भागने के लिए धमकी दी हो या मकान की खिड़कियों के शीशों को पत्थर मारकर चूर-चूर किया हो। वह सभी से कहती कि हिन्दू मुसलमान यहाँ भाईयों की तरह रहते हैं। सोचने की बात है कि जिस मोहल्ले में रहती हूँ, वहाँ आस-पास कौन रहते हैं, दूध मैं किस से खरीदती हूँ? मेरा जल-मल कौन उठाकर ले जाता है? जो पुष्प मैं मूर्ति पर चढ़ाती हूँ, वह किस के

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बगीचे से काटकर लाती हूँ? और जब मैंने जन्म लिया तो मेरी आया कौन थी और जब मर जाऊँगी तो शमशान में चिता पर कौन लिटायेगा? हाँ, ये सब मुसलमान ही हैं। आज हम इनको छोड़कर कहाँ जा रहे हैं? जो वतन छोड़ता है वह अपनी गर्दन काटता है और जिसकी गर्दन कट जाए, उसको अंत में मृत घोषित किया जाता है।

कान्ता का पति विवाह के दो-एक साल बाद ही यह दुनिया छोड़कर चला गया था। वह उसकी कोख में अमानत छोड़कर गया था-रमेश को। किस तरह उसने उसको पढ़ाया-लिखाया और अंत में एक सरकारी कार्यालय में नौकरी दिलवाने में सफल हुई-यह सब कान्ता ही जानती थी। उसको लगा कि आज उसके घर में दिया जल रहा है-आर्थिक खुशहाली का और अब उसको इस संकट के अंधियारे से जूझना नहीं पड़ेगा। उसको वह दिन अच्छी तरह याद थे जब रुखसाना ने उसको अपनी बहन मानकर आर्थिक संकट की घड़ियों में मदद की थी। रुखसाना आर्थिक रूप से खुशहाल नहीं है, यह तो कान्ता भी जानती थी। वह भी दिन में मेहनत-मज़दूरी करके कुछ पैसा कमाकर अपना घर-गृहस्थ चलाती थी। उसके दिल में सारी उम्र बस यही एक अरमान था कि उसका एकमात्र पुत्र अशफाक कान्ता के रमेश की तरह कम से कम ग्यारह जमात पास करे और फिर किसी सरकारी कार्यालय में नौकरी करे। अपने घर की आर्थिक दशा को एक नया आयाम दे, मगर उसका यह अरमान पूरा न हो सका। अशफाक का मन पढ़ने-लिखने में न लगा। वह मटर-गश्ती करने में व्यस्त रहता था। पहाड़ियों पर चढ़ने के शौक का बहाना बनाकर वह घर से प्रायः गायब रहता था। वह कहाँ जाता था-इसका रुखसाना को भी पता न था और जब कभी वह घर आता तो उसी लिबास में आता जो पहाड़ियों पर चढ़ने वाले लोग पहनते हैं-एयर प्रूफ जेकेट, कील-नुमा जूते, जीन और अन्य गर्म कपड़े।

'क्या इससे तुम्हारा भविष्य संवरेगा?'-रुखसाना पूछती।

'क्यों नहीं संवरेगा? किसी दिन मेरा नाम इतिहास में लिखा जाएगा।'-अशफाक का उत्तर।

'वह कैसे?'-रुखसाना का आश्चर्य।

'वह तो समय ही बताएगा।'-अशफाक का उत्तर।

'मगर पैसे का क्या सोचा? घर की हालत स्थिति अच्छी नहीं है।'-रुखसाना ने समझाते हुए कहा।

अशफाक ने सुना और कुछ नहीं कहा। फिर झट कोट के जेब में हाथ डालकर सौ सौ रुपए के नोटों की मोटी गड्डी निकाली। इसके बाद रुखसाना के हाथों में थमा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दी। नोटों की इस गड्डी की ओर देखकर रुखसाना को मानो इस बात का विश्वास हो गया कि उसका बेटा रमेश से कहीं अच्छा काम कर रहा है जिसमें बहुत पैसे मिलते हैं। इसमें हज़ारों रुपए का लाभ है और हो सकता है कि कल वह लाखों क्या, करोड़ों रुपया कमाएगा। घर की आर्थिक दशा एक नई करवट लेगी और क्या पता कल वह सारे मोहल्ले को खरीद लेगा। यह सब अल्लाह ही जानता है और अब बार-बार इसके घर से गायब रहने के कारणों का पता लगाने से कुछ नहीं निकलेगा। अल्लाह का शुक्र है कि यह कहीं जाता है और नोटों से अपनी जेबें भरकर लाता है। चश्मेबद्दूर! अब मैं किसी से नहीं कहूँगी। यदि कोई पूछेगा भी तो मैं कहूँगी कि वह शाल बेचने बंबई गया है। अब यहाँ कभी कभी ही आता है।

इतने में अशफाक वहाँ से चला गया। रुखसाना ने पूछा–'अब कब आओगे?'

'जब अल्लाह ने चाहा तो ज़रूर आऊंगा।'–अशफाक का उत्तर।

❑

'मैं तो ज़रूर वापस आऊँगी। मैं तो वहाँ स्थायी तौर पर बसने के लिए नहीं जा रही हूँ। मैंने सारा सामान यहीं रखा है। यह लो, यह रही मेरे मकान की चाबियां! सब कुछ तुम्हारे हवाले करती हूँ।'–कान्ता ने कहा।

'मगर तुम यहाँ से क्यों जा रही हो? किसी मुसलमान ने यहाँ से भागने की धमकी दी है? मुझे बता मैं अभी उसकी जान निकाल दूंगी।'–रुखसाना ने गुस्से में कहा।

'भगवान की कसम, मुझे किसी ने कुछ नहीं कहा। किसी ने रमेश को मौखिक रूप से चेतावनी दी है कि कश्मीर छोड़ दो अन्यथा परिणाम के लिए तैयार रहो।'–कान्ता के स्पष्ट शब्द।

'मौखिक चेतावनी से वह डर गया? कितना डरपोक है वह?'–रुखसाना ने कहा।

'नहीं, ऐसी बात नहीं। मगर इस समय तो उसको डर लगता है।'–कान्ता का उत्तर।

'किसका डर है उसको? बता, रुखसाना ने पूछा।

'बन्दूका का भय'। –कान्ता के स्पष्ट शब्द।

'बन्दूक का भय?'–रुखसाना का आश्चर्य।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हाँ, बन्दूक का भय! गुमराह जवानों को रमेश पर उनके विरुद्ध काम करने का शक है। क्या करुँ, मैंने उसको लाख बार समझाया कि सन् 47 के बाद कश्मीर में पराये देश के इशारों पर कई बार हमारे नवजवान गुमराह हो गए हैं किन्तु अन्त में इनको अपने ही मुसलमान भाईयों ने सही राह पर खड़ा किया। सन् 1947 ई० में युद्ध हुआ तो मुसलमान भाईयों ने इसी तरह शत्रु को ललकारा और सन् 1965 में युद्ध हुआ तो इसको जीतने में मुसलमान आगे-आगे रहे। इस समय भी यही मुसलमान इनको सही-सीधी राह पर ला देंगे।'-कान्ता ने कहा।

रुखसाना ने ये सभी बातें ध्यान से सुनीं, इसके बाद कुछ पल के लिए सोच में विलीन हो गयी। फिर चुप्पी को काट कर कहने लगी- 'तो भी रमेश मानता नहीं?'

'नहीं, वह मेरी किसी भी बात से सहमत नहीं। उसका कहना है कि इस समय इनसे मुलसमान भी डरते हैं।'-कान्ता ने कहा।

यह सुनकर रुखसाना सोच के बियाबान में खो गयी। उसने पहले कान्ता की ओर देखा और अंत में पूछा-'भला मुसलमान किस से डरेगा? यह भी कोई कहने की बात है?'

'मैंने भी यही कह दिया कि मुसलमान इन गुमराहो लोगों से नहीं डरें, मगर उसने कहा कि अब की बार उनको भी इनके बन्दूक का भय है। जब वह अपने आपको बचा नहीं पाएगा तो यहाँ के कुछ प्रतिशत पंडित अल्पसंख्यकों को कैसे बचा सकता है।'-कान्ता ने कहा।

❑

कौन मारेगा और कौन मरेगा। इसके पीछे कौन से गुमराह तत्त्व ज़िम्मेदार हैं? घाटी में अशान्ति की चिंगारियां कौन भड़काता है? माँ का बेटा कौन छीनता है, सुहागन का सुहाग कौन लूटता है और बहन का भाई कौन मारता है-इसकी ओर आज पहली बार रुखसाना ने गम्भीरता से सोचा। कहते हैं कि सीमा-पार के एक भाग में भी हम जैसे मुसलमान बसते हैं। उनका रहन-सहन, वेश-भूषा और भाषा भी हमारी जैसी है। वही पिस्तोल, बन्दूक एवं अन्य सिला सामान लेकर यहाँ आते हैं और यहाँ के कुछ राष्ट्रविरोधी तत्त्वों से मिलकर तथाकथित 'आज़ादी' का नारा बुलंद करते हैं? हम तो सन् 1947 में आज़ाद हुए हैं। हमें अपने धर्म की आज़ादी है। अपने विचार व्यक्त करने की आज़ादी है, घूमने-फिरने की आज़ादी है। अब यहाँ के मुसलमान ने गरीबी की बेड़ियाँ तोड़ दी हैं। वह तो मज़े में जीवन-यापन करता है। क्या उसको वे दिन याद नहीं जब वह दो पैसे के लिए तरसता था और उसी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुसलमान ने यहाँ का सारा कारोबार अब अपने हाथ में ले लिया है। अपने हाथों से बनायी अपनी अर्थव्यवस्था का महल कौन गिराना चाहेगा। हाथ में आयी रोटी कौन किसको छीनने के लिए कहेगा। मगर आजकल यहाँ जो कुछ भी हो रहा है, वह तो कभी नहीं हुआ है। पंडित लोग तो इस तरह वतन छोड़ने पर मजबूर नहीं हुए थे। यहाँ तो सदियों से हिन्दू और मुसलमान भाईयों की तरह रह रहे हैं और रहेंगे भी। मगर आज यह यहाँ क्या हो रहा है? बिना किसी प्रकार की हानि पहुंचाए ये क्यों यहाँ से भाग रहे हैं? मेरी प्यारी सहेली कांता और उसका बेटा रमेश हमें छोड़ कर क्यों जा रहे हैं? यहाँ का मुसलमान तो इनसे भागलपुर, मुरादाबाद या भिवंड़ी में हुई घटनाओं का बदला लेना नहीं चाहता। यहाँ इनके भागने से हमारा अस्तित्त्व मिटकर रह जाएगा। हमारा तो इस बात पर अटल विश्वास है कि जिस तरह शरीर के दो कान, दो आंखें, दो टांगें और दो बाजू का अस्तित्त्व एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है, उसी तरह यहां का पंडित और मुसलमान, दो जिस्म एक जान है। फिर भी इन्सान इन्सान से, मुसलमान हिंदू से नफरत करे-यह कितनी शर्म की बात है।

मगर आज रूखसमा जान गयी कि वह जो सोचती थी, कोरा दर्शन था। वह सुन्न होकर देखती रह गयी। तभी चौराहे पर देखते ही देखते हलचल पैदा हो गयी। गोलियां तड़-तड़ चलने लगीं और इसी के साथ आस-पास की गलियों में लोग भागकर मटर के दानों की तरह बिखर गए। तारकोल से पुती हुई सड़क पर इन्हीं में से एक धड़ाम से गिर गया और गोलियों से छलनी उसके शरीर से खून बहने लगा। रुखसाना भी अपने-आपको बचाने के लिए एक गली में छिप गयी। उसने सोचा कि यह क्या हो गया है इन लोगों को? हम तो पागलों से भी बद्तर हो गए हैं। किसी निर्दोष को मारना कुरान के उसूलों को ताक पर रखना है। कुछ सैकण्ड़ के बाद उसने पीछे की ओर देखा, चारों ओर सन्नाटा लग रहा था। यहाँ-वहाँ उसको कोई दिखाई न दिया सिवाय उस चौदह वर्षीय नवजवान के जो भागकर उसकी गली में फंस गया था। उत्सुकता वश उसने उससे पूछा-'यह किसका कत्ल किया गया?'

'मुखबिर था।'-उसका उत्तर।

'क्यों? किसलिए? उसका दोष क्या था?'-रुखसाना ने एक-साथ तीन प्रश्न पूछे।

'साले के इरादे नेक नहीं थे। यह तो जेहाद के विरुद्ध काम कर सकता था। उसको पिछले ही सप्ताह मरना था मगर जान बचाने के लिए माँ के साथ जम्मू भाग गया, किन्तु कुछ ही दिनों के पश्चात् सामान लेने के लिए आया था, साला! पहली बार तो बच गया किन्तु इस बार ये क्या इसको छोड़ते?'-छोकरे ने एक ही सांस में कहा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रुखसाना ने ध्यान से सुना किन्तु उसको लगा कि उसकी इन बातों में कोई वज़न नहीं है। फिर भी उसने छोकरे से पूछा–'नाम क्या था इसका?'

'रमेश'–छोकरे ने इस तरह कहा कि जैसे हवा में गुब्बारा उड़ाया।

यह सुनते ही रुखसाना की हालत खस्ता हो गई। इस वज्राघात से उसका शरीर पसीने से भीग गया। आंखों से आंसू बह गए। उसने पीछे की ओर दूर से देखा–हाँ, यहाँ कुछ पुलिस कर्मचारी खड़े थे और शव को 'एम्बुलेंस' में भर रहे थे। इतने में इस सारे क्षेत्र में कर्फ्यू लगाया गया। कातिलों को ढूंढने के लिए घर-घर तलाशियाँ लेनी शुरु हो गयीं।

दिन बीतते गए। इस बीच रुखसाना बार बार अपने-आपसे पूछती– 'कान्ता के रमेश को किसने गोलियों का निशाना बनाया? उसके बसे-बसाए घर को किसने देखते ही देखते आग लगा दी? कान्ता झूठ नहीं कहती थी कि वह अपने वतन को नहीं छोड़ती मगर बन्दूक का भय उसको ऐसा करने के लिए मजबूर कर रहा है? कौन है यह कातिल जिसने मेरी और कान्ता के आपसी संबंधों में एक दरार पैदा की है? यदि इस समय अशफाक यहाँ होता तो उसने पुलिस का साथ देकर असली हत्यारे का पता लगाया होता। बेकार तलाशियाँ लेने से क्या होगा? जब तक न असली हत्यारे का हुलिया पता हो'–रुखसाना यही सोच रही थी कि इतने में रेडियो से खबर आयी–पाकिस्तान से लगने वाली सीमा के इस पार किसी स्थान पर सुरक्षा बलों ने एक आतंकवादी को पकड़ा है। हत्यारे का नाम है अशफाक जो श्रीनगर के हब्बाकदल क्षेत्र में रहता है। एक सफल पर्वतरोही होने के कारण उसने अब तक बीस बार सीमा पार की है और बन्दूक से राकेट लांचर चलाने तक का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। घाटी में उसके द्वारा किए बीस कत्लों में हाथ है। सरकार ने उसको किसी भी तरह पकड़ने में पच्चास हज़ार रुपए का इनाम देने की घोषणा की थी, किन्तु दर्दनाक मज़ाक यह है कि सीमा पार के पाकिस्तानी अधिकारियों ने उसको केवल दस हज़ार रुपए में खरीदा था।'

रुखसाना ने सुना और उसने महसूस किया कि शंकराचार्य पर्वत सच ही फट रहा है और इसमें से निकलने वाला लावा दूर-दूर तक फैलता जा रहा है। मानव-मूल्यों के मोतियों की माला दूसरों की शह पर तोड़ी जा रही है और यहाँ के सादियो से सिंचित भाईचारे का पेड़ जानबूझकर काटा जा रहा है। क्या यह सिर्फ बन्दूक के भय से संभव हो पाया है?

卐 卐 卐

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीत के बोल

उस गीत के बोल वर्तमान आज तथा बीते कल की सही अभिव्यक्ति कर सकते थे किनतु जब गीत ही याद नहीं था तो इसके बोल वह कहाँ से लाती? किसी तरह गीत के बोल याद आते, इसके लिए उसने अपने याद्दाश्त की तह तक जाने की कोशिश की किन्तु गीत के बोल उसकी जुबान पर नहीं आए। एक भाव प्रवण गीत के मीठे किन्तु नपे-तुले बोल जो उसने बचपन में अपनी नानी से सुने थे और जवान होने तक वह उस गति को हर समय गुनगुनाती रहती थी। लेकिन आज वही गीत उसके कंठ का हार न बन सके जबकि वह महसूस कर रही थी कि इस समय इनकी उसको सख्त ज़रूरत है। उसको विश्वास है कि यही वे बोल हैं जो अब उसके दिल के ज़ख्म भर सकते हैं और वर्तमान आज तथा बीते कल का साक्षी बन सकते हैं? किन्तु जो कुछ भी उस पर बीती, उसके लिए आज सभी देशवासियों को गर्व है। कल यह कहानी या किस्सा बनकर किताबों के पन्नों में बंद हो जाएगा। फिर पढ़ेगा भी कोई उसको या नहीं, कह नहीं सकती। यदि उसकी बीती ज़िदगी को समय-समय पर नई अभिव्यक्तियां दे सकते हैं तो सिर्फ उस गीत के वे बोल ही हैं। बस, उस गीत के वही बोल जो वह भूल गई है, शायद हमेशा के लिए।

उस गीत के बोल कुछ ऐसे थे, वह सोचने लगी-मैं छोटी थी। शादी भी नहीं हुई थी, अलबत्ता किसी के साथ शादी की बातें चल रही थीं। अंत में वही हुआ जो मेरे भाग्य में लिखा था। उसके मन के दर्पण पर उसके स्वर्गीय पति की सलोनी सुंदर सूरत उभरी। उस समय उसके चेहरे पर यौवन दहक गया। दिल धक्-धक् करने लगा। किन्तु उस समय करगिल से लाया गया उसका शव ताबूत में था और सैनिक ताबूत के आस पास वर्दी में तन कर खड़े थे। उसके पति का शव देखकर ऐसा लगता था कि वह अभी जीवित है, सिर्फ ताबूत से निकलने की देर है। इसकी दूसरी ओर उसकी आंखों के सामने एक और ताबूत उभर कर सामने आया जिसमें उसके एकमात्र बेटे का शव था जो बाप की तरह सैनिक वर्दी पहने था। फर्क केवल इतना

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था कि उसकी आंखें खुली थीं, शायद इसलिए कि कहना चाहता था कि अभी मैं जिन्दा रहना चाहता हूँ क्योंकि मेरे वतन को बेचने वाले कई वतनफरोश अभी ज़िंदा हैं। और मेरे कश्मीर का एक तिहाई भाग अभी शत्रु देश के कब्ज़े में है। इसको आज़ाद करने के बाद ही मेरे वतन के लोग अमन-चैन की सांस ले सकेंगे। घुसपैठियों का स्वत: सफाया होगा। हत्याओं का सिलसिला बंद होगा। घरों से निकाले गए पंडित जो इस समय देश के कोने-कोने में दर-दर भटक रहे हैं, अपने घरों को वापस जाएंगे और अपने घर-द्वार को फिर से संवारेंगे सजायेंगे। तोड़े गए मंदिरों का पुनर्निर्माण करेंगे। सबसे बढ़कर अपने वतन के कण-कण से प्यार करेंगे। लेकिन यह क्या हो गया? इस समय वतन ने मेरी जान क्यों लेली मेरा सुहाग और मेरी आंखों का तारा छीन कर!

उसके सामने दोनों ताबूत रखे गए। वह कभी पति के ताबूत के पास जाती तो कभी बेटे के ताबूत के पास! अभी ये दो महीने पहले ही फ्रंट से उसके पास आए थे। वे तो बिल्कुल स्वस्थ लग रहे थे किन्तु उस समय उसको क्या पता था कि जीवन और मृत्यु के बीच में इतनी कम दूरी रहेगी और बाप-बेटा एक ही युद्ध क्षेत्र में एक के बाद एक वीर गति प्राप्त कर लेंगे।

स्वपन को साकार करने में समय लगता है किन्तु स्वपन पल में टूटता भी है। इस समय उसने इस पर पहली बार गहराई से सोचा। किन्तु माँ की ममता जो ठहरी! बेटे के शवं की ओर बार-बार देखकर वह आखिर टूट कर गिर गई ठीक उसी तरह जब टाइगर हिल की चोटी पर जमे शत्रु की तरफ से गोलियों की बौछार ने उसके सीने को छलनी कर दिया और वह कटे हुए कदावर देवदार के पेड़ की तरह धराशायी हो गया! न जाने बाप को कैसे पता चला कि उसका बेटा वीर गति प्राप्त कर गया है। उसने न आव देखा न ताव। उसने तब बदले की भावना से लड़ना शुरू किया। उसको जहाँ कहीं भी घुसपैठिया पाकिस्तानी फैजी मिल गया, उसको तत्काल मौत की नींद सुला दिया। मगर भाग्य की विडम्बना देखिए। चोटी पर पहले ही बने एक बंकर से शत्रु देश का सिपाही निकला और उसको गोलियों से भून डाला।

बाप-बेटे की इस शहादत की कहानी सुनकर वह एकदम संभली। दाह-संस्कार हो गया पूरे सैनिक सम्मान के साथ। शोक-धुन बजायी गयी। मगर उसके दिल में हर समय वही हसरत, तड़प तड़पा रही है कि उसे गीत के बोल याद क्यों नहीं आते। ज़ो उस पर बीत गई है, उसकी अभिव्यक्ति वह कैसे कर सकेगी? शुन्य की ओर देखकर कुछ पल के लिए उसकी आंखें वही टिकी रहीं। फिर उसने अपने-आपको संभालकर खुद को यह कह कर तसल्ली दी कि इससे पहले भी कई वीरों ने युद्ध में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी जान गंवा दी है अपने देश की सुरक्षा के लिए। यह सब उस पर ही बीता नहीं है। अगर उस पर ही बीत गया होता तो फिर गीतों की रचना न होती। मगर...मगर मुझ पर बीत गई है। काश! मुझे उस गीत के बोल याद आते और मैं इनको अपने मधुर कंठ से गुनगुनाती। इसी से मेरे दिल का बोझ हल्का हो जाता तथा मेरी आंखों के आंसू और दिल की धड़कनें इस गीत के सुर-ताल बन जाते! मगर क्या पता उस गीत के बोल बाप-बेटे की मृत्यु के साथ ही विलीन हो गए हों ताकि मुझे इनके बारे में अधिक सोचने का मौका ही न मिले। मगर मुझे गीत के बोल ज़रूर याद आने चाहिएं, नहीं तो मैं पागल हो जाऊँगी! वही तो उनकी अमर-गाथा की सही अभिव्यक्ति दे सकते हैं और इनको अमर बना सकते हैं, नहीं तो कल...हाँ कल की किसको पता है?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीन लघु कथायें

1. अधिकार

सड़क के मध्य में खड़ी कचरे से भरी म्यूनिसिपल गाड़ी खड़ी थी। इसके पास वाली सीट पर एक झबरा कुत्ता आराम से खिड़की में से मुँह निकाले सड़क के अन्य लावारिस कुत्तों की ओर देख रहा था। कुत्तों ने जब उसकी ओर देखा तो म्यूनिसिपल गाड़ी को चारों ओर से घेरकर भौं-भौं करके भौंकने लगे। कई कुत्तों ने छलांग मारकर गाड़ी के अन्दर बैठे कुत्ते को पकड़ने की कोशिश की किन्तु असफल रहे।

अंत में गाड़ी के अन्दर बैठा झबरा कुत्ता बोला-'आप क्यों मेरी ओर देखकर भौंक रहे हो? मैं भी आपकी ही जाति का हूँ। फर्क केवल इतना है कि मैं गाड़ी में बैठा हूँ और आप सड़क पर। फिर भी मैंने आपको काम तो सौंपा ही है, शहरों, बस्तियों और गांवों में आतंक फैलाना; निर्दोष लोगों को काटने, मारने या घायल करने का। इस तरह के काम करने के लिए, मेरा समर्थन आपको प्राप्त है। मुझ पर भौं-भौं भौंकने से कोई लाभ नहीं। मेरा इसमें क्या दोष! मुझे इस गाड़ी में बैठने का अधिकार आपने ही दिया-अपना कीमती वोट देकर।

2. हांगुल

हांगुल की संख्या दिन-ब-दिन घटती जा रही थी। जो बच गए थे, वह अपनी हज़ारों वर्षों की संस्कृति बचाए रखने में व्यस्त थे। फूल-पत्ते खाकर संतुष्टि का जीवन व्यतीत करते थे। किन्तु अचानक यह क्या हो गया, कयों हो गया है और कैसे हो गया? मांसखोर पशु उनके झुण्ड में घुस गये और इनको मार, मार कर खाने लगे। यह देख अपनी सालों-साल की संस्कृति को बचाने के उद्देश्य से ये रेगिस्तानों-बियाबानों में तितर-बितर होकर बिखर गए। तपती धूप, सापों के काटने तथा विषैले बिच्छुओं के डंक मारने से इनमें से कई मर गए। अब समय आ गया है कि मांस-भक्षी पशु अपनी करनी पर पछता रहे हैं। हांगुल को पहले की तरह अपनी अभयारन्य में रहने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिए इंतज़ार कर रहे हैं मगर हांगुल की एक ही आवाज़ है–'अब हम आपके झांसे में नहीं आने वाले! हां, यदि हमारे रहने के लिए पिंजरे बनाओगे, तभी हम सोचेंगे कि आयेंगे या नहीं।

3. इससे अधिक क्या कहूँ?

एक बुढ़िया थी। जर्जर काया थी। एक लम्बी लाईन में खड़ी थी अपनी रिलीफ चैक लेने के लिए। किसी तरह उसकी बारी आयी और रिलीफ चैक हाथ में लिए लाईन में से खिसक गयी। इसके बाद वह मेरे पास आयी और कहा–'यह क्या लिखा है इस पर'?

मैंने कहा 'अठारह सौ रुपए की चैक है माता जी।' साथ ही मैंने उससे पूछा–'क्या इससे आपके परिवार का गुज़र–बसर होता है'?

उसने मेरी ओर ध्यान से देखा। आंखों से आंसू पोंछकर बस इतना ही कहा–'मेरे घर के आस-पास दो सौ अखरोट के पेड़ थे। दस कनाल ज़मीन थी जहाँ धान की खेती करते थे। चौमंज़िला मकान था हमारा इससे अधिक क्या कहूँ बेटे'!

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

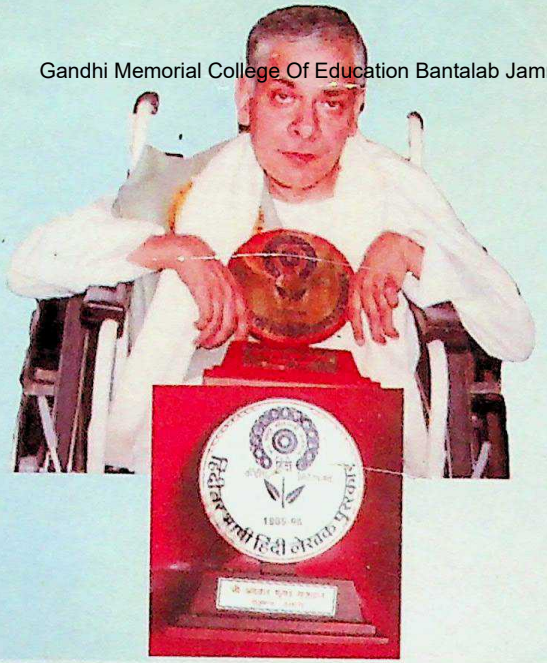

अवतार कृष्ण राज़दान का जन्म 23 मई, 1942 के दिन श्रीनगर (कश्मीर) में हुआ। सम्प्रति प्रकृति की क्रूरता का शिकार बनकर एक अपाहिज और आतंकवाद के कारण एक शरणार्थी का निर्वासित जीवन व्यतीत करने पर विवश हैं; परन्तु अपार साहस एवं दृढ़ आत्मविश्वास के धनी हैं। हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी और अंग्रेज़ी भाषाओं में लिखते हैं।

प्रकाशित रचनायें : कश्मीरी ललित कलायें : उद्भव और विकास; कश्मीर की सैर; सौगात; दिल उछला देखने; आतंक बीज, एल० बी० डब्ल्यू (कश्मीरी कहानियों का संग्रह)। इन सभी कहानी संग्रहों की कहानियों का अंग्रेज़ी के अतिरिक्त, भारत की लगभग सभी प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। दो नाटक और 300 से अधिक लेखभी। इनके अतिरिक्त 20 से अधिक रेडियो नाटक और लगभग 200 रेडियो वार्तायें भी प्रसारित। 50 से अधिक कश्मीरी रचनाओं का हिन्दी अनुवाद भी किया है।

सम्मान : साहित्य सेवा के लिए, अवतार कृष्ण राज़दान अनेक राज्यकीय एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत तथा सम्मानित हुए हैं।

संपर्क-सूत्र : डी-255, गली न० 14-15,
लोअर शिव नगर, जम्मू-180001

Rs. 115/-

सहयोग प्रकाशन
7/1, पंत नगर, जंगपुरा, नई दिल्ली-110014

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh